डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली

अंगिका बालगीत समग्र

संपादक : अभिनंदन

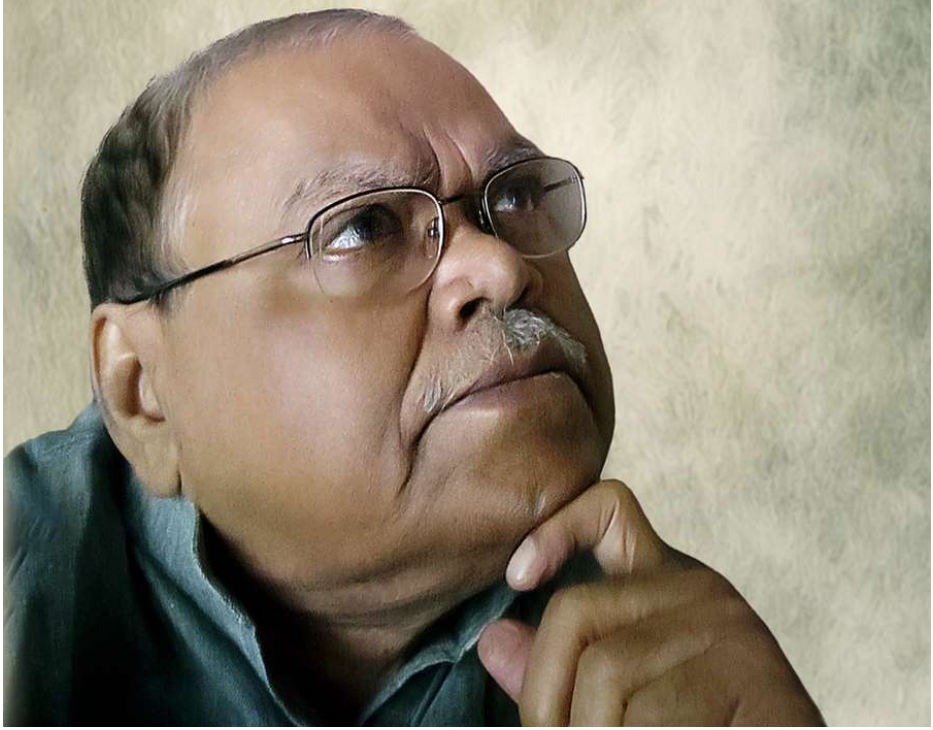

डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली—खंड १

अंगिका बालगीत समग्र

डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली (खंड-१)

(अंगिका बालगीत समग्र)

संकलन/सम्पादन

अभिनंदन

समीक्षा प्रकाशन
दिल्ली/मुजफ्फरपुर

ISBN : ९७८.८१.८७८५५.६३.७

प्रथम संस्करण
जनवरी २०२१

सर्वाधिकार ©
संपादकाधीन

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
जे. के. मार्केट, छोटी कल्याणी
मुजफ्फरपुर (बिहार)-८४२ ००१
फोन : ०९३४२७९९५७, ०९९०५२९२८०१
E-mail : samikshaprakashan@yahoo.com
www. samikshaprakashan.blogspot.com

दिल्ली कार्यालय
आर-२७, रीता ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-९२
फोन : ०९९११४७८६६८

शब्द-संयोजन
सतीश कुमार

मुद्रक
बी.के. ऑफसेट,
शाहदरा, दिल्ली।

मूल्य
५००.०० (पाँच सौ रुपये)

Dr. Amrendra Granthawali (Part-1)
Edited by Abhinandan Rs.500/-

पुस्तक आरो पृष्ठ

❖ ढोल बजै छै ढम्मक ढम (पृष्ठ ११ सें ३७)

● विनती/१३ ● मुर्गा/१४ ● मछली/१४ ● छाता/१४ ● कौआ/१४ ● नाना रों घोंर/१६ ● जाड़/१६ ● महाकवि सुमन सूरो/१७ ● बकरी/१७ ● दीवाली/१८ ● नया युनियन/१६ ● विनती/२० ● लारूहों/२१ ● भोर/२२ ● चाँद/२२ ● गाँधी बाबा/२३ ● थुलथुल बाबा/२३ ● बादल/२४ ● रेल/२५ ● ढोल/२५ ● सीख/२६ ● वर्ण कविता–१/२७ ● वर्ण कविता–२/२७ ● नाम बताव/२८ ● बोली/२६ ● शिक्षा/३० ● भालू/३१ ● पुरुष पंचांग/३१ ● हाथी/३२ ● फक्कड़दा रों पाठ/३२ ● मामा/३४ ● ऊँट/३५ ● डोमनदा/३५ ● जोड़/३६ ● टुनमा रों अंगदेश/३६

❖ बुतरू के तुतरू (पृष्ठ ३८ सें ५५)

● विनती/४० ● नानी सें गुहार/४० ● बारह बच्चा रों घोंर/४१ ● पियक्कड़ मामा/४१ ● दमड़ी दाढ़ी/४२ ● पछतावा/४३ ● गर्मी/४३ ● बादल आरो बुतरु/४४ ● लल्लू लाल//४५ ● होली/४५ ● बरसा/४६ ● शैतानी रों फोंल/४६ ● अंगिका/४७ ● जाड़/४७ ● तोहरों घोंर/४८ ● दादी/४८ ● बुतरु आरो विनती/४६ ● बगुला जी/४६ ● लालच रों फोंल/५० ● सीख/५१ ● भोकसी बिल्ली/५१ ● ननिहर/५२ ● संदेश/५२ ● नशाखोरी के फोंल/५३ ● पढ़बैय्यै बनतै लाट/५३ ● चिन्ता/५४ ● साफड़ी/५४ ● विश्वास गीत/५५

❖ बाजै बीन, बजावै तीन (पृष्ठ ५६ सें ७५)

● मूसों आरो मामा/५८ ● बड़का मामा/५८ ● मन्तरिया मामा/५८ ● मट्टीखोर मामा/५८ ● बुझौवल/५६ ● के की करै/६० ● समझ/६० ● मामा रों हाल/६० ● कैलू के करनी/६१ ● मामा/६१ ● करनी रों फोंल/६२ ● काका आरो बुतरू/६२ ● मामा रों खेल/६२ ● पियक्कड़ छोटका मामा/६३ ● मामा/६३ ● माघी धूप/६३ ● पाँच मुकरी/६४ ● बाजै बीन/६४ ● जिनखेल/६५ ● नानी/६६ ● लोरी/६७ ● जंगल-जान–जहान (बाल गीति नाट्य)/६८

❖ एक छड़ी पर अण्डा नाचै (पृष्ठ ७५ सें ९८)

❖ तुक्तक मुक्तक (पृष्ठ ९९ सें ११५)

● सिल-सिलोटी/१०१ ● ओला/१०१ ● बतासा/१०२ ● झगड़ू-तगड़ू/१०२ ● करनी के फोॅल/१०२ ● पानी में आम/१०३ ● कोसी मैया/१०३ ● धुइयाँ के कुइयाँ/१०३ ● तखनी बुझिएं/१०४ ● बड़की बात/१०४ ● पूस में कद्दू/१०४ ● मोती दाँत/१०५ ● बात बूझोॅ/१०५ ● बज्जड़ छींक/१०५ ● झोड़-झकासोॅ/१०६ ● नाना/१०६ ● घड़ी/१०६ ● गट्टा/१०७ ● खड़ाम/१०७ ● बगरो/१०७ ● पेड़ा/१०८ ● घोड़ा रे/१०८ ● पैसा/१०८ ● गुरु जी गेलौ/१०९ ● समझें बात/१०९ ● किंछा/९ ● हल्ला-गुल्ला/११० ● सींग/११० ● चिड़ियां/१११ ● दुनियां/१११ ● ऊ की छेकै/१११ ● बेंग आरो मछली/११२ ● बिल्ली आरो मूसोॅ/११२ ● सेवा रोॅ फोॅल/११३ ● खोटा-चूँटी/११३ ● मंतर/११३ ● हवा/११४ ● दाँत/११४ ● नाना रोॅ टीक/११४ ● रुइया आरो मछली/११५ ● उल्लू के पट्ठा/११५ ● मोॅर-मसाला/११५

❖ पाँच तिया पनरोॅ (पृष्ठ ११६ सें १२४)

● गुड़बा-गुड़िया/११८ ● गाय दुधारी/११९ ● भारत माय/११९ ● गाछ-बिरिछ/१२० ● निछलोॅ बात/१२० ● वैशाख/१२० ● गदहा/१२१ ● बंदर मामा/१२१ ● भूल/१२२ ● रात/१२२ ● मौसाजी/१२२ ● झिन्नुक आरो दादी/१२३ ● काम नै देतौ गोइयाँ/१२३ ● बात बताव/१२४ ● डायनासोर/१२४

❖ घटोत्कच खण्ड-काव्य (पृष्ठ १२५ सें १३६)

❖ पंचामृत (पृष्ठ १३७ सें १८०)

अंगिका बालगीत समग्र लेली

मनों में तें यही छेलै कि पिताजी रों खाली अंगिकाहै बालगीत नै, हिन्दियो में लिखलों बालगीत मिलैयै कें समग्र निकाललों जाय, मतरकि हिनकों लिखलों हिन्दी बालगीत बहुत खोजला के बादो तीन-चार ठो सें बेसी नै मिलें पारलै । हौ ई सब छेकै,

मम्मी जी

एक हमारी मम्मी जी,
सबकी प्यारी मम्मी जी।
शैतानी मैं लाख करूँ,
दे ना गारी मम्मी जी।
सबकी करती, सबकी सहती,
भली-बिचारी मम्मी जी।
मैं न पढ़ूँ, तो दुःख करती है,
दुःख की मारी मम्मी जी।
घर में दादी बनी अगाड़ी,
और पिछाड़ी मम्मी जी।
मम्मी के संग जब भी खेलूँ,
पहले हारी मम्मी जी।
मैं छुप बैठा खटिया नीचे,
चढ़ी अटारी मम्मी जी।
शैतानी अब नहीं करूँगा,
शॉरी-शॉरी मम्मी जी!

मूसामल

चार दिनों से मूसामल,
ले आता था अपना दल ।
चावल-गेहूँ जी भर खाता,
बाकी ढोकर बिल ले जाता।
साहू जी का बोरा खाली,
बोरे में देखी सौ जाली ।
चितिंत साहू भागे दिल्ली,

ले आये अंगरेजी बिल्ली ।
मुसकल लाया जा केरल से,
दो जंगली कुत्ते जंगल से ।
झाड़ू लाया सिक्किम जाकर,
और गये फिर वो पोरबन्दर।
पोरबन्दर से भाला लाया,
बिल पर पहरेदार लगाया।
और गये फिर खुद बाजार,
लाया ढो कर मूसामार ।
मूसामार मिलाया गुड़ में,
फिर आटा को डाला उसमें।
गोली क्या, गोला ले साहू,
दौड़ रहे थे बन कर राहू ।
बाहर में था सबका गश्त,
बिल में बैठा मूसा मस्त ।

चंदा

चंदा गोरा गोरा;
जैसे दूध कटोरा।
दूध भरा गुब्बारा,
समझ ईंट दे मारा।
चंदा गिरा ना टूटा,
मेरा ही सर फूटा।

अब्दुल कलाम

ए. पी. जे. तो लम्बा नाम,
अच्छा राष्ट्राध्यक्ष कलाम।
भारत का किस्मत-निर्माता;
भरी जेठ में सर पर छाता।
शक्ति का जो राजमहल है,
मन से जो कि ताजमहल है।
प्रेमभरा जो ऊपर तक,
दुखिया का दुख भीतर तक।

भाग्य-विधाता बच्चों का,
आया है दिन अच्छों का।
लाओ विकसित भारत को,
दूर भगाओ आफत को।
देश बने फिर वही गुरु;
जैसा था यह शुरु-शुरु।
डॉक्टर राष्ट्राध्यक्ष कलाम,
नमस्कार, जोहार, सलाम!

आरो हिन्दी बालगीत सब तें तितिर-बितिर होय चुकलों छै, तें खाली अंगिकाहै बालगीत पर बात आवी कें रही जाय छेलै।

यहू में एक दिक्कत बुझावें लागलै कि समग्र में "करिया झुम्मर खेलै छी" के गीत की बालगीत में आवै छै? शंका-निवारण लेली हम्में बालमनोविज्ञान के जानकार प्रशांत सिन्हा (अप्पू दा) सें पूछलियै, तें हुनी कहलकै कि ऊ संग्रह के ज्यादातर गीत तें किशोरे लेली लिखलों गेलों छै, गीत के ओरी में अंगिका के फेकड़ा राखीकें तें कवि यही सिद्धो करै लें चाहलें छै, अपवाद के एक दू गीत मिली जाय, तें अलग बात छै। दादा के बात सें साफ संकेत पैत्हैं हम्में "करिया झुम्मर खेलै छी के गीतो समग्र में शामिल करै के निश्चय करी लेलियै। चूँकि ई संग्रह के बेसी गीत किशोरे वास्तें छै, यै लेली हम्में ई संग्रह के आखिर में राखी देलें छियै, कैन्हेंकि 'पंचामृत' के बालकाव्य रूपक 'करिया झुम्मर खेलै छी' सें बेसी किशोरे लेली लागै छै।

दिक्कत यहू छेलै कि पिताजी जे बालगीत लिखै छै, वैमें हिनी विराम चिन्हों सें बचैलें चाहै छै, खाली जरूरत के हिसाबों सें पूर्ण विराम आकि कहीं-कहीं अर्द्ध विरामे रों चिन्ह लगाय दै छै, मतरकि 'पंचामृत' के बाल काव्य रूपक एकरा सें भिन्न मिललै, जहाँ जरूरत के हिसाबों सें आरो-आरो विराम चिन्हो प्रयुक्त छै, तें हम्में पिताजी सें कहैलियै, सब्भे संग्रह के बालगीतों में जरूरतवाला विराम चिन्ह लगाय दौ नी ताकि बच्चा बच्चाहै सें विराम चिन्ह के समुचित प्रयोग के बारे में जानें लागै। शायत हुनका है बात ठीक बुझैलो होतै, तें एक्के दिनों में बैठलों-बैठलों सब संग्रह के बालगीतों कें विराम चिन्हों सें बान्ही देलकै, मनों के विरुद्ध जैतें हुएँ, हुनी कहलो छेलै कि ज्यादा विराम चिन्हों के प्रयोग

बच्चा कें उलझाय दै छै। जे हुएँ, हम्में खुश छी कि आबें समग्र में एकरूपता आवी गेलों छै। यहाँ यहू बताय दै लें चाहै छियै कि 'करिया झुम्मर खेलै छी' में जत्तें गीत पहिले सें छेलै, वैसें बेसी यहाँ गीत छै। पिताजी के फेकड़ा कें आधार बनाय कें रचलों गीत तें आरो-आरो संग्रह-पत्रिका अखबार में प्रकाशित छेलै या बाद में होलै, जे हौ संग्रह में नै छै। हम्में हौ सब गीतों कें यही संग्रह में शामिल करी लेलें छियै, साथे-साथ एकाध गीत, जे पहिले सें ई संग्रह में छेलै, ओकरा हटाय देलें छियै, जे खाली फेकड़ा बचाय के खयालों सें रचलों बुझैलै। ई गीत छेकै 'अथरो-बिथरो नीमा गेलै नीम तोड़ें'। ई गीत खाली यै वास्तें लिखलों गेलों छै कि परिवार के अधिकांश बच्चा के नाम आवी जाय आरो ऊ सब पढ़ी कें खुश हो जाय।

जे हुएँ, ई सब कविता कें एक पुस्तक में निकालै के पीछू हमरों कुछ मोह रहलों छै, हमरे नै, हमरों घोंर भरीके, कैन्हेंकि ई सब गीत (खाली 'पंचामृत' छोड़ी कें), पिताजीं हमरे सिनी वास्तें तें लिखलें छेलै आरो हमरा सिनी यही कवितासिनी पढ़ी-बोली कें बचपन के सुख लेलें छियै, जे बाद में समाज के बच्चोलेली ओत्तै रुचिपूर्ण सिद्ध होलै, तें ई सिनी कविता कें बचाना हमरो दायित्वो बनै छेलै, है प्रयास खाली पितृऋण सें मुक्तिये पावै लेली नै छेकै। समग्र में एक आरो बालकाव्य-रूपक राखलें छियै जे नै तें कहीं छपलों छै, नै कहीं मंचित होलों छै, जेकरों शीर्षक छेकै—'पाला पर रौद'। एक बात आरो, संग्रह रों कवितासिनी में कुछ-कुछ बदलाव छै, ऊ पिताजी के करलों छेकै।

समग्र निकालै में छोटी बहिन वसुंधरा के बड़ों सहयोग रहलों छै, होनाकें घोंर भरी के बड़ों के आर्शीवाद नै होतियै, तें हम्में ई काम नै करें पारतियै। जबें समग्र कें देखतै, तें बड़ी बहन प्रियंवदा, मंझली बहिन कनुप्रिया आरो बड़ों भाय कुमार संभव कें कत्तें खुशी होतै, ऊ हम्मुओ जानी रहलों छियै, कैन्हें कि अधिकांश संग्रह तें हम्मी भाय-बहिन कें समर्पित छै।

—अभिनंदन

सम्पर्क : F ब्लॉक, प्लॉट नं.५११६, फ्लैट नं.१४ देव दीपावली, ३० नवंबर २०२० राजेन्द्रपार्क, गुरूग्राम-१२२००१ (हरियाणा)
मोबाइल-९६७१२६५८३३

ढोल बजै छै ढम्मक ढम

प्रथम प्रकाशन
जनवरी १९९४

प्रकाशक
समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका (बिहार)

नूनू बाबू सिनी,

आय तक अंगिका में जे लिखलों गेलै, ऊ बड़के लेली ज्यादा। हम्में समझै छियै, कि है सब देखी-सुनी तोरा सिनी मने मन कुढ़तें होभौ, मजकि आबें कुढ़वों आकि रुसवों छोड़ों। गैवों-हाँसवों सब्भे शुरू करों, 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' रों साथे-साथ।

तोरों बड़ों भाय

विनती

हे भगवान, हे भगवान!
रखियो बच्चो केरों मान!

उमिर बढ़ै ज्यों जीरें-जीरें,
ज्ञान बढैय्यों धीरें-धीरें,
माय-बाबू रों साथ समाज
जोगियो हिनकों पगड़ी-ताज;
देव पुरैय्यों ई अरमान!
हे भगवान, हे भगवान !

गोय्यां-गोद्धा रहै नै रुष्ट,
माँते खैतें रहि जाय दुष्ट,
हमरा गाँधी-बोष बनैय्यों,
देश-धरम रों राह दिखैय्यों;
देशे वास्तें छूटै प्राण!
हे भगवान, हे भगवान!

मुर्गा

मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

जेन्हैं भोरकवा उगलोॅ कि,
चंदा-तारा डुबलोॅ कि,
पहरेदारोॅ रं जोरोॅ सें
कुकड़ू कूँ सुनावै छै।
मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

पनसोखा रं पखना छै,
मूड़ी उपरे रखना छै,
मोर सुहावै जेहनोॅ सर पर
लौकेट होने सुहावै छै!
मुर्गा बाँग लगावै छै,
भोरे भोर जगावै छै।

मछली

मछली रानी छलमल-छल,
जत्तें उछलै ओत्तै जल।

चोय्याँ चमचम पन्नी रं,
चानी केरोॅ चौवन्नी रं,
गजगज तारा झुक्कोॅ फूल,
पीठीं छाती चाट्ठोॅ शूल;
तोहरोॅ वास्तें पोखरी जेहनोॅ,
होने बोहोॅ खल-खल-खल।

केना चलै छोॅ एत्तें तेज?
कहाँ सुतै छोॅ, कथी के सेज?
जलो में गरमी लगै छौं की;
पंखे रं डोलौं दुमड़ी?
के सिखलैलकौं तैरै लेॅ ई?
करवा आदत अदल-बदल!

छाता

कारों-कारों छाता है,
सबके प्यारों छाता है।
गर्मी लें, बरसातों लें;
जेना हँकारों छाता है।
जहाँ मिलौं पड़पड़िया धूप,
वहीं पुकारों 'छाता है ?'
ऊ की भिंजतै बरसा में,
जेकरा ठारों छाता है।
छत्तीस ठों कें त्राण वहीं,
जहाँ अठारों छाता है।
छतरी नै बीहा करतै,
भले कुमारों छाता है ।

कौआ

कौऔ हो कक्का काँव-काँव,
आरो कहीं नै तें हमरै कन ठाँव!
केना कें सूझै छौं, इतनी टा आँख?
हमरे चूलों रं छौं तोहरों तें पाँख,
लंबा ठो देहों में चुटकी भर मूड़ी,
तिरगैलें चोंच रहों लुचकै लें पूड़ी।
केना देह संभलै छौं, काठी रं पाँव?
कौआ हो कक्का काँव-काँव।

गगलौ, तें केना कें काकी बुलावौ,
दूध-भात तोरा लें कैन्हें जुटावौं?
हम्में हड़कम्प रहौं देखथैं बस तोरा,
घुसकी जाँव माय लुग लै दूध के कटोरा।
ताके में रहै छों, केना कें खाँव,
कौआ हो कक्का काँव-काँव ।

नाना रों घोंर

दै नै कभी लेमनचूस छै,
मौसी बड़ी ही कंजूस छै।
मौसा गप्पे हाँकै छै,
दू सेर चूड़ा फाँकै छै।
मामो रहै छै हरदम नील,
मामी केरों अंटी ढील।
पैलें सौ ठो रुप्पा छै,
फुप्फा फुली कें कुप्पा छै।
केकरो नै केकरौ सें मेल,
नाना रों घर लागै जेल।

जाड़

दलदल दलकै हमरों हाड़,
सुइये रं चूभै छै जाड़।
कँपकँप काँपै दोनों ठोर,
कस्सी बान्हलौं गाँती जोर।
ओढ़ना ओढ़ों, वही रजाय,
बुतरु वास्तें जाड़ कसाय।
कनकन्नों राते रं भोर,
गुरुओ जी सें जाड़ कठोर।
रौदा उगै नै खेलौं खेल,
बुतरू वास्तें जाड़ा जेल।
गल्लों जाय छै हमरों हाड़,
कहिया जैभा तोहें जाड़?

महाकवि सुमन सूरो

सादा-सीधा भेष दिखै,
कविता, खिस्सा, लेख लिखै।
बकबक करै नै, चुप्पे मौन,
भरलों भादों, सुखलों सौन।
सुमन कवि के बड़ा अमोल?
एक सुरों में 'सूरो' बोल ।

बकरी

उर्र बकरिया आवी जो;
में-में करी कें गावी जो!
देह तोरों भोकनों-भोकनों,
बाल तोरों चिकनों-चिकनों,
लम्बा कान डुलावै छैं!
केकरा तोहें बुलावै छैं?
आँख कमल रों कोढ़ी रं,
सींग माथा पर बोढ़ी रं,
सींग कें कैन्हें डुलावै छैं?
हमरा तोहें डरावै छैं?
है नै समझैं कि डरवौ,
पीठी पर हम्में चढ़वौ,
पूँछ तोरों छौ फुदुर-फुदुर,
बकरी हिन्नें टुघुर-टुघुर!

दिवाली

फेनु दिवाली ऐलों छै,
माय नें घोंर सजैलों छै।
जगमग-जगमग दीया छै,
जेना मणि के कीया छै।
घुर, घुर, घुर, घुरघुरिया छै,
छुर, छुर, छुर, छुरछुरिया छै।
पड़, पड़, पड़, पड़, फटाक-फटाक,
छुटै पड़ाका झटाक-झटाक।
लुक्का-पाती बड़का लें,
टिकरी-मिट्ठों लड़का लें।
बाहर भेलै दलिद्दर आय,
भीतर ढुकलै लक्ष्मी माय!
सौंसे दुनियाँ झक-झक-झक,
उलुवाँ देखै टक-टक-टक।
डर्हे अन्हार नुकैलों छै,
फेनु दिवाली ऐलों छै।

नया युनियन

पापा हमरों बात सुनों
एक युनियन नया बनाना छै,
पप्पू ओकरों लीडर होतै
नारो खूब लगाना छै।
संझकी रोजे भाषण होतै,
पापा सबटा बात सुनों;
मम्मी रों तानाशाही नै
चलतैं; तोहूँ हाथ मुनों!
कैन्हें दूध पिलैतें मम्मी
जों बुतरू नै चाहै छै,
जत्तें सहलै जाय छै बुतरू
ओत्तें सब्भैं साहै छै।
दिनभर पढ़वे-लिखवे के ही
पापा-मम्मी शोर करै,
ई अधिकार कैन्हों सद्दोखिन
बुतरू कें ही बोर करै।
नारा नया लगैतै सब्भैं
परचो-पोस्टर भी बंटतै,
रूल मुताबिक बच्चा हरदम्म
पापाओ सें नै डँटतै।
भोरे-साँझे अपनों साथें
बच्चौ कें घुम्मावें होतै,
खाली पेन्सिल-स्लेटे नै
गुल्ली-लूडो भी लावें होतै।
बुतरु पास करै तें खाली
चुम्मा पापा-मम्मी दै,
पास करै पर पैसा-कुल्फी
पापा दै नै मम्मी दै।
कल सें पैकेट मार्टन, टॉफी
लेमनचुस के लानें होतै,
ऐतनै नै सब बुतरू केरों
भीतरी मन कें जानें होतै!
झूठमूठ गुरु जी के डंडा
कब तक बच्चा खैथैं रहतै,
बच्चा कुछ समझें नै समझें
दिन भर लेशन देथैं रहतै!
खाक परीक्षा-फल होतै की
अच्छा, बोलों बच्चा के,
गार्जन के कनमोचरा-थप्पड़
कोन अंत छै गच्चा के!
बुतरू पर है जौर-जुलुम कें
जेना हुएँ रुकवाना छै,
पापा हमरों बात सुनों
एक युनियन नया बनाना छै।
देखी लेलियै ई रस्ता कें
छोड़ी कोय नै चारा छै,
सब जोर जुलम के टक्कर में
संघर्षे आबें नारा छै ।

विनती

बाबू पोथी लानी दा,
पेन्सिल एक ठों कीनी दा!
हम्मू अ, आ, ई पढ़वै,
इस्कूली में नै लड़वै।
खल्ली खूब घुमैवै तें
अ, आ जानी जैवै तें?
खोड़ा लिखवैं केना कें,
दीदी लिखै छै जेना कें,
हम्मू पड़वै-लिखवै, तें
पाठ बिहानै रटवै, तें
बड़का आदमी बनवै नी?
साहब हेनों दिखवै नी?
दादा सें तोहें बोली कें
कही दहौं सब खोली कें,
दीदी लें जे लानै छै,
माँगियै मुक्का तानै छै,
हमरो पोथी लानी दा,
पेन्सिल एकठों कीनी दा!

लार्‌हों

हमरों माय, गाय माय,
कहना छै तोहरा कुछ आय!
की होतै कुछ जरो छिपाय,
हमरा सब छौं पाँच भाय।
पाँचों में हम्मी छोटों,
जेना मटर में राय-गोटों।
हमरों की औकात छै,
भैय्या के की बात छै!
हिन्नें दूध दुहावै छै,
हुन्नें सें सब आवै छै।
कोय गारथैं, कोय गरम-गरम,
पीयै गटगट, करै हजम।
जब तक आवौं टुघुर-टुघुर,
पीते देखौं टुकुर-टुकुर।
देतै कहाँ? चिढ़ाबै छै,
गुस्सा केन्हों बढ़ावै छै!
जानथैं छै, यें करतै की ?
टानी लै छै दूध-दही।
हमरों माय, गाय माय,
कहना छै तोरा कुछ आय!
सबके माय कहावै छों,
कत्तें तोहें सुहावै छों!
मैय्यो सें तोहें उच्चों,
पूँछों तोरों नै बुच्चों!
गोरों-गोरों देह केहनों,
सुद्धी छों हमरे जेहनों!
सबटा दूध दुहाय दै छौ,
है नै, लेरु पिलाय दै छौ।
हमरौ तें तोहें मानथै छौ,
हालो सबटा जानथै छों;
चुरु भरी नै दूध मिलै,
खाय वक्ती नै जीभ हिलै।
मैय्यो उल्टे डाँटै छै,
बड़कै में सब बाँटै छै।
आबें एक ठों तोहरे आस,
यही विचारी ऐलौं पास।
लेरु जरा हटावों नी,
हिन्नौ दूध बढ़ावौ नी!
देखों, बाटी आनलें छी,
पानी में रोटी सानलें छी।
रोटी दूध सें सानी जा,
एतना टा तोहें मानी जा।
तोहरे किरिया, जों जैभौं,
घुरी-फिरी कें नै ऐभौं ।

भोर

सूरज उगलै, सूरज उगलै,
सबसें पैहलें चिड़ियाँ जगलै।
ऐंगनोॅ-छत पर चहकै छै,
फूल भोररकी मँहकै छै।
चूँ-चूँ-चीं-चीं करै छै कत्तें,
इस्कूली में बच्चा जत्तें।
ठंडा-ठंडा हवा बहै छै,
नींद बेचारी आँख मलै छै।
रात अन्हरिया भागलै कब्भै,
बूढ़ोॅ-बुतरू जगलै सब्भै।
भीती पर मैना फुदकै,
देहरी तांय उछली आवै।
बच्चा कें कोय्यो नै मारै,
सुग्गा भोरे-भोर उचारै ।

चाँद

चंदा मामा, आरे आवोॅ;
नदिया किनारे आवोॅ!
पानी में नहैवोॅ दोनों,
गीत खुशी रोॅ गैवोॅ दोनों।
तोहरोॅ गोरोॅ-गोरोॅ देह,
धूल सें होतौं कारोॅ देह।
यही डरें नै आवै छोॅ?
पन्द्रह रोज सतावै छोॅ?
चंदा मामा आवोॅ नी,
किस्सा कोय सुनावोॅ नी।
माय के देलोॅ रोटी कें,
दूध सें भरलोॅ बाटी कें,
बड़ी छिपाय कें रखलें छी,
अभियोॅ तक नै खेलें छी,
चंदा मामा आवी जा,
आरो दूर नै भागी जा!
आवोॅ, खैवोॅ रोटी कें,
दूधोॅ आधोॅ बाँटी कें।
मिली-जुली कें साथोॅ में,
हाँसवोॅ-खेलवोॅ रातोॅ में!

गाँधी बाबा

अंगरेजों लें बड़का आँधी,
सबसें बड़ों महात्मा गाँधी।
गाँधी पीन्है एक लँगोटी,
गाँधी जी रों बड़के लाठी।
गाँधी जी रों चश्मा गोल,
सौंसें देह तें झोंलगा झोल।
गाँधी जी रों बन्दर तीन,
अलगे-अलग बजावै बीन।
बच्चा कहै—नै सोना-चाँदी,
सबसें बड़ों महात्मा गाँधी।

थुलथुल बाबा

एत्तें केना मोटावै छै?
थुलथुल बाबा आवै छै।
माथों दूध के चुक्का रं,
केकरो-केकरो हुक्का रं;
पेट भोजों के हड़िया रं,
माथों लगै छै कुढ़िया रं;
मिनिर-मिनिर कुछ गावै छै,
थुलथुल बाबा आवै छै।
गोड़ उठै छै थुबुक-थुबुक,
चिड़ियैं नाँखी फुदुक-फुदुक,
पिन्हलें छेलै नया खड़ाम,
बाबा गिरलै चित्त धड़ाम।
कुरल्हों जाय नेंगचावै छै,
थुलथुल बाबा आवै छै ।

बादल

ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन,
मुन्नी ऐलै बरसा रों दिन!
हाथी बनी कें बादल आवै,
सूँढ़ों सें सबकें नहलावै;
उजरों-कारों ढलमल ढल छै,
लगै पहाड़े रँ बादल छै;
बुली-बुली कें सबरों ऐंगन,
बरसावै पानी सद्दोखिन!
ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन!
की समुद्र छै ई बादल में?
खेत टटैलों डुबलै जल में!
खलखल नद्दी की रं उमड़ै,
रही-रही कें बादल घुमड़ै।
कारों मेघ में ठनका लागै,
धुआँ बीच में जेना आगिन!
ताक धिनक धिन, ताक धिनक धिन!

रेल

छुक-छुक करतें आवै रेल।
की रं हन-हन करलें आवै,
धुइयाँ सें सब भरलें आवै;
रस्ता सें उतरै नै हेट,
एक्के मूँ छै, सोलह पेट;
सत्तर गोड़ों सें करै छै खेल,
छुक-छुक करतें आवै रेल।
कर्रों-कर्रों देह-हाथ एकरों,
कोयला सें मूँ भरलों जेकरों;
पानी पीयै छै सौ-सौ घैलों,
राकसे रं चिकरै उमतैलों;
तहियो लोगों सें हेकरा मेल,
छुक-छुक करतें आवै रेल ।

ढोल

कत्तों मारों कम, कम, कम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
नाँचें नै तोंय; थम, थम, थम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
सुनथैं भागी गेलै जम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
पैसा खोलों खेल खतम,
ढोल बजै छै ढम्मक-ढम।
ढम्मक-ढम, ढम्मक-ढम,
मिलथैं पैसा बम-बम-बम ।

सीख

एक्को रोटी मिलै जों कम,
काका रों मूँ तम-तम तम,
ढम्मक-ढम!
कत्तो अच्छा आलूदम,
पेट बचाय कें कम्मे कम,
ढम्मक-ढम।
हम्में खैलौं दू चमचम;
एकरै में फूलै छै दम;
ढम्मक-ढम।
टानी कें पेटू बेदम,
पेटू कें लै गेलै जम;
ढम्मक-ढम।
ढम्मक-ढम, ढम्मक-ढम,
खा कम्मे कम, ढम्मक-ढम।

वर्ण कविता—१

अ सें अमरूद ठुर्री छौ,
गुस्सैलों छैं गुर्री छौ?
आ सें आम तें मीट्ठों छै,
लेकिन खैलों जुट्ठों छै।
इ सें इमली खट्टा थू,
उल्लू रों सब पट्ठा ऊ ।

वर्ण कविता—२

प सें पगड़ी गोल-मटोल,
लागै छै माथा पर ढोल।
फ सें फूल सुहावै छै,
गुम्मां भौरा गावै छै।
ब सें बकरी, बानर, बाघ,
सब जीवों में सिंहे घाघ।
भ सें भाला, भालू, भैंस,
कभियो सहै नै केकरो तैस।
सुन रे मूसों चूँ-चूँ-चूँ,
म सें मुर्गा—कुकडू-कूँ।

नाम बताव

हल्ला-गुल्ला करें नैं घौल,
उत्तर देलैं नै; लागतौ धौल,
पनरह खेल रों नाम बताव!

खोखा, ताश, कबड्डी तीन,
पोलो, जूडो, खेल महीन;
कुश्ती, चौपड़, किरकेट आठ,
शतरंजों रों अलगे ठाठ;
बैटमिन्टन, टेनिस, घरघोट,
फुटबौलों में कहीं नै खोट;
हॉकी आरो भौलीबौल,
आबें केना देवैं धौल?

पनरों नदी रों नाम ठो बोल,
नै तें कहवौ ही भुसगोल,
जल्दी-जल्दी नाम बताव!

गंगा, बोल्गा, नाइजर तीन,
नील, अमेजन, सी, सालवीन;
डेनीपर, डेन्यूब, कांगो, डोन,
मिसिप, मिसौरी, यमुना, सोन;
पनरो ब्रह्मपुत्रों कें गिन,
मिली-जुली सब भाय-बहिन!

दै देलियो नी उत्तर बोल,
हम्मी देवौ तोरा धौल,
कहवैं की हमरा भुसगोल।

बोली

उल्लू तें घुघुआवै छै,
मुर्गा बाँग लगावै छै।
हिनहिनावै घोड़ा छै,
गड़-गड़-गड़-गड़ सौढ़ा छै।
मूसों करै छै चूँ-चूँ-चूँ,
कुत्ता भूकै भूँ-भूँ-भूँ।
भले कबूतर गुटरूँ-गूँ,
कुत्ता बच्चा कूँ-कूँ-कूँ।
बेंग सिनी टर्रावै छै,
बाघ मतुर गुर्रावै छै।
सिंह दहाड़ै बड़ा गजब,
झिंगुर झन-झन जेना अजब।
गदहा रेंकै रेंकले जाय,
बकरी संग भेंड़ा मिमियाय।
सुग्गा रटै छै टें-टें-टें,
बत्तख जेना कें-कें-कें।
बैल डकारै, गाय रंभावै,
मक्खी भिन-भिन करलें आवै।
चिग्घाड़ै हाथी की जोर,
कूजै वन-वन बत्तख-मोर।
कानै गीदड़, साँप फुँकारै,
कौआ काँव-काँव गल्लों चीरै।
बिल्ली मौसी बोलै म्याऊँ,
नै पूड़ी, तें मूसे खाँव।

शिक्षा

धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन,
चुप मत बैठें, गिनती गिन!
एक्काँ, दूक्काँ, तिनकाँ, चौक्काँ,
पचकाँ, छक्काँ, फेरू सतकाँ,
अठकाँ, नौक्काँ आरो दसकाँ,
दसकाँ सें लै कें तोंय बिसकाँ।
नै पढ़ला सें लै जैतौं जिन,
धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन।
गिन ऊँगली पर सोमवार कें,
मंगल आरो बुद्धवार कें;
ऊँगली पर गिन वीरवार कें,
शुक्र-शनी, आदित्यवार कें;
एक्को ठो नै भुलैयौं दिन!
धाक धिनक धिन, धिन-धिन-धिन ।

भालू

भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।
जहिया सें घूमी ऐलों छै
लंदन आरो हॉलीवुड,
बात करै नै केकरौ सें भी
खाली बोलै–
सी केन कुड,
ही केन कुड,
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।
चश्मा सदा चढ़ैले राखै,
हाथों में छोटका इस्टिक,
झबरों-झबरों लातों सें वैं
ढेपों कें मारै छै किक;
खोलै नै टाई कें कभियो
या माथों सें अपनों हुड।
भालू गुड-गुड, गुड-गुड-गुड।

पुरुष पंचांग

लाल बहादुर लाल जय,
सुनथैं दुश्मन खावै भय।
लौह पुरूष सरदार पटेल,
पलना जिनकों वास्तें जेल।
भगत सिंह रं वीर शहीद,
दूसरों अब्दुल एक हमीद।
पर दुखिया रों एक्के आस,
दाढ़ीवाला बाबा मार्क्स ।

हाथी

टुकढुम-टुकढुम हाथी राम,
तोरोॅ सवारी बिना लगाम।
सूँढ़ लटकलोॅ अजगर रं,
चमड़ोॅ तोरोॅ पत्थर रं,
दाँत दुधे रं चम-चम-चम,
खाना मोंन भरी; नै कम,
पर टुकनी रं आँखे जाम,
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।
पेट छेकौं कि छेकौं पहाड़?
गोड़ छेकौं या गाछे ताड़?
लगौं डमोलोॅ तोरोॅ कान,
तोरोॅ मालिक बस पिलवान।
सब बुतरू रोॅ तोरा सलाम!
टुकढुम-टुकढुम हाथी राम।

फक्कड़दा रोॅ पाठ

अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा।
चैतोॅ संग बैशाख पढ़ावै,
ई दोनोॅ पर जेठ चढ़ावै,
जेठोॅ पर आषाढ़ बतावै,
जै पर सावन-भादोॅ लावै,
आसिन, कातिक तुरत गिनै छै,
अगहन बादे पूस तनै छै,
हेकरोॅ बाद जे आवै माघ,
लागै जेनां ऐलै बाघ,

फागुन जेकरा नाच नचावै,
फगुवो कें नचवैलें आवै,
बुतरू कें कुछ भार नै लागै,
हेनै पढ़ावै गप्पड़ दा।
अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा।

बारों महीना, ऋतुओ छों,
पढ़ चों, छों, जों, पों, फों, बों,
गर्मी पीछू वर्षा दौड़ै,
जेकरों टांग शरदजी तोड़ै,
तहियो कोमल बड़ा शरद,
सब मीट्ठों में जेना शहद,
गोय्याँ एकरों एक हेमन्त,
पीछू-पीछू राखै तन्त।
बचलै शिशिर, बसन्त सुनों,
दू में अच्छा कोंन? चुनों!
बच्चा कें लटकैलें राखै,
बच्चा बोलै गप्पड़ दा।
अक्कड़ सक्कड़ लक्कड़ दा,
गुरु जी बनलै फक्कड़ दा ।

मामा

मामा बड़ा ही सुन्दर छै।
जगथैं शोर मचावै छै,
धम-धम करलेॅ आवै छै,
खाय लेॅ खोजै रही-रही,
ढूँढ़ै दिन भर दूध-दही,
कुछ नै कुछ मिलिये ही जाय छै,
किस्मत केरोॅ सिकन्दर छै,
मामा बड़ा ही सुन्दर छै।

खाय कें निकली डकरै छै,
सब पर रही-रही चिकरै छै,
चिकने-चिकने खाली खाय,
छिपली-छिपली दूध-मलाय,
जोॅन घरोॅ में खोआ-पेड़ा
समझोॅ मामा अन्दर छै,
मामा बड़ा ही सुन्दर छै।

मामा मानें चप-चप-चप,
रसगुल्ला सब गप-गप-गप,
पूड़ी-कचौड़ी हप-हप-हप,
जिब्भा दिन भर लप-लप-लप,
हम्में कुछ माँगियै तेॅ बोलै—
ई तेॅ बड़ा छुछुन्दर छै,
मामा बड़ा ही सुन्दर छै।

डोमनदा

दूगो पैसा चा-चा-चा,
डोमन दा सें खुश बच्चा।
डोमनदा रों कोन निशान?
हाथ में बौकड़ी, मूँ में पान,
बात-बात पर हा-हा-हा,
खलखल हाँसै डोमनदा।

दूसरों हुनकों कोन निशान?
तनिया टा नै शान-गुमान,
सा सा रे रे ग म पा,
कवि-आलोचक डोमन दा।

तेसरों हुनकों कोन निशान?
सौ गो पोथी हुनकों जान,
चलै बुतरुवे रं पा-पा,
दू मन भारी डोमन दा।

ऊँट

ऊँट-ऊँट उठले ही जाय,
रेगिस्ताने में दिखलाय।
पीठी पर पहाड़ छै,
सर्दी लगै नै जाड़ छै।
पानी पियै नै कै-कै दिन,
एक, दू, तीन, चार, पाँच, छों गिन।
गर्दन बगुला रं उच्चों,
पूँछ मतुर बुच्चों-बुच्चों।
बालू पर की करै कमाल,
मलकी-मलकी चलै छै चाल।
नै तिनसुकिया, नै धुलियान,
ई जहाज बालू रों यान।
सूप डंगावों या कोय टीन,
भागथौं नै ई, भेद महीन।*
जौनें कहतै भेद महीन,
गिनें नै पड़तै एक, दू, तीन।

(*प्राचीन समय में ऊँट सेना में शामिल छेलै, आरो जे भाला, तलवारों सें नै डरलै, ऊ भला सूप या टीन डंगैला सें केना डरें पारें।)

जोड़

एक+दू = तीन,
अच्छा नै रीन।
दू+तीन = पाँच,
ऐंगना में नाँच।
पाँच+तीन = आठ,
पढ़लै पर ठाठ।
जे गिनतै दस-दस,
भात खैतै गस-गस।

टुनमा रों अंग देश

अंग देश रों टुनमा वासी,
जेकरों वास्तें अंगे काशी।
वीर कर्ण रों देश यही,
टुनमा उछलै कही-कही।
एकरों नदी ले मन में खोसी,
चानन, गंगा, आरो कोसी।
जानवे तोहें देर-सबेर,
अंग देश रों महिमा ढेर।
मौसा-मौसी यही कहै,
ऋष्योश्रृंगी यहीं रहै।
पूज्य वासूओ कें नै भूल,
झुलवा पर तोहें कत्तों झूल।
विक्रमशील हौ विद्यापीठ,
अभियो गिरी खड़ा छै ढीठ।
पढ़ी-लिखी कें अपनों ज्ञान,
मंदारे रं उच्चों तान।

चन्दनवाला, बिहुलामाय,
सब बुतरू पर हुएँ सहाय।
टुनमा खाय कें एक अनरसा,
घूमी ऐलै लगे सहरसा;
भागलपुर सें मधेपुरा,
दिखलै कोय नै एक बुरा;
ई खुल्लै तभिये जाय पोल,
तुरत पहुँचलै जबें सुपोल।
साहेबगंज में साहब पाँच,
बदमाशों रों करै छै जाँच।
देवघर, दुमका, गोड्डा तीन,
घुमतें-घुमतें ऐलै नीन।
बेगूसराय ठहरलै जाय,
एक पुलिस सें धक्का खाय,
लेलकै कटिहारों में होश,
फेनू चली कें छों-छों कोस,
आय पूर्णिया एलों छै,
मछली खाय मुटैलों छै।
किसनगंज में लगलें लू,
ऐलै अररिया झाँपलें मूँ;
भले खगड़िया परसू जाय,
बाँके में ऊ रहतै आय;
कल जैतै मुंगेर किला,
आरो जमुई नया जिला,
अंग देश रों यही भुगोल,
आपनों भाषा 'आंगी' बोल।

बुतरू के तुतरू

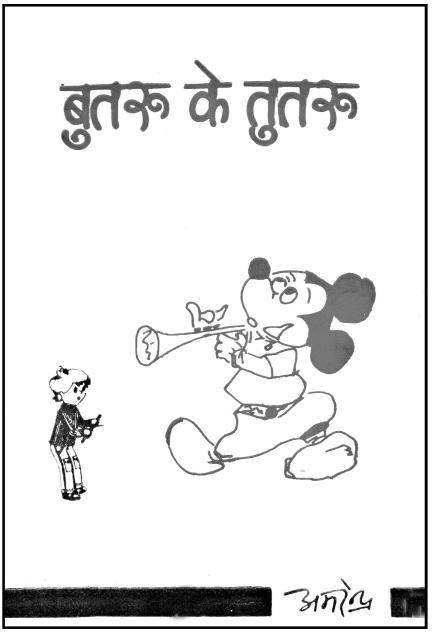

प्रथम प्रकाशन
दिसम्बर १९९९

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

सब बुतरूसिनी,

नया शताब्दी में, तोरासिनी के हाथों में फेनू एकटा नया बाल कविता-संग्रह सौंपी रहलों छियौं, होने मीट्ठों-मीट्ठों कविता कें, जेन्हों कि तोरासिनी कें १९९४ में 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' में बाँधी कें सौंपलें छेलियौं।

तोरासिनी जत्तें गदगद होय कें 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' कें स्वीकार करलौ कि ई दोसरों संग्रह तैयार करै में हमरा एन्हे खुशी होलों छै, जत्तें कि पहिलो दाफी नै होलों होतै।

हमरा खुब्बे विश्वास छै कि ई बाल कविता-संग्रह तोरासिनी कें ओतन्हैं सुख देथौं, जत्तें कि बजतें ढोलक के ढम्मक-ढम नें देलें छेलौं। लिखियों, केन्हों लागलौं।

विनती

हे भगवान, हे भगवान,
माँगौं तोरा सें ई दान–
पोथी पर सें हटै नै ध्यान,
सागर नाँखी उमड़ें ज्ञान!
गलत काम सें पकड़ौं कान,
बाबू-माय के राखौं मान!
बनौं जगत के सूरज-चान,
भारतमाय के राखौं शान!

नानी सें गुहार

नानी, नानी, पानी दे,
गंदा छौ तें छानी दे!
भोरे दूध पिलैलों कर,
राती लोरी गैलों कर,
हमरे साथ नहैलों कर,
हमरे साथें खैलों कर,
चूलो चोटी बान्ही दे,
भात-दाल सब रान्ही दे!

की बोलै छैं–गिनती गिन?
सुनथैं माथों भिन-भिन-भिन!
खेलभौ, रात हुवें कि दिन,
की करभैं होय्ये आगिन।
पुल्ली-डंडा लानी दे,
ऐंगन्हैं खच्चो खानी दे!

बारह बच्चा रों घोंर

अक्कड़-बक्कड़ दू गो भाय,
दोनों भाय कें चिन्ता खाय।

एक भाय कें छौं गो पूत,
माथा पर बनलों छै भूत ।

दूजा कें छों बेटी हाय,
बैठली-बैठली खाली खाय।

बारो वीर लड़ंका छै,
घोंर लगै कि लंका छै।

दोनों बाप विभीषण रं,
बच्चा सब खरदूषण रं।

केकरौ लंघी, केकरौ थाप,
दिन भर रहै गरजथैं बाप।

घोंर लगै छै मूसो-बिल,
या माथों में खचखच ढिल।

पियक्कड़ मामा

मंटू मामा पीबी ताड़ी
हाँकें लागलै मोटर गाड़ी ।
दायाँ-बायाँ सब कुछ छोड़ी,
बीचे बीच सें किल्ला तोड़ी
हैंडिल रही-रही घूमै छै,
मंटू मामा झूमै छै।
हैंडिल गेलै बगदी कें
आरो गाड़ी कबदी कें
तनटा जे दायाँ झुकलै,
बीच गढ़ैया में ढुकलै।
गाड़ी भेलै चित्त-चितांग,
टुटलै मामा के दू टाँग,
मूँ में घुसलै कीचड़-कादों,
भर-भर गोबर केरों लादों।
मामा बोलै गों-गों-गों,
हुन्नें मोटर पों-पों-पों।
मोटर ऊपर बनलै गामा,
चक्का नीचें पिचका मामा।

दमड़ी दाढ़ी

अंतर-मंतर, घोंघा-साड़ी,
आँख की देखैं फाड़ी-फाड़ी;
है ले देलियौ पैसा गाड़ी,
हिम्मत छौ तेँ लहैं उखाड़ी;
अंतर-मंतर, घोंघा-साड़ी,
भाँसी जाय बाबा रोँ दाढ़ी।

दाढ़ी-दमड़ी एक समान,
निकलै नै, निकली जाय जान,
दाढ़ी लागै जंगल-झाड़ी,
वैंमेँ मूँ बंगाल रोँ खाड़ी।

बाबा खैलकै एक सुपाड़ी,
फसलै, लेलकै दाँत उखाड़ी,
देलकै सौंसे मुँह बिगाड़ी।
अंतर-मंतर, घोंघा-साड़ी,
जान लेबैया दमड़ी-दाढ़ी ।

पछतावा

एक्का एक आरु एक दाँही दस,
खाली सिलोटी पर खल्ली घस।
दू अठी सोल्लह, दू दुनी चार,
खोआ कें देखथैं बस मुँहों में लार।
तीन पँचे पन्द्रह, तीन दाँही तीस,
पढ़है में मारै छै माथों में टीस।
चार चौके सोल्लह, चार दुनी आठ,
चोरी-डकैती सें बनलों छै लाट।
पाँच तिया पन्द्रह, पाँच चौके बीस,
फेल होलै बुतरु; नै देभौं फीस।
छछौक छत्तीस, छों पंचे तीस,
सब्भैं तें बच्चै पर झाड़ै छै रीस।
सात दाँही सत्तर, सात एकां सात,
सोटा लै घूमै छै गुरुजी हाथ।
अठी-अठी चौंसठ, आठ एकाँ आठ,
घोंर गेलै चटिया गुरुजी घाट।
नों चौके छत्तीस, नों एकाँ नों,
नै पढ़भौ, नै लिखभौ। खेलभौ जों!
दस चौके चालीस, दस पँचे पचास,
नै पढ़लां, नैं लिखलां, छीलै छी घास!

गर्मी

जे रङ के ई जेठ छै,
धरती मटियामेट छै।
कुइयाँ छै ई हालों में,
पानी छै पातालों में।
झुलसी गेलै लू सें दिन,
लू तें लागै छै आगिन।
धूल जरै छै रुइया रं,
नदी सुखी कें सुइया रं।
वोंन कटैलै जहिया सें,
ई गर्मी छै तहिया सें।
फेनू जे ऐतै बैशाख,
धरती होय कें रहतै राख।

बादल आरो बुतरू

बुतरू :
''नद्दी-नद्दी पानी दे,
नै तें मछली रानी दे!''

नद्दी :
''कहाँ सें देभौ पानी कें,
चमचम मछली रानी कें,
आबें मेघ नै आवै छै,
पानी कें बरसावै छै,
बादल कें जाय विनती कर–
नद्दी कें पानी सें भर।''

बुतरू :
''बादल-बादल पानी दे,
नै तें बिजली रानी दे!

बादल :
''कहाँ सें देभौ पानी कें,
चमचम बिजली रानी कें,
जंगल नै तें छाया दै,
खड़ा हुऐ लें पाया दै,
गरम हवा ठंडैतै नै,
बादल भी तें ऐतै नै।''

बुतरू :
''जंगल मेघ कें छाया दैं,
खड़ा हुऐ लें पाया दैं।''

जंगल :
''कहाँ सें देबौ छाया कें,
खड़ा हुऐ लें पाया कें,
जंगल तें सब कटी गेलौ,
करखाना में बँटी गेलौ,
गाछ लगाबें पहिलें, जो,
सब लोगों सें कहलें जो!''

सूत्रधार :
बुतरू चललै गामे-गाम,
गाछ लगैनें ठामें-ठाम,
देखी लोग जुटी गेलै,
धरती वन सें पटी गेलै।

जंगल-जंगल घूमी कें,
ऐलै बादल झूमी कें,
आरो नद्दी बहलै सब,
सुख आबै, दुख सहलै सब।

लल्लू लाल

लल्लू लाल,
करै कमाल।
देह-हाथ लकड़ी;
सुखलों डाल।
छों कीलों के,
छट्ठा साल।
जरा-सा डाँटों,
मूँ-गाल लाल।
भात मिलै तें,
दै छै ताल।
नाक सिकौड़ै,
देखथैं दाल।
मूसों देखथैं,
हाल बेहाल।
खोटा, चीटी,
वास्तें काल।
पढ़ै-लिखै में
अव्वल आल।
यहें कमाल,
लल्लू लाल ।

होली

फुर-फुर उड़लै रंग-अबीर,
खो रे बुतरू पूओं-खीर!
आय पढ़ै के नाम नै ले,
कोय रंग माँगौ, दाम नै ले!
जत्तें छोड़वे छोड़ें रंग,
आपन्है में सब कर हुड़दंग!
बड़का सें नै लागियैं तोंय,
कत्तो तोहें छै बिडगोंय!
बड़का कें जौं बोलभैं—तुम,
खैबैं मुक्का धुम-धुम-धुम।
अमरेन्दर नें खैलकै भांग,
नाली में छै चार चितांग।

बरसा

बरसा झमझम-झमझम, झम,
ठनका ठनकै छै की कम!
बेंगो नै मारै छै दम,
बरसा झमझम-झमझम, झम।

झिंगुर झनझन-झनझन, झन,
पानी घुसलै सब्भे कन;
नानी के नाको छै दम,
बरसा झमझम-झमझम, झम।

जे भींजतै ई बरसा में,
गर्दन देतै फरसा में;
रोग सतैतै फुलतै दम,
बरसा झमझम-झमझम, झम।

शैतानी रों फोंल

चम्मो-धम्मो दू गो भाय,
जखनी नै तखनी अगराय;
पढ़ियो वक्ती गाना गाय,
नानी माय कें खूब सताय।
घर के सबटा टप-टप खाय,
टोकला पर खाली ठिठियाय;
इक दिन ऐलै बड़का बू,
सोंटा लै—छू मंतर छू;
होश दोनों के गुड़ुम-गुड़ुम,
खैलकै मुक्का धुड़ुम-धुड़ुम।

अंगिका

दादी-नानी खकसी बोललै—
हमरोॅ भाषा, अंगिका।
अंगिका ही ढोलक-तुतरू,
तड़बड़ तासा, अंगिका।
बुनिया, चमचम, रसगुल्लो सब,
यहेॅ बतासा, अंगिका।
बिन्दी, टिकुली, चूड़ी-चुनरी,
झुमका-पासा, अंगिका।
ई बोलैवाला—घरवैया,
आरो वासा, अंगिका।
अंगिका ही माय छै—
बोलै ई भौजाय छै।
अंगिका माय जै पर खुश;
ऊ सब खुश छै, बाकी फुस।

जाड़

गर्मी जेन्हे केॅ गेलौ रे,
देखैं ठंडा ऐलौ रे!
चद्दर-कम्बल बाहर कर,
ई भूतोॅ सेॅ डर-डर-डर!
दाँत करावै किट-किट-किट,
बच्चा लेॅ ई नै छौ फिट।
गुरुवे जी रं दै छौ राग,
बोरसी मेॅ कर जल्दी आग।
गाँती बान्हेॅ, ओढ़ रजाय,
दलकावै छौ जाड़ कसाय।
नानी तेॅ बनली छै थिर,
दादी के कर फिकिर-फिकिर।
सटली रहै छै मोखै सेॅ,
जैतै दादी धोखै सेॅ।

तोहरों घोंर

केहनों तारों ई घर छौ,
मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ।
की सिखलें छैं धंधा तोंय,
नाली रखभैं गंदा तोंय;
दलदल ऐंगनों-बाहर छौ,
मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ।
साफ-सुफय्यत रहलों कर,
मसहरी में सुतलों कर;
रक्षा लें ई मन्तर छौ,
मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ।
गंदा तोरों गली-सड़क,
डी.डी.टी. के दवा छिड़क;
यहाँ मलेरिया के डर छौ,
मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ!

दादी

दादी अस्सी सालों के,
पकलों-पकलों बालों के।
अँगुरी-अँगुरी काठी रं,
देह-हाथ सनसनाठी रं।
चोरों के छै बड़का डोंर,
छोड़ै नैं जल्दी छै घोंर।
बोली बोलै रुकी-रुकी,
कोसो बूलै झुकी-झुकी।
दादी माय कें सूझै कम,
ई बातों कें बूझै कम ।

बुतरू आरो विनती

दू-दू ठो रसगुल्ला दे,
केला छिलका खुल्ला दे;
लेमनचूस के गोली दे,
पन्नी ओकरों खोली दे!
दूध-दही के कुल्ला छी,
हम्में बुतरू फुल्ला छी।

बगुला जी

बग-बग उजरों, बगुला जी,
मछली मारों, बगुला जी।
खालिये मछली पेट में देभौ,
पानियो ढारों, बगुला जी।
एक खदैया में मछली छों,
बैठलों बारों बगुला जी।
एक टांग पर ठाड़ों तोहें,
देह संभारों, बगुला जी।
गिरला अगर खदैया में जों,
होवा कारों, बगुला जी।
खैला-पीला खूब मोटैला,
टाँग पसारों, बगुला जी।

लालच रों फोंल

अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो,
अस्सी-नब्बे पूरे सौ।

सौ पैसा के टाका एक,
वैमें पड़लै डाका एक।
डाका में डाकू चालीस,
चललै मारा-मारी ढीस;
जे छेलै वैमें सरदार,
ऊ तें आरो भी खूँखार।
उनचालीस कें देलकै मार,
वहीं लुढ़कलै वैमें चार।

बाकी जे बचलै पैंतीस,
सरदारों पर झाड़ै रीस।
ऐलै सरदारों कें गुस्सा,
दस कें देलकै दस-दस घुस्सा;
घुस्सा खाय कें दसो चिताँग,
कहीं पें मूड़ी, कहीं पें टाँग।

ई देखी पच्चीस बेहाल,
तहियो सब ठोकै छै ताल;
सबठो कें टाकै पर ध्यान,
बेची देलकै लाज-गरान।

सरदारौं हौ देलकै ढीस,
वहीं पें गिरलै फट-फट बीस।

आबें जे बचलों छै पाँच,
जान बचाय लें नाचै नाँच;
सरदारें फूकै छै बीन,
ताक धिनक-धिन,धिन-धिन-धिन।
नाँचतें-नाँचतें गिरलै तीन,
सरदारों कें ऐलै नीन।

बचलों दुए डकैत छै,
दोनों बड़ी लठैत छै।
टाका वास्तें खाँव-खाँव-खाँव,
कुत्ता नाँखी झाँव-झाँव-झाँव।
दोनों करै छै फन-फन-फन,
चललै लाठी दन-दन-दन।

गिरलै पट-पट दोनों ठो,
अक्कड़-बक्कड़ बम्बे बो।
दादी बोलै हकाय-हकाय,
लोभी सब कें छकाय-छकाय।
अस्सी-नब्बे पूरे सौ,
धोंन पकड़बै, मरबे जो!

सीख

दू-दू बोलैं; की टू-टू,
खेलें बुतरू, घुघुआ-घू
चोर घूमै छै चुकू-मुकू,
आरे कुत्ता तू-तू-तू ।
धुइयाँ उड़तै धू-धू-धू,
बीड़ी पीयै; आक् थू-थू।
बिन्डोबों चलतौ हू-हू,
गर्मी ऐतौ, लागतौ लू।
मंतर पढ़ें नै झाड़ें ज्ञान,
झाड़-फूँक सें जैतौ जान।
जादू-टोना के सिखवैया,
पक्की मानें—जानलेवैया।

भोकसी बिल्ली

बिल्ली ई सरकारी बिल्ली,
एक दिन बौंसी, दस दिन दिल्ली।
पीयै सबटा औंटलों दूध,
ओकरौ पर छालियो के सूद;
पोरलों दहियो साथें जोरन,
छोड़बो करै, तें जेहनों फोरन;
होली जाय छै कोठी दिन-दिन,
घर में घूमै; बनली बाघिन।
ई बिल्ली नै हेन्है जैतै,
साठी माय रं घुरथैं रहतै,
हमरो मिललों हिस्सा खैतै,
हरमुनियम रं मीं-मीं गैतै!
आरे कुत्ता आ तू-तू,
ई भोकसी पर मारैं मूँ!
एकरों देह के गरदा झाड़,
आरो फेरू मूँछ उखाड़!
एकरों मूँ में भरवै भूसों,
रहतै, रहों घरों में मूसों।

ननिहर

नानी-दाद—बूढ़ी दू,
घी में छाँकलों पूड़ी दू।
नान्हौ-दादा की छै कम,
घी सें छाँकलों आलूदम।
मौसी-मौसा खीर में रतुआ,
मामाजी जंडा के सतुआ।
हमरा जे देलकै एक चटकन,
नाना सें खैलकै दू पटकन।

संदेश

सुन रे लेलभा, सुन-सुन-सुन,
नै पढ़ले तें माथों धुन।
जे-जे इस्कूली में गेलै,
आय वही सब पंडित भेलै;
कभियो धरलैं पेन्सिल-खल्ली?
धरलैं, तें बस धरलैं, गुल्ली;
खाय लें खाली खुन-खुन-खुन,
सुन रे लेलभा सुन-सुन-सुन।
पढ़ी-लिखी सब बाबू भेलै,
हिन्दी-अंगरेजी में बोलै,
कोय एस.डी.ओ., कोय प्रोफेसर,
कोय कलेक्टर, कोय इन्सपेक्टर,
तोहें खाली पन्नी चुन,
सुन रे लेलभा सुन-सुन-सुन।

नशाखोरी के फोॅल

जे पीयै छै ताड़ी,
ओकरोॅ भाँसतै नाड़ी।
जे गाँजा पीयै छै,
थोड़े दिन जीयै छै।
जे पीयै छै दारू,
ऊ पक्का घरजारू।
जे पीयै छै हुक्का,
ओकरोॅ जिनगी फुक्का।
बीड़ी-सिगरेट पीतै,
जम-दरबाजा जैतै।
जे कद्दू-रस पीयै,
सौ-सौ साल ऊ जीयै।

पढ़वैय्ये बनतै लाट

अक्कड़-बक्कड़ अस्सी-आठ,
जे पढ़तै, ऊ बनतै लाट।
लाट बनी कें दिल्ली जैतै,
दिल्ली सें पटना ऊ ऐतै,
पटना आय कें हुकुम चलैतै,
पैतै इनरासन के ठाठ।
अक्कड़ बक्कड़ अस्सी-आठ,
जे पढ़तै, ऊ बनतै लाट।
अक्षर—ब्रह्मा, सुरसती माय,
अक्षर घोकें मोॅन लगाय!
अक्षर देतौ धोॅन लगाय;
पढ़वे-लिखवे — पूजा-पाठ।
अक्कड़ बक्कड़ अस्सी-आठ,
जे पढ़तै, ऊ बनतै लाट।
जे नै पढ़तै, जूता सीतै,
चोरका-चोरका ताड़ी पीतै,
सुअरे नाँखी जिनगी जीतै,
धोबी-कुत्ता घरे नै घाट।
अक्कड़ बक्कड़ अस्सी-आठ,
जे पढ़तै, ऊ बनतै लाट।

चिन्ता

टुन, टुन, टुन,
सब्भैं सुन।
खटिया सब में,
लागलौ घुन।
कानें बैठी,
माथों धुन।

साफड़ी

पकलों साफड़ी सेवे रं,
खाय में मिट्ठों मेवे रं;
पाँच टका में कीलो भर,
डम्हक-डम्हक, कचर-कचर।
मोती रहें जों घैला में,
आकि पोस्ता पैला में,
छिनमान बीच्चो होने रं,
तारा भरलों दोने रं।
गुलगुल साफड़ी गद्दी रं,
कोय पाकी कोलपद्दी रं,
भर-भर खोचों लेलें जो,
पेट चलों नै, खैलें जो!

विश्वास गीत

होवै कामयाब, होवै कामयाब,
हमें होवै कामयाब, एक दिन,
हो, हो मन में छै विश्वास,
पूरा छै विश्वास,
हमें होवै कामयाब, एक दिन ।
पढ़वै, लिखवै, पैवै ज्ञान,
पैवै दुनिया सें सम्मान,
पढ़वै-लिखवै, पैवै ज्ञान, एक दिन,
हो, हो मन में छै विश्वास,
पूरा छै विश्वास,
पढ़वै, लिखवै पैवै ज्ञान, एक दिन।
राखवै भारत माय के शान,
दै कें अपनों माँटी जान,
रखबै भारत माय के शान, एक दिन,
हो, हो मन में छै विश्वास,
पूरा छै विश्वास,
रखबै भारत माय के शान, एक दिन।
सौंसे दुनियै होतै घोंर,
नै केकरों सें केकरौ डोंर,
सौंसे दुनियै होतै घोंर, एक दिन,
हो, हो मन में छै विश्वास,
पूरा छै विश्वास,
सौंसे दुनियै होतै घोंर, एक दिन ।

बाजै बीन, बजावै तीन

प्रथम प्रकाशन
ई. २००४

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

नूनू बाबू सिनी सें

बच्चाहौ में आरो छोटों बच्चा सिनी सोचतें होतै कि हमरा सिनी लायक ओत्तें कविता 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' आरो 'बुतरू के तुतरू' में कहाँ छै ! ठीक शिकायत छै । यहें शिकायत कें दूर करै लेली आबें लै आनलें छियै—'बाजै बीन, बजावै तीन'। खाली नुनुवे बाबू नै, ई बीन कुछ हेनों बनैलों गेलों छै कि मंझलक्है नै, नानाहो-नानी, दादाहो-दादी बजावें पारें।

तें है लें—बजाबों तीन्हो, बाजतौं बीन्हो।

तोर्हे सिनी रों

मूसों आरो मामा

मूसों खैलकै कपर-कपर;
बिल्ली खैलकै चपर-चपर;
दादां खैलकै गपर-गपर;
मामा खैलकै हपर-हपर;
कुतबो खाय मुस्तंडा छै,
बाँकी खाय लें डंडा छै ।

बड़का मामा

बड़का मामा मुकुर-मुकुर,
बीड़ी पीयै धुकुर-धुकुर,
ताड़ी पीयै ढुकुर-ढुकुर;
मरता एक दिन हुकुर-हुकुर ।

मन्तरिया मामा

अगड़म-बगड़म मामा दू,
दिन भर मारै मन्तर-छू;
मन्तर में छोहारा छै,
दिन में सूझै तारा छै ।

मट्टीखोर मामा

पिहनी फट्टा ढोल पजामा
घुढ़कुनियाँ मारै छै मामा,
कोना में जाय सट्टी कें
जी सें चाटै मट्टी कें;
देखी खैवों आबें मार,
मामा दै मुड़गुनियाँ पार ।

बुझौवल

चार ठो खुट्टा कड़ों-कड़ों,
वै पर पर्वत बहुत बड़ों;
पर्वत डोलै, खुट्टा काँपै,
सबकें एक्के साँपें नाँपै;
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : हाथी

बुझौवल

गर्दन ऊँचा पर, मुर्गो नै,
शिवलिंग लागै, मतुर वहो नै;
बिन चक्का रों गाड़ी छेकै
दुश्मन कें धूरा रँ फेकै।
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : ऊँट

बुझौवल

इक राकस रों माथा खोल,
वैमें भगजोगनी रों टोल;
बारी-बारी आँख कें खोलै;
कभियो नै कटियो टा डोलै;
हेनों की अचरज छै बोल ?
नै तें होतौ माथों गोल ।
—उत्तर : रात

के की करै

हवा करै साँय-साँय;
सुगा करै टाँय-टाँय;
बैलगाड़ी चर्र-चोंय;
बेंग करै टर्र-टोंय;
नाना खाँसै ढाँय-ढाँय;
नानी करै झाँय-झाँय ।

समझ

कुत्ता बूझै, आ तू-तू,
आरो कबूतर बियो-बियो;
अर्र-अर्र, बूझै बकरी;
बिल्ली बूझै, मियो-मियो।
म-अ-र-ए चारे टा,
दुष्टें बूझै मारे टा ।

मामा रों हाल

मामा रों बस एक सवाल—
कखनी पकतौ रोटी-दाल?
ई देखों मामा रों हाल,
मछली बाहर, आपनें जाल।
संभरै नै मामा सें झाल,
तहीं सें दै चूतड़ पर ताल।
आयकल मामा मालेमाल,
दू कीलो भर दोनों गाल।
कबें कटैवों भालू-बाल?
मामा ऐल्हौं नयका साल।

कैलू के करनी

खैवे पर ध्यान दै,
के एकरा ज्ञान दै।
आवै छै घुप सना,
बानर ज्यों हुप सना।
लुचकै छै लुप सना,
पकड़ै छै चुट सना।
टूटी जाय पुट सना,
घर घूसै सुट सना।
कैलू के करनी,
माय भरै भरनी ।

मामा

जंगल-झाड़-पतार-कदीमा-कद्दू-आलू,
जत्तें नै छै मामा ओत्तें मामी चालू।
अगरो-बगरो, कौआ-मैना, पिपरी-खटमल-खोटा,
दूध किनै लें मामा गेलै भूली ऐलै लोटा।
हाथी-गीदड़-भैंसा-चीता-केला-खरबुज-भुट्टा,
भैंस कहीं तें छोड़ै मामा, लै आनै छै खुट्टा।
अड़गड़ मारै, बड़गड़ मारै, मारै कुत्ता-बकरी,
खाय सें पहिलें यहें हुऐ छै मामा जाय छै ढकरी।
आलू-बालू, छर्री-लोहों, नानी-नाना, दादा,
कोय परीक्षा हुऍ, मामा कॉपी छोड़ै सादा।
देह बढ़ै लें खाय छै मामा किसमिस-कंद-पपीता,
तीन फिटों सें बढ़थैं नै छै, दिन भर नाँपै फीता।

करनी रों फोंल

सबसें बची कें हट्टी कें,
दीवारों सें सट्टी कें,
दादा खाय सरपट्टी कें,
तोड़ी देलकै चट्टी कें,
पौंआ-पासी-पट्टी कें।
देलकै मांय धरपट्टी कें।

काका आरो बुतरू

जब ताँय घर में काका छै,
मालिक बनलों आका छै।
घर में दिल्ली-ढाका छै,
खूब कमैलें टाका छै।
बुतरू वास्तें फाका छै,
खेलवे पर ही डाका छै।
बच्चै काँटों-कूसों रं,
डर सें बच्चा मूसों रं।

मामा रों खेल

पेट बराबर फुललों गाल,
मामा चलै दुलत्ती चाल।
झापड़ो माथो,बढ़लों चूल,
जैमें पाँच पसेरी धूल।
पढ़ै-लिखै में अजगुत खेल,
नौमी में नौ दाफी फेल।
रौदिये में घूमै छै मामा,
भैगने कें धूनै छै मामा।
दिन भर मारै घर में मूसों,
माथा में भरलों छै भूसों।

पियक्कड़ छोटका मामा

बड़का पक्का चोर पियक्कड़ छोटका मामा,
चाटै हरदम ठोर पियक्कड़ छोटका मामा।
कान अमैठै बुतरू सब के बिन बाते के,
जी के बड़ा कठोर पियक्कड़ छोटका मामा।
चोर-चिबिल्ला वास्तें एकदम पंडित-ज्ञानी,
बुतरू वास्तें 'बोर' पियक्कड़ छोटका मामा।
दिन भर तमतम मुँह करै बिन टोकले-टाकले,
गरजै छै घनघोर पियक्कड़ छोटका मामा।
जखनी दै छै मार दरोगा-पुलिस-सिपाही,
खूब चुआवै लोर पिक्कड़ छोटका मामा।
कत्तो खाय छै मार मतर नै आदत सुधरै,
पक्का छै लतखोर पिक्कड़ छोटका मामा।

मामा

लरपच मामा-बत्ती बाँस,
देहोॅ पर नै जरियो माँस।
बोली तै पर टनकोॅ टाँस,
लौंगिया मिरचा नाँखी झाँस।
बिलखै छौं कहिया सेॅ बुतरू,
लानी दौ करकोइयाँ-तुतरू।

माघी धूप

बर्फे रं छै अबकी धूप,
बड़ी कठोरिन माघी धूप।
देह जरो नै गरमावै छै,
उगवो करै तेॅ बाँझी धूप।
दादा घर मेॅ थरथर काँपै,
बड़ी कसाय कनकन्नी धूप।
बोरसी तर सेॅ बाबा बोलै,
मारतै यें मरखन्नी धूप।
गोड़ लगै छी उगोॅ-उगोॅ,
नानी, दादी, काकी धूप।

पाँच मुकरी

इस्कूल पहुँचों आगू ऐल्हौं;
छों घण्टा तक माथों खैल्हौं;
सब चटिया लुग घूमै छुट्टा;
के रे, गुरू जी?
नै रे—हुट्ठा।

२

खावै सें मतलब भरपेट्टा;
टानै छै, जतना रग-चेट्ठा;
चलै झुण्ड में बान्ही पाँती;
के बरियाती?
नै रे—हाथी।

३

भोरे होत्हैं नींद तुड़ावै;
बड़को सब रों होश उड़ावै;
भन-भन करै जे रातो-दिन भर;
की रे दादी?
नै रे—मच्छर।

४

सड़ल्हौं अन्न कें देखी रीझै;
पेटों लें नालियो ताँय गींजै;
आपनों भाग पर आपन्है खीझै;
की अरे टूअर?
नै अबे—सूअर।

५

निकलौं जेन्हैं कि साथें लागतौं;
गोड़े लग जाय कूँ-कूँ करतौं;
कोय्यो बैरी सें नै डरतौं;
की अरे कुत्ता?
नै अबे—जुत्ता।

बाजै बीन

बाजै बीन, बजावै तीन,
बात बड़ोॅ ई, बड़ा महीन।

नाँती वास्तें बात बरोबर
की तबला, की ढोलक-टीन,
बाजै बीन, बजावै तीन ।

बात बुझै लेॅ बिचला मामा
दौड़लै-लंका, तिब्बत, चीन,
बाजै बीन, बजावै तीन ।

नानी सें जों बात पूछलियै,
हुनका आवी गेलै नीन;
बाजै बीन, बजावै तीन ।

जिनखेल

तड़बड़ ताशा, तड़बड़ ताशा,
पूजा पर सें गोल बतासा।
मामी छै खोजै में बेदम,
ई देखी पंडित जी तमतम।
नानी फूलोॅ तर में खोजै,
ई जिनखेल लगै छै सोझै।
आखिर में जाय खुललै पोल,
मामा मूँ सें फुटै नै बोल।
पूज्हौ वक्ती वहेॅ तमाशा,
तड़बड़ ताशा, तड़बड़ ताशा।

नानी

अ सें अक्खज, ऊ सें ऊन,
नानी जैती देहरादून।
क सें कौआ, ख सें खाल,
नानी केरों गलै नै दाल।
ग सें गुल्ली, घ सें घूस,
केना काटतै नानी पूस।
च सें चुक्का, छ सें छाल,
चलतें रहै छै नानी गाल।
ज सें जातों, झ सें झोंक,
नाना भरगर नानी फोंक।
ट सें टूसों, ठ सें ठूँठ,
नानी सहै नै कटियो झूठ।
ड सें डब्बू, ढ सें ढोल,
नानी रों सब दाँते गोल।
त सें तुमड़ी थ सें थान,
नानी रों नाँती जजमान।
द सें दमड़ी, ध सें धोंन,
नानी चूल-सनांठी सोंन।
न सें नाना, प सें पान,
नान्है पर नानी रों ध्यान।
फ सें फुद्दी, ब सें बाँस,
खनखन नानी सहै नै झाँस।
भ सें भगतिन, म सें माय,
नानी हमरी सुद्धि गाय।
य सें युक्ति, र सें रीत,
नानी खैथौं गावै गीत।
ल सें लट्ठी, व सें वाह,
नानी रों चाय्ये पर चाह।
स सें सुइया, ह सें होंर,
नानी रहतें केकरों डोंर।

लोरी

१

नूनू नीन बुलावै छै,
नीन कैन्हें नी आवै छै।
नीन बसै छै तिब्बत-चीन,
कल्हें-कल्हें आवें नीन!
पर्वत-जंगल लाँघी कें,
पोखर-नद्दी-बांधी कें,
घोड़ी चढ़लें आव गे नीन,
गिनती गिनलें इक-दू-तीन!
रस्ता में नै रुकियैं तोंय,
बेंग बुलैतौ टर्रम-टोंय।
उड़लों ऐतौ लाल परी,
रौकतौ तोरा घुरी-घुरी;
चंदा देतौ झूलै लें,
ई रस्ता कें भूलै लें;
पर रस्ता ई भूलियैं नै,
चंदा पर तोंय झूलियैं नै,
झब-झब मलकी ऐलै नीन,
तुतरू-ढोल बजैतें-बीन।
नीन सुतै छै हौदी में,
नूनू माय रों गोदी में।

२

नूनू नींद बुलावै छै,
नींद कैन्हें नी आवै छै!
आव गे नींद दुलारी आव!
नूनू केरों प्यारी आव!
काजर आ कजरौटी लै,
मिसरी, मक्खन, रोटी लै,
चाँद खिलौना लेनें आव,
लाल परी बोलैनें आव!
छम-छम नाँचतै लाल परी,
नुनूओ नाँचतै हाथ धरी।
आँख मौलै छै दूनू के,
नींदियो आरू नूनू के।
नींदिया सुतलै बारी में,
लाल परी गोरथारी में।
चंदा सुतलै हौदी में,
नूनू सुतलै गोदी में।

जंगल-जान—जहान

पहिलों दृश्य

मंच पर कटलों-कटलों गाछों रों दृश्य । मंच के बीचोबीच दू मोटों रं गाछ। एक दिशा सें पाँच आदमी मंच पर आवै छै । दू के हाथों में बन्दूक छै आरो तीन रों हाथों में कुल्हाड़ी । पाँचों केरों मुँह-माथों कपड़ा सें ढकलों छै । कुछु देर लेली पाँचो हिन्नें-हुन्नें बड़ी सावधानी सें घूरै छै आरो फेनू कुल्हाड़ीवाला आदमी गाछ कें काटना शुरू करी दै छै। पेड़ काटै के आवाज गूंजै छै । बन्दूकवाला दोनों आदमी बन्दूक तानलें दुनूं दिशा में हिन्नें-हुन्नें ताकतें घूमें लागै छै । गाछ कटी कें गिरै छै आरो एकरे साथें पर्दा गिरै छै ।

दुसरों दृश्य

(एकठो कटलों पेड़ पर बैठलों सिंह कुछू देर मौन रहला के बाद दोनों दिश मुँह करी कें हाँक लगावै छै।)

सिंह : छोटू-मोटू अल्लर-मल्लर,
डिग्गा-डिग्गी, झाँझर-मानर,
जे जन्नें छैं, जल्दी आव;
हाथी, भालू, हरिन, बिलाव,
बानर, भैंसा, बाघ, सियार,
नया विपत छौ, नया कचार!
कटलों जाय छौ जंगल-गाछ,
मक्खन की? मिलतौ नै छाछ।
बालू पर खाड़ें छौ नाव
जे जन्नें छैं, जल्दी आव!

(मंच पर चारो दिसों सें बाघ, भालू, हाथी, भैंस, सूअर आरनी रों प्रवेश आरो एक-एक करी कें सिंह के नगीच आवी कें बैठी जाय छै । गाछ-बिरिछ दिस देखतें सिंह फेनू हाँक लगावै छै ।)

सिंह : कौआ, मैना, सुग्गा, गिद्ध,
ध्यान जगाय में बगुला सिद्ध,
कोयल, पपीहा, मैना, मोर!
ढुकलों छौ जंगल में चोर।
भारी पड़तौ जिनगी भाव,
जे जन्नें छैं, जल्दी आव।

(मंच रों पिछुलका भागों पर खड़ा गाछ सिनी पर मैना, मोर, बगुला, चील आरनी उड़ी-उड़ी आवी कें बैठें लागै छै । (ई काम गाछों में लोहा आरो चिड़िया सिनी के टांगों में चुम्बक बान्ही कें लेलों जावें सकै छें।) सिंह कें छोड़ी जेकरा जे कहना होय छै, आपनों बात खाड़ों होय्ये कें कहै छै ।)

भैंसा : की बातों लें छिकै बुलाहट?
कोंन विपत्ति के छै आहट?
की जंगल में देखलौ कोय;
राखी देवै ओकरा धोय।
कैहिनें तोरों मोंन मलीन?
जल्दी बोलों—एक, दू, तीन।

सिंह : संकट में छै पशु-समाज,
जंगल पर गिरलों छै गाज।
रोज कटै छै गाछ-बिरीछ,
आरो हम्में कैहिनों नीच।
देखौं टुक-टुक जान बचाय,
कैहिनों हम्में घोंर कसाय!
पर असकल्ले करियै की,
भिड़ी कें वै सें मरियै की !

(सिंह गालों पर हाथ धरी गुमसुम बैठी जाय छै । गाछों पर चिड़िया सिनी के कुछ देर लेली काफी शोरगुल होय छै, फेनू हठाते बन्द (ई काम टैपरिकार्डर में बंद चिड़ियां सिनी रों रं-रं के आवाज सें करलों जैतै) ।

तबें एक ओर बैठलों सूअर खाड़ों होय कें बोलै छै।)

सूअर : जंगल पर जों होय छै घात,
यैमें भिड़ै के की छै बात!
जंगल जानौ, जानौ गाछ,
हमरा नै पीनौ छै छाछ;
बसवै जाय कें दुसरों वोंन,
गड़लों छै यैठां की धोंन ?

हाथी : सूअर तोहें सूअरे रहले,
बिन बुद्धि के टुअरे रहले,
वनकट्टां कोय छोड़तौ वोंन,
छोड़ी रहलों छै वें कोंन?
सब जंगल तें कटले जाय,
बस्ती वैमें बसले जाय;
बस्ती में घूमै छै लोग,
वन कें लागलै उजड़ा रोग।
सोचैं, रहवे कन्नें जाय?
ठामे ठाड़ों हँसौ कसाय!

भालू : जंगल छेकै हमरों घोंर,
घोंर बिना तें डोंरे-डोंर।
छाती फाटै, व्याकुल जी,
लेकिन हम्में करियै की !

खरगोश : कैहिनें चिन्तित तोरा सब,
लोग यहाँ छै अरब-खरब;
जाय छियौं; करवै फरियाद,
जंगल-जन्तू जिन्दाबाद!

उल्लू : अकिल तोरा कुछ ऐतौ नै,
भोलोपन भी जैतौ नै,
जे जगल कें काटै छै;
काटतें दिल नै फाटै छै;
जौनें देतें ऐथैं दुख;
वें मनुक्ख की देतै सुख?
अपन्है में कुछ करों उपाय;
तभिये भागतौं काठ कसाय।

(पीछू के एक गाछ अपनों जग्घा पर थोड़ों हिलै छै आरो दायाँ-बायाँ दिशा में आपनों दू डाली कें हिलाय-हिलाय बोलै छै।)

वृक्ष : अभी मनुक्खों कें नै चेत,
लागतै दुर्दिन के जब बेंत;
छाँव नै मिलतै कोसो-कोस,
हवौ शुद्ध नै—ऐतै होश!
पर दुसरा पर कथी के आस,
जों उपाय छै अपनों पास।
चाहौ—भागें अगर कसाय,
सबसें अच्छा यहें उपाय,
वनकट्टा जेहिनें कें आवें,
सब चिड़ियाँ मिली शोर मचावें;
झपटै वै पर बाघ-सियार,
फँसतै अपने आप शिकार।

(बैठलों बन्दर नाँचतें उठै छै, फेनू रुकी कें बोलै छै।)

बन्दर : एकदम-एकदम-एकदम ठीक,
मिलतै वनकट्टा कें सीख।
नोची-भोंमरी हम्में लेवै,
जिनगी भर के सीख सिखेवै ।

(गाछी पर बैठलों सुग्गा पाँख डोलैतें बोलै छै)

सुग्गा : कल्हो ऐतै भोरे-भोर,
करिये उठवौं हम्में शोर।
सुनथैं दौड़ियों तोरा सब,
मलकी कें नै—झब,झब,झब!
इखनी जे कुछ भी कहलौं
बात यही पक्की रहलौं ।

(सिंह दोनों हाथ उठैतें खाड़ों होय बोलै छै।)

सिंह : राय यही हमरौ स्वीकार,
देखलौं हम्में करी विचार;
अपनों किस्मत अपनों हाथ,
कौनें दै छै केकरों साथ;
मिल्लत में ही ताकत छै,
नै तें सबठा आफत छै।
संघे सें सब डरै यहाँ,
एकरे बिन सब मरै यहाँ।
मिली-जुली कें भिड़ना छै,
यम के आगू लड़ना छै।
साफ-साफ जानों मतलब,
जंगल कटै तें हमरौ सब।
याद करों कुछ सालों कें,
तबकी-अबकी हालों कें—
कत्तें बड़ों रहै संसार,
कहाँ गेलै हमरों परिवार?
मारलों गेलै जंगल में,
कोय शहरों के दंगल में;
मिलवां मिलै नै आय बटेर,
कल ई लागथौं हमरौ फेर।

आय सें आबें जंगल में,
हानि-लाभ के दंगल में,
साथे-साथ ही रहना छै,
ज्यादा कुछ नै कहना छै।
अगर बनैलों राखों रीत,
निश्चित होतै हमरों जीत!

(सब पशु-पक्षी आपनों टांग आरो डैना ऊपर उठाय-उठाय कें सिंह के बातों के समर्थन करै छै।)

तेसरों दृश्य

(मंच के पीछू दू-चार कटलों वृक्ष दिखावै छै। बायाँ-बायाँ भी धारा-पाती गाछे छै। मंच रों बीच एक गाछ छै। देखत्हैं-देखत्हैं मंचों पर पाँच ठो आदमी के घड़धड़ैलों प्रवेश होय छै, जे मंच पर ऐत्हैं बड़ी सावधानी रों साथ चारो दिस देखना शुरू करै छै। पाँचो आदमी के मुँह आरो माथों कारों कपड़ा सें ढँकलों छै। दू आदमी के हाथों में बन्दूक छै, जे मंच के दोनों दिश पहरेदार के रूपों में तैनात होय जाय छै। बाकी तीन के हाथों में कुल्हाड़ी छै, जे मंच के बीचोबीच खाड़ों गाछ कें काटै के गरज सें सब्भे ओर में खाड़ों होय जाय छै। वैमें एक जेन्हैं कुल्हाड़ी चलाय के मुद्रा में आवै छै कि गाछों पर सुग्गा टें-टें करना शुरू करी दै छै, जेकरों साथ्हैं ढेर किस्म के चिड़िया रों आवाजो उठें लागै छै। लकड़कट्टा सिनी हतप्रभ होय कें आकाशों दिस ताकै छै। तभिये एक कोना में गुर्रैतें होतें बाघ दिखावै छै। बाघों के देखत्हैं लकड़कट्टा साथ्हैं बन्दूक वालाहौ थरथरावें लागै छै। देखत्हैं-देखत्हैं आरो-आरो दिशा सें भालू, हाथी, कुत्ता, सियार आरनी के आवाज गनगनावें लागै छै। पाँचो आदमी वहाँ सें भागै के फिराकों में होय जाय छै कि तभिये बन्दर, सियार, कुत्ता वहाँ आवी कें वै सिनी कें नोंचवों-खखोरवों शुरू करी दै छै। मंच के बीचू में खाड़ों गाछो अपनों डाली सें लकड़कट्टा सिनी कें दू-चार झाँटों दै छै। कुछुवे क्षणों में अपनों-अपनों टाँग उठैनें दुनू दिसों सें हाथी आरो भालू आवी कें वहाँ खाड़ों होय छै, जे देखत्हैं पाँचो बन्दूक आरो कुल्हाड़ी वांही फेंकी

कान पकड़लें एक-दूसरा सें टकरैतें दर्शकों दिस कूदी कें भागी जाय छै। पाँचो के भागत्हैं वहें सब प्राणी मंचों पर जौरों होय जाय छै आरो आगू के अपनों दोनों टाँग-हाथ उठैनें नाँचै-गावें लागै छै। गाछी सिनी पर बैठलों चिड़ियो सिनी डैना उठैनें शोर मचावें लागै छै।)

(पर्दा के गिरवों)

एक छड़ी पर अण्डा नाचै

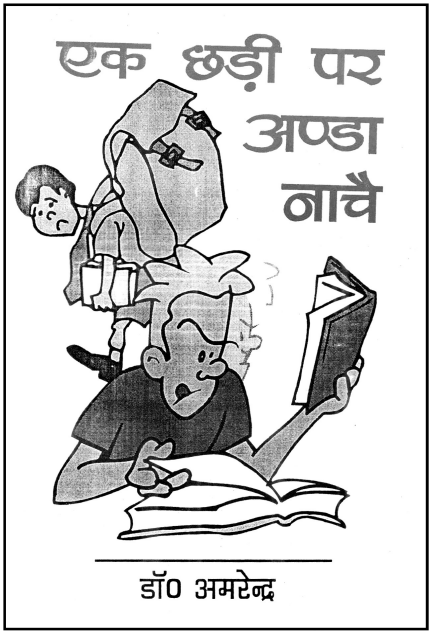

प्रथम प्रकाशन
ई. २००५

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

नूनू बाबू सिनी सें

अरे बुतरुआ पिहनें चश्मा,
होय वाला छौ नया करिश्मा!
जे नै चाहै पढ़ै-लिखै लें,
तहियो ऊँचे-ऊँच चढ़ै लें,
कोय मायने में ज्ञान नै कम,
पन्नी रँ बुद्धि चमचम,
ओकरों लें छै अवसर चानी,
है ले एक सौ एक पिहानी!
अरे बुतरुआ इन्टु-पिन्टु,
आनलें छियौ नया निघन्टु,
घोकें, दुसरौ कें घोकबाव,
अबकी नै छोड़ना छै दाव।
तहूँ बहावें ज्ञान रों बोहों,
पंडित-ज्ञानी मानतौ लोहों।

—अमरेन्द्र

१

सूँढ़ गणेशों के जे लागै,
कभी गणेशों केरों पेट,
ओकरों वास्तें बात बरोबर
की छत-छप्पर, धरती-हेट ।

—कद्दू

२

एक गणेश जी हेनों देखलां
सूँढ़ कमर सें लटकै छै;
भरी-भरी लड्डू की मिलतै
एक चौंर लें भटकै छै।

—मूसों

३

माथा पर छै मुकुट बिराजै,
मुँह के नीचें छोटका सूँढ़,
बगुलौ सें जादा बगबग छै,
जेकरों बोली तिलकुट-गुड़।

—शंख

४

कारों बदरा धरती पर,
देखी दुश्मन थर, थर, थर,
घूमै सबके घरे घर,
मारों तें छिलकै ऊपर ।

—छाता

५

बेटा दुबरों, कोठी बाप,
ब्रह्मा के देलों छै शाप,
ओंन जरो नै कभियो खाय,
पानी पीयै ओछरी जाय ।

—गिलास-लोटा

६

एक ठो हेनों छाता छै
तनलों रहै जे सालो भर,
छाता में सौ भुरकी झलकै,
कपड़ा उड़ै छै फर-फर-फर;
जोंर-जनानी मर-मरदाना
गैया-बकरी ओकरे तर।
—झबरों गाछ

७

एक छड़ी पर अण्डा नाचै
जैमें चिड़ियाँ आवै-जावै;
अण्डे गिरै नै छड़िये डोलै
कत्तो कोय्यो जोर लगावै ।
—गाछ

८

भरी मुँहों में ऐला-गोटी
जतना बोली तित्तों छै;
मुँह लटकैनें झुलतें रहतौं
सब्भे बल पर जीत्तों छै ।
—करेला

९

एकठो बूढ़ों हेनो भी छै
नाक, कान, जी, कुछुवो नै;
भरी मुँहों पर दाँते देखों
बोलें; फेरू पूछुवौ नै ।
—भुट्टा

१०

लाल पटोरी पिन्ही डायन
जखनी जेकरा चाहै खाय,
खाय वक्ती नै पानी पीयै
पीयै तें ऊ मरिये जाय ।

—आगिन

११

अजगर-अजगर मिली-जुली
कहीं सटी कें कहीं खुली,
कोसो चलै, नै मानै छेक,
टरक दबैलौं मरै नै एक ।

—सड़क

१२

देह छुवै, देह छुवै नै दै।
के छेकी हेनी, के छेकी है ?

—हवा

१३

गावै खुब्बे, हिलै नै ठोर,
कानै छै पर गिरै नै लोर,
गला दबैवौ, कुछ नै बोलतौं,
कान अमेठवौ, हाँसतै रहतौं।

—रेडियो

१४

एक चौंर एक बित्ता के,
भीतर फोंकी, ऊपर ठोस;
फूकी अगर उड़ावोॅ जों तोंय,
फोंकी गूंजै भर-भर कोस ।

—शंख

१५

बेलुन हेनों फूलै-पचकै,
तार जकां जे कभी नै लचकै;
पानी छोड़ी गरमी पीयै;
चमगादड़ रं जिनगी जीयै ।

—छाता

१६

खड़ा शीत में खाड़े रहै छै
सौंसे मुँह, ढाँकी कें गाँती;
गाँती हटें तें खलखल हाँसै,
दाँत देखी कें लागै दाँती।

—भुट्टा

१७

हेनों छै ई घर के धुनियाँ
मूँ में सूतों, कमर में सुइया,
गेंदरा की यैं सीतै धुनियाँ,
कपड़ा चीरै, छीटै रुइया ।

—मूसों

१८

पाँच भाय में सबसें छोटों
जत्तें नाँटों ओत्तै मोटों;
है नै खाली एक्के छोटका
सब्भैं बोली बुलावै—मोटका।

—अंगूठा

१९

एक किला पर पाँच सिपाही,
पाँचो-पाँच रकम के छै;
जे बूझै कि मेल नै यैमें;
ऊ नै कोय करम के छै ।

—पाँचो अंगुली

२०

धरती पर हेनों एक बदरा
जैसें उजरों पानी बरसै;
सबटा पानी नरिये पीयै,
खेत-खेत पानी लें तरसै ।

—गाय

२१

देखों जबें किताबे पर छै,
कपड़ो के ओत्है शौकीन;
तहियो एक नै अक्षर जानै,
नाँगटै घूमै भारत-चीन ।

—मूसों

२२

पीढ़ा पर बैठली इक बुढ़िया
घुमी-घुमी गावी कें खाय;
नाकें बाटें जे कुछ निगलै,
मुँह दै कें सब उगली जाय।

—चक्की

२३

एक राकस के मुँह अजूबा,
आँखे सीधी में मुँह-नाक;
गल्ला बाटें खैलों उगलै,
निगलै वक्ती पारै हाँक।

—चक्की

२४

दू नालों के इक बन्दूक,
बन्दूक लागै छै सन्दूक;
एक साथ गोलियै नै चार,
छोड़वैय्या के गोड़ो पार।

—पैजामा

२५

पानी पर एक राकस दौड़ै
मुँह में लैकें लोग पचीस;
मुँह में जाय लें मार करै सब,
मुँह में लैकें माँगै फीस।

—नाव

२६

उड़तें कोंन चिड़ैयाँ के ई
कटी गेलों छै डैनों-पाँख?
लोर-चुआवै ढर-ढर, ढर-ढर
फोटो लेलें घूमै आँख ।

—नाव

२७

के जानै छैं ऊ नावों कें
जे कि पानी में नै तैरै;
पानी ही जेकरा में तैरै
खेवै, गोरी गुन-भावों कें ।

—दीया

२८

हेनों इक सूरज छै मस्त,
रात्है रोशन, दिन में अस्त ।

—दीया

२९

आँख-कान नै, खाली जी छै,
जी सें जेकरा चाहै चाटै;
कुआँ-पोखरी डरैं नै जाय छै,
मोंन; नहैवों, सुनिये फाटै ।

—आग

३०

अजब कहानी इक नारी के,
आँख क्रोध सें रत-रत लाल;
चूल तें एकदम हिन्दुस्तानी,
ईंगलिस्तानी गोरों गाल।

—आग

३१

सौ सैनिक-शव, इक ताबूत;
जली कें सबटा राख-भभूत ।

—दियासलाई

३२

सौ संबंधी मरलों-भतलों
इक कुइयाँ में पैलों गेलै;
एकेक करी कें खींची-खींची
बाहर करी जलैलों गेलै ।

—दियासलाई

३३

चिकनों-चिकनों देह गठीला,
हेनों रूपवती ऊ लीला;
अपना दिस केकरा नै घींचै
देखवैय्या के फोटो खीचै ।

—आईना

३४

बोलै कुछु नै बड्डी घाय,
बहुरूपिया रं भेष बनाय;
जेकरा देखै होने लागै,
घोर अन्हरिया देखी भागै ।

—आईना

३५

एक जनानी कें भटियैलें
हवा उड़ैलें चल्लों जाय;
उड़ी जनानी गेलै हिमालय
घुमी-घुमी कें लोर बहाय ।

—बदरा

३६

अभी-अभी ई भालू छेलै,
इखनी हाथी लागै छै;
चाबुक खैथैं कानें लागलै
लोर बहैतें भागै छै ।

—बदरा

३७

भरी मुँहों पर बारह टिकुली,
सब्भे कें ऊ खूब सोहाय;
ठोड़ी, गाल, कपारों पर जे
दोनों आँख नचैलों जाय ।

—घड़ी

३८

एक घरों में बारह बच्चा,
माय-बाप सब साथे छै;
सब बच्चा हरदम्में रुसलों
गोड़ डुलाय नै माथे छै;
माय-बाप घूमी समझावै
कुछ हेनों ही बाते छै ।

—घड़ी

३९

जादू छड़ी घुमैथैं घन-घन
अंगुठा पर नाँचै इक चक्का;
जे बतलैतै ओकरा लड्डू,
नै बतलैतै ओकरा मुक्का ।

—चाक

४०

माँटी के थाली पर माँटी,
जैसें निकलै लोटा-बाटी ।

—चाक

४१

भरी देह पर माँस कहीं नै,
बाहर हड्डी, भीतर खून;
पढ़ै में ओकरों माथों भारी,
लिखै के धुन बस, कत्तो धून।

—कलम

४२

काठों के देह-गोड़,
लोहों के नाक;
जीहा छै आरी के
तालू दू फाँक ।

—कलम

४३

आँख, नाक, जी, सब्भे कुछ छै,
हाड़ो देह में, खूनो ठो,
अलग करै, जोड़ी भी लै छै
धड़ आ मूड़ी दोनों ठो,
जन्मे सें बोंगों छै हेन्हों;
लोहों,काठ, शिला छै जेहनों ।

—कलम

४४

अजब विधाता केरोॅ खेल,
खाली मुँह-कानोॅ के मेल;
दाल-भात कुछुवो नै खाय छै,
तरकारी सब निगली जाय छै ।

—लोहिया

४५

धरती पर पानी, आकाशोॅ में आग,
गरजै छै मेघो भी गड़-गड़ के राग।

—हुक्का

४६

नै देखलेॅ होब्हैं तोंय
हेनोॅ मटकुय्याँ;
पानी के बदला मेॅ
आग आरो धुय्याँ ।

—चीलम

४७

दूधोॅ सेॅ दू चम्मच भरलोॅ,
दूध में तैरै एक-एक मक्खी;
मिली उड़ावै सौ-सौ पंखा,
तहियो उड़ै नै, गेलै थक्की।

—आँख आरो पिपनी

४८

दू नौका में एक-एक तिरिया,
नाव चलावै सालौ सेॅ;
नाव गढ़ैया में फँसलोॅ छै,
निकलै नै, निकाल्हौ सेॅ।

—आँख

४९

सिर पर टोकरी, मुँह में खन्ती,
गहना सें लागै कुलवन्ती;
पाट-पटोरी सब कीमती छै,
गाछ खोदै छै, मतछिमती छै।

—कठखोद्दी

५०

एक डायन के दाँत पचास,
जेकरों सखी सुखैलों काठ;
डायन हेनों कि निगली गेलै
सखिये केरों बेटा साठ।

—आरी

५१

घड़ियाले रं चोखों दाँत,
पानी पर जे बुलै नै जाय,
जंगल-जंगल खाली घूमै,
जीव के बदला गाछे खाय ।

—आरी

५२

तीर-धनुष सें कसलों-बंधलों
फहरै केन्हों खड़ा रूमाल,
ऊपर-नीचें पिछुआवै छै
जात्है कें, जाते छै काल।

—गुड्डी

५३

एक चिड़ैयाँ हेनों कोंन
जेकरों माँस नै खैलों जाय,
जेकरों खोता मिलै कहीं नै,
गाछ नै बैठै, उड़ै उघाय ।

—गुड्डी

५४

भगजोगनी सें भौरा जन्मै,
कोय्यो नै यै पर पतियावै;
पंख जेन्है भौरा सें निकलै,
उड़ी-मुड़ी आँखें पर आवै।

—काजल

५५

सोनों के देह, मूड़ी कारों,
मौगी-मरद सभै कें प्यारों,
हौल्कों जेना हवै रँ ऊ
लीपै केरों मनाही छै।
माय कहै ई विपदाहारी,
बच्चा लें ई आफत भारी ।

—काजल

५६

अंगुरी में अंगुठी रं बैठै
आरी केरों सहेली,
अमरेन्दर भी नै बूझै छै
हेनों छिकै पहेली ।

—कैंची

५७

पीछू कटै तें कौआ बोलै,
आगू कटै तें बगरो;
बैठै तें हाथे पर बैठै
मिलै घरे-घर सगरो ।

—कैंची

५८

हेनों पेट मुटैलों छै कि
गोड़ दिखै नै हाथ दिखै,
खाय लें वैद्य मना करलें छै,
मुँह बैलें दिन-रात दिखै,
हेनों आबें जिनगी जीयै,
पेट भरी बस पानी पीयै।

—घैलों

५९

पीछू कटै तें दारू पीयै,
आगू कटै बटोही;
तीन वर्ण के; नर कें मोहै
चिड़ियाँ लें निरमोही ।

—सुराही

६०

बान्हलों राखै रातो पगड़ी,
गल्ला में टाई कें जकड़ी;
भरी रात तक सुतले रहतौं
बन्द करी कें आपनों द्वार;
भोरे उठी कें पहरा देथौं
हेनों तें ऊ पहरेदार ।

—मुर्गा

६१

सुतला कें दै हाँक जगावै;
असकल्लो में हाँसै-गावै,
बात सुनै सब, बात कहै सब,
सब्भे कें एकरा सें मतलब।

—टेलिफोन

६२

लम्बा मूँ के एक छवारिक
टीक पचासो हाथों के;
मुँह पर रखों तें कान पकड़तौं,
झूठ नै एक्को बातों के।

—टेलीफोन

६३

दू गोतिया के बत्तीस भाय,
खइयो वक्ती करै लड़ाय;
कत्तो लड़ै, कहीं नै जाय
साथैं खाय, बरोबर खाय ।

—दाँत

६४

एक्के कोठरी, एक्के द्वार,
सुतली छै इक रानी जैमें;
दरवाजा के भीतर घेरी
पहरोदार खड़ा छै वैमें।

—जीभ आरो दाँत

६५

शीशमहल में राजकुमारी
जल सें ऊपर हाँसै छै,
कारी बुढ़िया आवी रोजे
राजकुमारी फाँसै छै ।

—लालटेन

६६

एक अजूबा पहरेदार
खाना खाय नै टपकै लार,
दाँत बिना ही डोलै-झूमै,
दाँत लेलें घरवैया घूमै ।

—ताला-चाभी

६७

देह भले छै ओकरों खोल,
बिन चमड़ा के जेन्हों ढोल;
राजा-नौकर कुछ नै जानै,
सोनों-लोहों कुछ नै मानै;
ओकरा तें बस एक्के हूब,
औंगरी पकड़ी झूलौं खूब ।

—अंगुठी

६८

चक्कै ही चक्का कें खाय,
जाय के बदला दिन-दिन आय।

—दिनाय

६९

एक्के मुँहे पचासो दाँत,
नै कहीं हड्डी, नै कहीं आँत;
यहू हुऐ नै, खाय या चाखै
खाली चिड़ियाँ मुँह में राखै ।

—पिंजरा

७०

एक पोखर में सौ-सौ कुइयाँ,
मिसरी रं कुइयाँ रों पानी;
ऊ कुइयाँ रों एक जोगवारिन,
सब जोगवारिन के एक रानी;
पोखर के नै ठौर-ठिकान,
केकरौ-केकरौ एकरों ज्ञान ।

—मधुमक्खी-छत्ता

७१

पानी जेकरों कैलों-कैलों,
सौ-सौ मुँहों के एक्के घैलों।

—मधुमक्खी-छत्ता

७२

दू बित्ता में गर्दन आवै,
पाँजों भरी में पेट;
गद्दी पर सें कभी नै उतरै
भरलो पेटें हेट ।

—घैलौं

७३

पोता बाबू-गोद नुकैलै
सब नजरी सें डरी-डरी,
चाँदी के बाटी में पोता
दूध पियै छै भरी-भरी ।

—नारियल

७४

पर्वत ऊपर घास जमैलौं,
पर्वत तर संगमरमर;
संगमरमर के नीचें कुइयाँ
जै नै बुझै, ऊ बानर ।

—नारियल

७५

चारो दिस जंगल घनघोर
जैमें बैठलौं कारों चोर;
चोर हेनो; नै लूटै-पाटै,
बैठलौं-बैठलौं चुट्टी काटै ।

—ढीलौं

७६

दोनो कान अमैठै जेन्हैं,
दुनियाँ साफ दिखावै तेन्हैं ।

—चश्मा

७७

कारों वन में कारों तिल,
जे बीया नै जेकरों बिल;
घूमै मौजों-मस्ती सें।
बची पुलिस के गश्ती सें
जों पकड़ैलों चोरी में
मारले जाय बरजोरी में।

—ढीलों

७८

गोड़-हाथ, देह-मुंडी नै छै
भले नै बोलै, ऊ बूलै छै ।

—जोंक

७९

बित्ता भर के सनसनाठी,
कुकड़ै तें औंगरी भर काठी।

—जोंक

८०

दू गोड़ों के बीच्हौं गोड़;
सौसें देह में बीसो जोड़;
दू हाथो छै, मुड़िये गैब;
आपने चलै नै, यहें ठो ऐब।

—साइकिल

८१

सब गामों के, सब देशों के
हाल सुनावै आवै चिड़ियाँ;
डैना—लाल, हरा, पीला छै,
कोंन राग नै गावै चिड़ियाँ;
दिन भर खुब्बे शोर मचाय,
दिन आवै, साँझै मरी जाय।

—अखबार

८२

बिना डोलैलें जरो नै डोलै,
दुनिया भर के बोली बोलै;
कान मोचारों तें ठिठियैतौं,
कानतौं, बोलतौं, गाना गैतौं ।

—रेडियो

८३

दूधे रं उजरों देह,
कारों मन कौआ,
गर्दन रं टाँग दिखै,
पेटे अबढौआ ।

—बगुला

८४

चारे अक्षर गजब करै,
पीछू तीन कटै तें मूँ छै;
आगू दू कटथैं सुख-चैन;
आगू एक कटै, तें सब छै,
पीछू दू कटै, तें मूसों ।
वैं की बुझतै, जे खाय भूसों ।

—मुसकल

८५

गल्ला में कंठी छै,
कंठों में राम;
साधू रं चोला छै
तहियो बदनाम ।

—सुग्गा

८६

उजरों रहै तें सब्भे केरों
उजरों दाँत उमैठै,
लाल हुऐ तें लाल ठोर पर
सबके जाय कें बैठै ।

—आम

८७

उजरों रहै तें कचकच-खपखप,
नै कस्सों, नै खट्टा ऊ;
लाल हुऐ तें आम बनै छै,
मोती खाय कें पट्ठा ऊ ।

—पपीता

८८

चमड़ी भीतर कसलों माँस,
माँसों पीछू हड्डी;
हड्डी बादे फेनू माँसे
ओकरों बाद फिसड्डी ।

—आम

८९

हरमोनियम के अपनों भाय
पर गावै में घोर लजाय;
दाँत छियालिस, चौव्वौ दस,
अक्षर सबटा घोघलों—बस ।

—टाईपराइटर

९०

खुद्दे अन्हरों, आँख कहावै,
दूसरा कें दुनियाँ दिखलावै;
वैसें बड़ों नै कोय शैतान
नाको पकड़ै, पकड़ै कान ।

—चश्मा

९१

दिन भर सूतै फोंफी मारी,
जगै रात भर वन-बहियार;
चोर देखी कें बिल में घूसै,
हेनों तें ऊ पहरेदार।

—उल्लू

९२

बिन छिलके के मटरों दाना
सालो साल छँटै नै छै;
दूसरा कें वें काटी राखै
आपने मतर कटै नै छै ।

—दाँत

९३

देहों में काँटों छै,
पेटों में आँख;
माँस बड़ी मिट्ठों छै
छीलों जों पाँख ।

—लीची

९४

खुल्ला मूँ सें झाँकै नाक,
सौंसे गाँव में पारै हाँक;
माथों पीछू बान्हलों खोपों,
चूल नै छै कि तेल कें चोपों ।

—लाउडस्पीकर

९५

वन-वन दर-दर खाली भटकै;
दूसरा के हिस्सा कें झटकै;
घर ढुकथैं सबकें धमकावै;
ऊ नर के बाबा कहलावै!
आबें ओकरों नाम बताव,
नामे में छिपलों छै भाव ।

—बानर (बा-नर)

९६

दूए धौनों, दूए हाथो
जन्मे सें पर टेंगड़ी चार;
कमरो, पेटो, पीठियो ठो छै
पर देखों नी मूड़िये पार ।

—कुर्सी

९७

एक कमर सें सटलों-सटलों
दू मूड़ी, दू हाथ,
बच्चां-खच्चां कुछ नै बूझै
बन्दर बूझै बात।

—डमरू

९८

मुड़िये ठो नीचें छै, गोड़े ठो ऊपर,
चुटकी के तालों पर नाँचै छै सर-सर;
नै तें ऊ नरिये ही, नै तें ऊ भूत;
निगलै छै रूई कें उगलै छै सूत।

—तकली

९९

स्त्रीलिंग होय धान कें कूटै,
पुलिंग होय धोती पर टूटै;
अमरेन्दर के बूझ पिहानी
नै तें धौल जमैतौ नानी ।

—ढेका (ढेकी)

१००

सौंसे ठो देह, मुँह कारों कजरोटी,
माथा में चूल, नै ढेका में चोटी।

—कौआ

१०१

गरमी देखी झरकी ओकरा,
रात्हौं-दिन्हौं खूब नहाय;
ओकरौ पर पंखा डोलाबै,
आदमी देखै, जाय विलाय;
बोल, छिकै ऊ कोंन परी?
जों खाना छौ झोलबरी ।

—मछली

तुक्तक मुक्तक

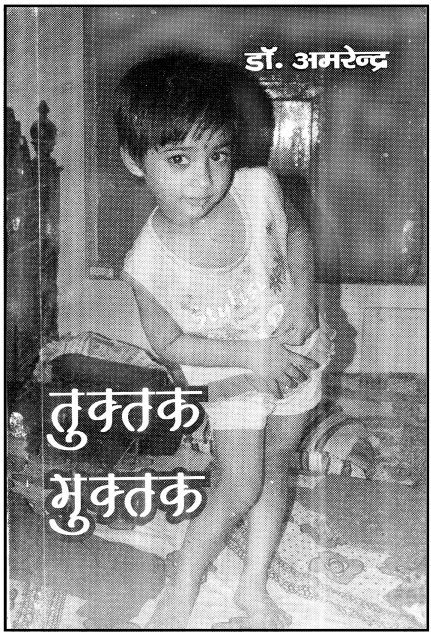

प्रथम प्रकाशन
ई. २००८

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

नूनू सिनी रे,

तोहरा सिनी सोचबैं कि आखिर चार-चार ठो किताब—ढोल बजै छै ढम्मक ढम, बुतरू के तुतरू, बाजै बीन बजावै तीन, एक छड़ी पर अण्डा नाँचै, के बाद ई पाँचमों किताब लिखै के की मानें?

मानें छै। अभी तांय जे भी कविता सिनी लिखलियै, सबटा छोॅ सालों सें पनरों सालों के बच्चा सिनी कें ध्यानों में राखी कें। तबें एकरा सें नीचें उमरी के बच्चा सिनी के की होतियै। वैं तें बड़का सिनी के कविता नहिये नी पढ़तियै। बड़का सिनी भले छोटका सिनी के पढ़ी-पढ़ी मजा उठाय लें।

होना कें तें पहिलको कविता सिनी में दू साल सें पाँच-छोॅ साल के बच्चो सिनी लें शिशु गीत छै, तहियो की मनों में भेलै कि एकटा गीत-संग्रह शिशुओ सिनी लें होना चाही। होना कें शिशुओ सिनी कभी-कभी बड़का बच्चा के कान काटै छै। यही लें शिशुगीत फलतुआ गीत नाँखी लिखबों फालतू बात छेकै।

ठीक छै कि शिशु सिनी कें हेनों बालगीत नै चाही, जे हेनों शब्द सें भरलों रहें, जेकरों अरथ शिशु समझै नै सकें, आरो नै तें बड़का-बड़का पंक्ति के गीत रहें; होन्है कें हेनों कविता नै रहें कि वैमें तुक-ताक ढेर के नै रहें। दूर-दूर तुक रहें, तें वहौ भी ठीक नै—सटले-सटले रहें, जे कान में बुझैतें रहें। सबसें बड़ों बात कि हेनों कोय बात नै रहें, जेकरा समझै में शिशु अकबकाय जाय। शिशुगीत तें हेने हुएँ कि हिन्नें वें पढ़ें आरो हिन्नें दिमागों में फोटू तैयार। तब्है नी होलै शिशुगीत।

हो नूनू सिनी, यहें सब बात सोची कें तोरा सिनी लें एक किताब बनैलें छियौं 'तुक्तक मुक्तक'। मतुर शिशुगीत खाली तुक्तके मुक्तक नै होय छै, बच्चौं आपनों दिमाग सें बहुत कुछ समझै छै, नै समझै छै, तें सहारा दै कें समझैलों जाय छै। लेकिन यहू भी वहा सीमा में कि शिशु कें पढ़ैबों हेनों नै लागै। शिशुगीत छेवे करै शिशु के मनोरंजन लें।

तें, लें मैना, सुग्गा सिनी, तोरों हाथों में छौं—तुक्तक मुक्तक।

तोरे

फूल काका

सिल-सिलोटी

सिल - सिलोटी,
अट्ठा गोटी।
कुट-कुट बोलै,
सुक्खा रोटी।
चार मनोँ के
एक्के कोठी।
आँख छेकौ कि
ई कजरौटी ?
नाना जी के
मोटका चोटी।

ओला

गिरलै ओला,
बम-बम भोला!
चार टिकोला,
बम-बम भोला!
भर-भर झोला,
बम-बम भोला!
खुश छै टोला,
बम-बम भोला!

बतासा

तड़बड़ ताशा,
चार बतासा,
खैतें गेलै
गस, गस, गस,
मुँह में जैथैं
भस, भस, भस।

झगड़ू-तगड़ू

जखनी झगड़ू-तगड़ू आवै,
केकरौ कुछुवो कहाँ सुहावै;
बात-बात में खट-खट-खट,
एक्के बात कें लै कें रट।
एकरों अलगे घुघुआ-घू,
मौका पैथें थप्पड़-थू;
टोला भर छै नाको दम,
झगड़ू-तगड़ू बम-बम-बम ।

करनी के फोंल

आलू कहै टमाटर सें
बैगन बोलै नै डर सें।
कद्दू खैलकै एक करेली,
थू-थू करै छै ओकरे लेली।
मिरचां खाय कें कानै सीम,
आँखी के फुललों छै डीम।
आबें समझै में आवै छै,
जी पकड़ी कें निसुआवै छै ।

पानी में आम

खूब झड़ैलियै सब आमों कें
लाल-पाकलों टुभुक-टुभुक,
धरती पर एक्को नै गिरलै
पानिये में सब चुभुक-चुभुक।

कोसी मैया

कोसी मैया खल-खल-खल,
सरंग फटै कि उमड़ै जल।
बस्ती जंगल खानलें जाय,
गुस्सैलों छै कोसी माय।
हेलवैया संग गुरुओ तंग
ओ, ना, मा, सी, कोसी धंग।

धुइयाँ के कुइयाँ

जे पीयै छै फुक-फुक धुइयाँ,
ओकरों नीचू बड़का कुइयाँ।
कुइयाँ में छै कहीं नै पानी,
जमराजें गेलों छै खानी।
मार भगाबें धुइयां कें,
भत्ती दैं ई कुइयाँ कें।

तखनी बुझिएं

लगे छड़क्का घोड़ा सरपट,
खैवैं धौल जों करवे खटपट!
दाँत नै धोवे कीड़ा फरतौ,
हिली-हिली कें टुपटुप गिरतौ ।

बड़की बात

कम्में बोलें, बक्कें नैं
एतनै चल कि थक्कें नैं
पेट पें जाँतों दरवे की ?
बेलुन फुटतौ, करवे की ।

पूस में कद्दू

बैशाखों के तिक्खों रौद,
सुखलै पोखर, सुखलै हौद।
आसिन-कातिक-अगहन-पूस,
गर्मी वास्तें ई सब फूस।
की बेचै लें लाय छै; जद्दू?
पूस भरी के खैतौ कद्दू ।

मोती दाँत

अच्छा-अच्छा जे छौ पोथी,
पढ़लें जो मूँ-गरदन गोती।
पगड़ी, रस्सी, चादर, ओढ़ना;
हेनों की? बस एक्के धोती?
दाँत नीमी सें धोवै छैं की
चमकै छौ जेहनों कि मोती ।

बात बूझों

पढ़ों-पढ़ावों बच्चा कें,
पाटों खाई-खच्चा कें;
जेकरों पढ़ै नै बच्चा छै,
ओकरा पर सौ गच्चा छै ।

बज्जड़ छींक

'क' निकलै छै कंठा सें;
सूतों जे रं अण्टा सें।
'प' निकलै छै ठोरों सें;
लोर आँखी के कोरों सें।
नाना छीकैं हेने हय्यो
भागी जाय छै पुसू बिलैयो ।

झोॅड़-झकासोॅ

मेघ मेघन्नोॅ कारोॅ दिन,
होय चल्लोॅ छै बारोॅ दिन;
झोॅड़ झकासोॅ झांय, झांय,झांय
डैनी के मरलोॅ छै सांय।

नाना

फुर-फुर, फुर-फुर उड़ै छै के?
हर बातोॅ पर कुढ़ै छै के?
सुतलौ पर गाबै छै गाना,
खर्राटा लै खुब्बे नाना।
नाना के खर्राटा केहनोॅ;
राती ठनका ठनकै जेहनोॅ।

घड़ी

टिक-टिक, टिक-टिक सुइया बोलै;
जे रं कि बिछतुइया बोलै;
जे रं कि दिल धड़कै धड़-धड़;
चिड़ियाँ के दू पखना फड़-फड़।
डाल घड़ी पर धुरदा-धूल,
नै तेॅ लै जैतौ इस्कूल।

गट्टा

डुमरामा चल, चलें भदरिया,
खूब डंगैलें लोटा-थरिया;
खाय लें मिलतौ अजब मिठाय,
नै ऊ लड्डू, नै ऊ लाय।
हाथों में सटलौ, तें लट्ठा,
मुँ में पड़थैं मिट्ठों गट्टा।

खड़ाम

खट-खट, खट-खट, खटर-खटर,
बोलथैं रहै छै पटर-पटर;
मार करै में सबसें आगू,
गोड़े तर सें रहै छै काबू।

बगरो

बगरो, खाय छैं खुद्दी तोंय,
कहाँ सें पैबैं बुद्धि तोंय?
फुदकी, कबदी, कुढ़लों जो,
आकि उड़ले-उड़लों जो,
बौंसी जाय गुड़झिलिया टान;
जे मूरी-घुँघनी के खान।
भले ही थक्की जैवै तोंय,
कोठी बनी कें ऐवै तोंय।

पेड़ा

पानी ठनकों बौंसी केरों,
देव रहै सब बान्ही जेरों;
पेड़ा—करुआ मोड़ के पेड़ा,
बांकी सब तें करै बखेड़ा।

घोड़ा रे

घोड़ा रे घोड़मारी चल,
खेत में आरी-बारी चल;
सड़के-सड़क किनारी चल,
सबठां पारा-पारी चल!

पैसा

पैसो फुदकै फुदुर-फुदुर,
खरची में जाय खुदुर खुदुर।
टन-टन बोलै; बाबा रं,
खपड़ी पर जों लाबा रं।
चार चौवन्नी—टाका एक,
ढेर भीखनपुर, बाँका एक ।

गुरुजी गेलौ

दीया, दीया, जरले जो!
फूल-फोंर तों फरले जो!
गाय, घास तों चरले जो!
दूध यहाँ सब धरले जो!
चक्की, दाना दरले जो,
कोठी-कोठा भरले जो!
गुरु जी आवौ, डरले जो,
गेलौ गुरु, ससरले जो!

समझें बात

नाके नै तें गंधे की !
बिना हाथ के धंधे की !
रोजे-रोज नहैलों कर,
मुँह महकै छौ, धोलों कर ।

किंछा

खाय पियै लें कभी नै तरसौं,
धान, चना, जौ, गेहूँ, सरसों।
नानी संगे रहौं, तें बरसौं,
धान, चना, जौ, गेहूँ, सरसों।
खेलें, गुरुजी ऐतौ परसों,
धान, चना, जौ, गेहूँ, सरसों ।

हल्ला-गुल्ला

पों-पों, खट-खट,
हल्ला - गुल्ला;
भला लोग के
मूँ पर कुल्ला।
दिन भर झन-झन,
भारी आफत;
इक दिन पुरतै
दुर्दिन, दुर्गत।
बहरों होतै,
पागल होतै,
आय नै होलै,
तें कल होतै ।

सींग

जेकरों सींग खड़ा—'खड़सिंगी',
जकरों सिंगे नै—ऊ 'मुड़ली'।
'धोंघरी', घुंघरैलों सींग वाली,
दूध पिठाली मोटों छाली।
मुट्ठी भर सींगवाली, 'मुठिया'
जे रं माथों पर दू चुटिया।
'चतरी', जेकरों तिरछों सींग,
धांगड़ नाँचै धिंग धिंग धींग ।
जेकरों लुरपुच सींग ऊ, 'मौनी'
सड़तौ दाँत जों खैबे खैनी ।

चिड़ियां

मैना - कौआ,
कनमा - पौआ।
सुग्गा - बगरो,
काँही, सगरो।
चील - कबूतर,
कड़ियल, थरथर।
कोयल कारी,
बड़ी दुलारी ।

दुनियां

दुनियां भले लगें ई चुक्का;
या नाना के कसलों मुक्का;
या नानी के गुड़गुड़ हुक्का;
आँख मुंदें तें सब्भे फुक्का ।

ऊ की छेकै

आम, साफड़ी, कटहल, बोंर,
ई सब छेकै केकरों घोंर?
केकरा सें ऊ सबकें डोंर?
केकरा देखी ओकरौ जोंर?
भागी जाय जे तोरे तोंर?
खलखल हाँसै फरलों फोंर ।

बेंग आरो मछली

'क' सें काजल, कौआ, काँटी,
'म' सें मूसों, मैना, माँटी।
जेना खाय छै बगरो, मैना,
ठीक होन्है कें तों सब, वैना।
खैलें जो सब बाँटी-बूटी,
आता-खीरा काटी-कूटी।
बेंग उछललों कुय्याँ में छै,
असकल्ले नै गोय्याँ में छै।
मछली उछलै पोखरी में,
जेना समाटे ओखरी में।

बिल्ली आरो मूसों

मूस, मुछुन्दर—घुर-घुर-घुर,
कोण्टे-कोण्टा फुर-फुर-फुर।
बिल्ली मौसी हुलकै छै,
मूसों देखी पुलकै छै।
मूसां देलकै लगे उड़ौन,
झुट्ठे मौसी मारै रौन।
खाँसी सुखलों, सर्दी-छीक,
कोय तरह सें ई नै ठीक।

सेवा रों फोंल

नानी के गोड़थारी में,
बीस अठन्नी थारी में।
बैठी छाँह-छहारी में,
कुत्ता भूकै बारी में।
चार फूल छै डारी पर,
जैतै वहू उधारी में।
पड़ियैं कभी नै गारी में,
ई रं मारामारी में।
गोड़ दबावें नानी के,
टाका मिलतौ चानी के।

खोटा-चूँटी

चूँटी-खोटा, सोटा ले!
थरिया, बाटी, लोटा ले!
रोटी की ले, रोटा ले!
चीनी, गुड़ोंं, परोठा ले!
जाय कें खैयैं बिल्ली में;
मौज उड़ैयैं दिल्ली में।

मंतर

साँप विखों कें कहैं नै बीख,
मंतर एक्के गिनती सीख।

हवा

हवां उड़ैतै गर्दा सब,
हवा बिना तें मुर्दा सब ।

दाँत

दाँत हिलै, सब खिच्चा लागै,
करका सीम के बिच्चा लागै।
रोगी दाँत कें की नै होतों,
भातो खाय में लागै भोतों।
खट्टे खैला पर नै कोथों,
जल्दी ही बनतै ऊ थोथों ।

नाना रों टीक

फूल चमेली, चम्पा, जूही,
ग्वाला गेलै गाय कें दूही।
अड़हुल, गेंदा आरो कनेल,
मुड़लों माथों; पक्का बेल।
झिंगली लागै होने ठीक,
नाना जी रों लम्बा टीक ।

रुइया आरो मछली

कोॅर कदीमा, कद्दू—गोल,
फाटी गेलै तकिया खोल;
रूई नाँचै खोलों में
मछली उछलै झोलों में ।

उल्लू के पट्ठा

आम बड़ा छौ खट्टा ई,
बासी दही के मट्ठा ई;
तभियो खाय लें लट्ठा ई,
उल्लू के छौ पट्ठा ई।
दूध मिलै तें भागै सरपट,
इमली खाय लें जीहा चटपट,
बूझै ईख छै खुट्टा कें,
हपकै कच्चा भुट्टा कें ।

मोॅर-मसाला

नाना जी रोॅ लम्बा दाढ़ी,
धनियोॅ, जीरोॅ, लौंग, सुपाड़ी।
ऊँट कें बूझै बैल बुझै अनाड़ी,
धनियोॅ जीरोॅ लौंग, सुपाड़ी।
मिरचां, मरिच जिहे दै फाड़ी,
धनियोॅ, जीरोॅ, लौंग, सुपाड़ी।
तेजपत्ता के भारी नाड़ी,
धनियोॅ, जीरोॅ, लौंग, सुपाड़ी।
सौंफ चिबाबें झाड़ी-झाड़ी,
धनियोॅ, जीरोॅ, लौंग, सुपाड़ी।

पाँच तिया पनरों

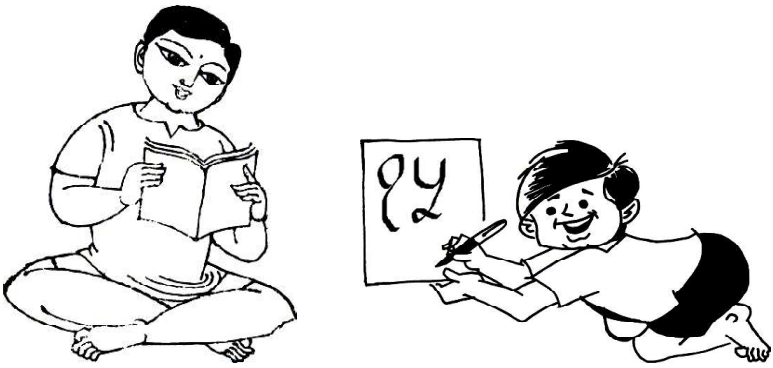

प्रथम प्रकाशन
ई. २००९

प्रकाशक
अंगिका संसद, भागलपुर (बिहार)

'पाँच तिया पनरों' में संकलित बालगीत 'तुक्तक मुक्तक' के बादकों रचना सिनी छेकै, यानी २००८ के बाद के रचना। 'तुक्तक मुक्तक तें २००८ के दिसम्बर के ओरिये में छपी चुकलों छेलै (भूल सें वहाँ प्रकाशन वर्ष ८ के बदला ९ पड़ी गेलों छै), २००९ में रचलों ई बालगीत सिनी के संग्रह के नाम पिताजीं 'पाँच तिया पनरों' देलें छै। ई संग्रह के यै लेली भी ऐतिहासिक महत्व छै कि एकरों बाद पिताजी मुक्तक बाल कविता रचवों लगभग बंद करी देलें छै, हिनकों ध्यान प्रबंध दिस ज्यादा होय गेलै, आबें तें वहू नै। पिताजी सें जबें भी कहैलियै, कुछ हिन्दी में लिखी दौ, तें हिनी यहा कहलें छै, आबें बालगीत सें संन्यास।

गुड़वा-गुड़िया

गुड़िया गेलै अपनों घोंर,
गुड़वा कें लागलै छै जोंर।
ऐलै वैद्य जड़ी लै साथ,
माथा पर फेरै छै हाथ,
नाड़ी देखै दाबी कें,
रोग न कुछुओ पाबी कें
वैद्य बेचारा होलै दंग,
बुद्धि नै दै हुनको संग।
जड़ी तुरते बूकी लेलकै,
मंतर वै पर फूँकी देलकै
जीहा पर जेन्है राखलकै
गुड़बो सबटा थूकी देलकै।

गुड़ियां सबटा बात सुनी कें
लेलकै माथों वहीं धुनी कें ।

गाय दुधारी

की बकरी, जों गाय दुधारी!
चींटी सें खोटा छै भारी ।

पोखरी सें नद्दी अच्छा छै,
कुइयाँ सागर लुग बच्चा छै;
गिद्ध रहै नै खोता में,
स्वाद नै जरो सुखौता में;
घास उगै नै गाछी तोंर,
गाछी में तें पीपरे-बोंर!
एकरौ सें उच्चोंं छै ताड़;
के पैतै एकरोंं रं बाढ़ !

बँसबिट्टी में बैठी जो,
घास मिलै तें लेटी जो!

भारत माय

होना जों छौ देव, अमर,
भारत माय कें वन्दे कर!
भारत प्रेम-दया रों घर,
भारत माय कें वन्दे कर!
माय सें केकरा केन्होंं डर,
भारत माय कें वन्दे कर!
मेल-मिलन के सागर भर,
भारत माय कें वन्दे कर!

गाछ-बिरिछ

पानी पियै नै अन्ने खाय,
तहियौ कोठी बनले जाय;
जौनें भेद बतैतै ई
बुनिया धरलों खैतै ई।
जोंड़ करै की ? पत्ता की?
की दिल्ली ? कलकत्ता की?
गाछ छिकै की जादू घोंर?
सुड़की जाय सब तोंरे तोंर।

निछलों बात

उत्तर में उतराहा सब,
दक्खिन में दखनाहा सब।
सूरज उगतै पूरब दिस,
कत्तो तोहें करवे इस।
डूबतै तें बस पच्छिम दिस,
कत्तो तोहें करवे इस।

वैशाख

वैशाखों के अन्धड़-लू,
हवो बहै छै हू-हू-हू,
झुलसी गेलै सौंसे मूँ,
बैशाखों के अन्धड़ लू।

केकरों बिन के छटपट छट?
की जाय गल्ला में गट-गट?
की पावी कें सब्भे खुश?
कौआ गगलै; हा-हा हुश?

गदहा

ग सें गुल्ली, ग सें गदहा,
बैशाखी नन्दन ई लदहा,
बोझों कें बूझै वरदान,
घासे पर दै पहिलें ध्यान।
डाँग पड़ै तें लगे उड़क्का,
सीधे सरपट सोंर सड़क्का;
परेशान छै पाँचो पाँचू,
हर वक्ती बस ढेचूँ-ढेचूँ ।
बाबां ठिक्के कहिये गेलै,
गदहा गदहा रहिये गेलै।

बंदर मामा

ई की तोरों हाल छौं होलों?
बंदर मामा, सच-सच बोलों!
केकरों हड़िया में मूँ देलौ?
की छेलै वैमें, की खैलौ?
करखी टा मुँह पर भरलों छौं,
हमरा तें लागौं—जरलों छौं।

जों करखी, तें साबुन लै ला;
खूब नहाबों घैला-घैला;
तबें उछलियों छप्पर-छोंत;
नाशी देलों सबटा लोंत।
की पीलें छौ दारू-भांग,
दै रहलों छौ बड़ी छलांग?

भूल

गाछ-बिरिछ जे काटै छै,
अपनोॅ जिनगी चाटै छै ।

रात

रात अन्हरिया टापेटुप,
कहीं नै चीं चीं, कही नै हुप।
डड़कौआ रं सौंसे रात।
कारी बिल्ली पोसै रात,
दिन सुतलोॅ छै कोठी में,
काकी के कजरोटी में।

मौसाजी

मत दौ कन्नी, मौसाजी;
आठ चवन्नी मौसा जी ।
धूपोॅ सें जादा चमचम
चमकै पन्नी, मौसाजी ।
हौ जुग छू मन्तर भेलौ,
कहाँ अधन्नी, मौसाजी !
कोन बथानी में होय छै,
गाय बकन्नी, मौसाजी ?
आठ कमैलौ; मौसी कें दौ—
चार चौवन्नी, मौसाजी!

झिन्नुक आरो दादी

कहाँ हेरैलै नयका झिन्नुक!
दैया के दिल धुक-धुक, धुक-धुक ।
लू लगतौ ई कड़ा रौद में,
बाहर नै जों रुक-रुक, रुक-रुक !
चार औंगरी के चौड़ा पटरी,
रेल वही पर छुक-छुक, छुक-छुक !
कपड़ा-लत्ता सब नानी दै,
पैसां दै में धुकचुक, धुकचुक ।
ढिबरी, लालटन, दीये—अच्छा,
बिजली तें बस भुक-भुक, भुक-भुक ।
भोरे सें चिकरै छै दादी,
कहां हेरैलै नयका झिन्नुक ?

काम नै देतौ गोय्याँ

रात अन्हरिया टापे टोय्याँ,
भुटकी जाय छै रोय्याँ-रोय्याँ।
दादी के मोतियाबिन होलै,
सुझै नै ऐंगने, नै कुय्याँ।
दू पैसा के खातिर छोटकी,
नाच करै छै छम्मक छय्याँ।
पढ़वे-लिखवे काम टा देतौ,
साथ नै देतौ कोनो गोय्याँ।
'भोर-भिहाने' नै करलों कर,
नै तें खैवे चार चौधय्याँ ।

बात बताव

तिनका केकरों दाढ़ी में ?
छिपी रहै के झाड़ी में ?
तारा में सतभैया के ?
सब में मुड़ली गैया के ?
नैया में बरियारी के ?
खैतें रहै उधारी के ?
कॉन विटामिन आँखी लें ?
के कवि नामी साखी लें ?
बुद्धि छौ तें ई पहचान–
पानी हटथैं छोड़ै जान ?

डायनासोर

डायनासोर, डायनासोर!
हाथी-सिंहों सें नै कटियो
कम छौं तोरों ताकत जोर,
डायनासोर, डायनासोर!
कहाँ रुसी कें तोहें गेलौ ?
की पहाड़ में जाय बिलैलौ?
कहिया फेनू ई धरती पर
ऐवौ करलें भारी शोर ?
डायनासोर डायनासोर!
ऐवा तें जबड़ा नै खोलियों
राकस नाँखी जरो नै डोलियों,
देखी कें तोरों पंजा तें
डर सें बहै छै हमरों लोर ।
डायनासोर, डायनासोर!

घटोत्कच

बाल अंगिका खण्ड-काव्य

'घटोत्कच' बाल खंडकाव्य छेकै, एक दिनों में लिखलों गेलों आरो वही सप्ताह में चाचा राजेन्द्र सिंह नें अपनों दैनिक 'नई बात' में प्रकाशितो करलें छेलै, खूब सजाय कें। अभियो ऊ अखबार रखलें छियै, यानी रविवारीय १३ दिसम्बर २०११ के 'नई बात'। पुस्तक छपाय के योजनाहौ बनी गेलों छेलै, मतुर पांडुलिपि धरले रही गेलै, कारण कि काव्य-लायक कोय चित्रसिनी नै बनें पारलों छेलै। हम्में वही रूपों में ई काव्य कें रखी रहलों छियै, जे रूपों में हमरा मिललों छै। बस।

प्रत्यक्ष

धरती के सब धूल उड़ैलें,
बोंर गाछ कें तोंर लगैलें;
ताड़ गिरैनें, नदी उठैलें,
पर्वत, पानी जकां बहैलें;

सौनों के बादल रं करिया,
भादों केरों रात अन्हरिया,
आगिन नाँखि आँख जरैनें,
खोहे नाँखि मुँह कें बैनें;

भूत भयानक भरखर राती;
खड़ा रहा जों बड़का हाथी;
ऐलें बिन्डोबों रं बहलें,
जेकरा देखी जम्मो दहलें।

विकट हिडिम्बा-पूत घटुत्कच,
शांति-सभा में भारी कचकच,
हाथ लगै कि कुछ नै बोलों
गाछी में जों हिलै डमोलों;

सूइये नाँखि रोय्यां-रोय्यां;
नाक लगै जों दू ठो कुय्यां;
मूँछ लगै जों बड़का फरसा;
घन्नों; जों भादो के बरखा!

देह पहाड़े रं छै भारी;
मूँछ लगै छै वै पर आरी;
कान; ताड़ के पंखा डोलै;
सुरसै रं आपनों मुँह खोलै।

बोलै लें जों गल्लों फाड़ै–
लागै हाथीये ठो चिग्घाड़ै।
ओकरों चल्लें भुय्यां काँपै,
कौरव कें धुरदा रं चाँपै।

चटनी रं पीसै छोटका कें,
सागे रं मोचरै मोटका कें,
बुढ़भा कें गेंदे रं पटकै,
जों आगू सें ऊ नै हटकै।

नकुल-भीम ई देखी गदगद,
गिरै खुशी के मारे लदलद;
कृष्ण-युधिष्ठिर मुस्कावै छै,
पाण्डव-सेना ठिठियावै छै।

मिली-जुली मारै कठहस्सी,
कौरव कें लागै हुरकुस्सी;
हुन्नें राकस घटोत्कच ठो
एक्के साथें मारै दस ठो।

संघर्ष

कर्ण-फौज में मचलै हुर-हुर,
भागै छै मूसें रं फुर-फुर;
कोय रथ के पीछू नुकियावै,
कोय भागी कें जान बचावै।

कोय बेंगे रं दै छलांग छै,
कोस-कोस पर पड़ै टांग छै;
धक्कम-धुक्की, ठेलम-ठेला—
फौज करै भूतों के खेला।

फरसा, भाला छोड़ी-छाड़ी
नुकलों छै रथ के पिछुआड़ी,
पिछुआड़ी सें हुलकै सबठो
पिछुवैलों सब, हट्टो-हट्टो।

कोय हाथी तर नुकियैलों छै;
जों घटोत्कच—जम ऐलों छै;
ई देखी कर्णो घबड़ैलै,
घटोत्कच के नगीच ऐलै।

तानी लेलकै तीस तीर कें
मारै लें ऊ असुर वीर कें;
पूत-हिडिम्बा रों गोस्सावै
रत्थे पर सें मोंछ पिजावै।

कर्ण-तीर तें लागै, होना
वैं पकड़ी लै दोसरों कोना,
हिलडुल करै नै वीर जरो टा,
आखिर छिकै हिडिम्बा-बेटा।

कर्ण कहाँ ओकरा सें कम छै
एक रसुनिया, दूसरों बम छै;
तानी लेलकै तीर तीस कें
मारी देलकै एन्हैं बीस कें।

ई देखी कौरव-दल गदगद;
मारे खुशी गिरै छै भदभद;
पिछुवाड़ी सें निकली-निकली
फुर-फुर उड़ै; जों, टुकनी-तितली।

कोय घटोत्कच बाँही मोचरै,
कोय ओकरों देहे कें खोखरै;
कोय तें जाय कें मूँछ उखाड़ै,
कोय चमड़ा के कुर्त्ता फाड़ै।

कोय टाँगों सें लटकी झूलै,
कोय ओकरों कंधे पर बूलै;
राकस लें सब खोटा-पिपरी;
बच्चा वास्तें; जों, तरऊपरी।

तभिये ऐलै वहाँ अलायुध,
देखी उड़लै सब्भे के बुध;
दोनो मनराचल रं भारी,
बक्कै छै अनसेधरों गारी।

घटोत्कच पाण्डव के दिस सें,
भरलों जादू-टोला, विष सें;
अन्धड़-आगिन, जेकरों साथी,
मुड़िये लगै; जों, बड़का हाथी।

अलायुधो होने छै; कम नै,
हाथ मिलाय लौ, केकरौ दम नै!
ऐलों छै कौरव के दिस सें,
भरलों छै टापेटुप खिस सें।

ऐथैं कर्णें देलकै घुस्सा,
घटोत्कच के बढ़लै गुस्सा;
भिड़लै दोनों दू पहाड़ रं;
झूमै दोनों खड़ा ताड़ रं।

गुर्रावै दोनों बाघे रं,
आँख दिखाबै छै आगे रं;
कोय फरसा, कोय गदा दिखावै,
कोय लुढ़कै, तें कोय ठिठियावै।

एक-दूसरा पर गदा उछालै,
रही-रही मुड़घुनियाँ चालै;
दै छलांग हनुमाने नाँखी,
दूर तलक दै आवै हांकी।

फेनू दौड़लों पहिलों आवै
पीछुवे-पीछू लंग्घी लगावै;
खाय कें लंग्घी गिरै धड़ाम,
माथों पर दै गदा भड़ाम।

एक उखाड़ी लेलकै बोॅर,
दूसरां पीपर सहिते जोॅड़;
दीएॅ लागलै धांय-धांय-धांय,
बजड़ै छै पथरे रं; ठांय।

दोनों भीतरे-भीतर दंग,
चलतै कैक दिनों के जंग;
एक्कें सोचै, दौं पटकनियां,
दूसरें दै दै छै पेटकुनियां।

तभिये चललै चाल घटोत्कच,
तोड़ें लागलै हड्डी, कचकच;
ई देखी कौरव-दल गुमसुम,
हुन्नें चुतड़े पर छै धुमधुम।

उछलै-कूदै पाण्डव सेना;
हाथ में बुनिया, मुँह में छेना,
कौरव-दल के मुँह छै कस्सोॅ,
ठोर-जीया छै लस्सोॅ-लस्सोॅ।

पतन

करणों के गोस्सा भड़कै छै,
पाण्डव केरों जी धड़कै छै;
घटोत्कच करणों कें देखी
भूली गेलै सबटा सेखी।

सँरगों में जाय तुरत नुकैलै,
नुका-छिपी के खेला खेलै;
मेघों के पीछू सें हुलकै
ताकि केकरौ नै कुछ झलकै।

तीर वहीं सें बरसावै छै,
मरखन्ना रं धमकावै छै;
तीरे नै, अन्धड़-पानी तक;
कौरव डरै; डरै नानी तक।

दासिये नै, काँपै रानी तक,
गैया, गुयठों सें सानी तक;
कुछुओ नै करणों सें छुपलों
लेलकै तीर बीस ठो धिपलों।

धनुष चढ़ाय कें फेंकी देलकै,
घटोत्कच कें घेरी लेलकै;
ई देखी कें घटोत्कचो नें
अपने रं सौ रूप कें रचनें—

सबकें नीचें भेजी देलकै
जेकरै चाहै ओकरै हपकै;
हौ सौ राकस नीचें आवी
कौरव सबकें पावी-पावी—

मुड़ी मोचारै, तोड़ै हाड़;
जना उखाड़ै जंगल-झाड़;
करणों कें अचरज छै लागै,
जन्नें-तन्नें कौरव भागै।

खुँचनें-खाँचनें आपने लोग
सबकें लगै जड़ैया रोग,
कर्ण हदसलै जरियो नै
कोय ओकरों रं बरियो नै।

दस-दस तीर धनुष पर जोड़ी
राकस सब पर देलकै छोड़ी,
अन्धड़ में जों गाछ गिरै,
बिन्डोबों में लोंत घिरै;

बोहों में कागज के नाव;
करणों लें सौ राकस फाव।
गदा-मार सें राकस भुरता,
तीर खाय कें उड़ै जों पत्ता।

मरलै सवो छुछुन्दर नाँखी—
भनभन करतें; जेना, माँखी;
ई देखी गोस्सा सें झामों
कोयलों बनी गेलों छै तामों।

घटोत्कच नें पेट बढ़ैलकै,
पेटों पर जाय पेट चढ़ैलकै;
एक पेट होय गेलै दस ठो,
रस्सी नाँखी लागै नस ठो।

दसो पेट पर दस-दस मुण्डी;
आँख लाल; मिरचाय के गुण्डी;
बीस गोड़ पर बीस हाथ छै;
सूपे नांखी लगै लात छै।

आरी नाँखी दाँत निकललों;
पर्वत नाँखी आवै चललों;
देखी छुर-छुर करै छै हाथी;
कौरव-दल के भों-भों साथी।

घोड़ा-रथ पर चढ़ी नुकैलै,
एक्के राकस सौ रथ ठेलै,
ई देखी कें कर्ण गरजलै;
घामों सें पाण्डव तक भिजलै।

राकसों सब के छुर-छुर-छुर;
मूसे नाँकी फुर-फुर-फुर;
नभ में ढुकलै घटोत्कच्चो;
गुल्ली ढुकै छै जेना, खच्चो।

तुरत अलोपित हेनों होलै,
छायो तक नै कन्हौं डोलै;
सौसें सरंग बुझावै करिया
कांपै; जों, कांसा रों थरिया।

एक चनरमा बारों लागै,
सूरज करिया कारों लागै;
शापलकै सब भीतरे-भीतर,
राकस लें गुड़झिलिया-घीवर।

बुझी कर्ण नें एकरा खतरा,
अस्त्र छोड़लकै अनमुन जतरा,
जे खाली कभियो नै जाय,
राकस वास्तें काली माय।

वैजयन्ती के अस्त्र भयंकर,
तेसरों आँख जों खोलै शंकर;
लगथैं गिरलै घटोत्कच ठो
छाती चित्त, तें मुण्डी पट ठो।

कद्दू नाँखी फटी गेलै ऊ;
सौ टुकड़ा में बंटी गेलै ऊ ।

पंचामृत

बुद्ध के जीवन सें जुड़लों पाँच कथा पर आधारित पाँच बालकाव्य-नाटक के संग्रह छेकै 'पंचामृत'। ई काव्य रूपक २०१५ आरो १६ के बीच रचलों गेलै। 'बुद्धं शरणमं गच्छामि' कें तें विकास गुल्टी चां २०१६ में आयोजित 'विक्रमशिला महोत्सव' में मंचितो करवैलें छेलै, एकरों पहिलें अपनों स्कूलों में। यहू संग्रह पांडुलिपिये रूपों में पड़लों होलों छेलै, जैमें समर्पण पृष्ठ तें छै, मतर नाम आरो दू शब्द के नामों पर कुछुवो नै लिखलों गेलों छै। कहलौ पर पिताजीं टारी देलकै।

चोकर के हलुआ

(भिक्खु आनन्द ईंटा से बनलों तिनकोनियां चूल्हा पर धरलों मिट्टी वर्त्तन के अन्न कें एकटा छड़ीनुमा लकड़ी सें लारी रहलों छै। रुकी-रुकी कें आग लहरावै लें मूड़ी नीचें करी चूल्हा कें फूँकवो करै छै, तभिये वहाँ भिक्खु मौदगल्यायन के ऐवों।)

मौदगल्यायन :

ई की खतकावै छौ तोहें ?
कोय अन्नों के लागै भूसों,
लोढ़ी-पाटी पर पिसलों जे
बुकनी रं काँटों-के टूसों।

आनन्द :

(मौदगल्यायन दिस जरा-सा देखी वहा रं कामों में लागी जाय छै।)

नै काँटों, नै भूसों छेकै,
नै घोड़ा के चारा-चोकर,
कहाँ अन्न कोय खेतें दै छै?
खाली-खाली भरलों पोखर।
ई वर्षा में बिन वर्षा के
बिजनारा के हालो खस्ता,
आन नगर में जान्हैं अच्छा
लै अपनों सब बोरिया-बस्ता।
पर गुरुदेव कहाँ मानै छै,
वहाँ नीम गाछों के नीचें,
भुखले रही देशना दै छै।
कोय कत्तें दिन है रं खीचें?
यहू बात छै, भुखलों भिक्खु
कत्तें बात मनों सें लै छै,
भुक्खा कें नै भजन सुहावै
बोलतें रहौ नी—"हौ छै' "है छै!"

मौदगल्यायन :

हेनों करौं कि कुछुवे दिन लें
उत्तर कुरु में वास करौं सब,
भला यही में सब्भे के छै
कत्तें भुखलों यहाँ मरौं सब!

आनन्द :

यहा गुरु सें कहलें छेलियै,
पर हुनकों तें अलगे मत छै,
"अग्निदत्त के आमंत्रण पर
यहाँ ठहरलों छी, ई सत छै।
आरो अभी हुनी छै बाहर
बनिज वास्तें जों गेलों छै,
सूना में की नगर छोड़वों
अच्छा होतै? की भेलों छै?"
के समझैतै गुरु कें बोलों—
पेट अड़ी जाय, तें सब लरपच,
राजभवन की, आश्रम तक में
साफ दिखावें लागै कचकच।

मौदगल्यायन :

से तें सही छै; जना यहू कि
कै दिन चोकर बनिया देतै,
वहू बिना दामे ही लेलें;
ई संभव केन्हौं कें की छै?
एक उपाय बचै छै आबें,
बरखा रों दिन; माँटी नम छै,
हरा-हरा दुगड़ी छै बिछलों
भूख मिटावै लें की कम छै?
धोय-धाय कें वही उबालौं,
भिक्खु रों कल्याण यही में;

आनन्द :

ठीक बोललौ, हम्मू कहियौं
सबसें बढ़िया राह सही में।
की बोलौं कि यहू बात कें
गुरु के आगू रखलें छेलियै,
नांकी देलकै यहू राय कें,
आबें कहनौ छोड़ी देलियै।

मुदगल्यायन :

गुरुओ जीं कुछ कहलै होथौं,
कोय कारण तें पीछू होतै?

(वर्त्तन रों अन्न आनंद फेनू लारें लागै छै आरो मुदगल्यायन दिस बिना देखले बोलै छै।)

आनन्द :

कीट मरै के शंकाहै नै,
खेत किसानों के, जे जोतै?

मोदगल्यायन :

साफ-साफ बोलों; कविता नै,
की बोली कें टारी देलकौं?
आखिर कोन तर्क रों आगू
तोरों हिम्मत हारी देलकौं?

आनन्द :

सुनों, कहलकै हमरा गुरु जे–
"राय ठीक छौं, राय ठीक नै,
घास पकैवों, जरो उचित नै,
मिलें भले ही कहूँ भीख नै।

घासों के जड़ सें जीवो तें
सटलों रहै छै भोजन लेली
की हिंसा नै होतै यैसें?"

मुदगल्यायन :

आबें खुललौं रहस-पहेली।

(आनन्द रों सम्मुख चुकूमुकु बैठते हुएँ।)

तोंय आनन्द नै समझों ई कि
हुनी कहलकै पहिले बेरिया,
हमरो कहला पर कहलें छै
झूठ कहौं नै, तोरे किरिया।
तपरत वहाँ केना छै गुरुवर
कै दिन सें बिन खैलें-पीलें?
हमरा है अच्छा नै लागै
कुछुवो तोहें भले कही लें।
एक बात उठलों छै मन में,
उठलों छै, तें कहिये आवौं;
हुएँ सकें छै, मानी ही ला;
संतापों सें मुक्ति पावौं।

(आनन्द चूल्हा पर रखलों, पात्र के अन्न के लारतें रहै छै आरो मुदगल्यायन झटकी कें एक दिस चली दै छै।)

(दृश्य बदलै छै)

(बुद्ध अपनों शिष्य सिनी के बीच शांत मुद्रा में बैठलों होलों छै। मुदगल्यायन रों प्रवेश।)

बुद्ध :

की मुदगल्य, कहों, की कहना?
की पूछै लें व्याकुल हेनों,

जे कहना छौं, कहों खुली कें,
नया किसिम के चिन्ता केन्हों?

मौदगल्यायन :

चिन्ता की आरो कुछ होतै
चिन्ता छै, तें यही बात के,
रातकों चिन्ता-दिन की खैवों?
दिन में चिन्ता वही रात के।
सब सोची कें देखलौं हम्में,
एक यही छै रस्ता बचलों;
गाछ-विरिछ जे रं ठकमौरै,
ई सब ई मिट्टी के रचलों।
कैन्हें नी खोदी लौं मिलि कें
गाछ-बिरिछ के तरला मिट्टी!
निश्चय ही गुणकारी होतै;
रसविहीन नै आकि सिट्ठी।
कैन्हें नी ई मिट्टी कें ही
पानी में घोरी-घारी कें
चलौं पकावौं, कब तांय रहवै
पेटों सें बान्ही डोरी कें!

बुद्ध :

है की बोलै छों तोंय भिक्खु,
उटपटांग रं, ठहरों-ठहरों!
ई विचार बुढ़िया आँधी रं
है रं एकरा पर नै लहरों!
जानों, गाछी तर मिट्टी में
ढेरे जीव करै छै वासों,
रौदी नै झुलसावै जैसें
घेरे भी नै ठंड-कुहासों।

जों मिट्टी कें कोड़ी लेवौ,
जीव केन्हौं की रहतै जित्तों?
भिक्खु कें शोभा नै दै छै,
ई की वचन निकालों तित्तों!
के बोलै छौं–मिट्टी-रस कें
है रं घोरी कें पीला सें,
बोंल बढ़ै छै? बढ़ियो जाय तें
की जीवों हेनों जीला सें?
सोचों जरा मनों सें तोहें–
खोदी लै छौ जों मिट्टी कें,
सबटा रोंस चुलाय कें ओकरों
छोड़ी दै छौ बस सिट्ठी कें;
तें गाछो कें कहाँ सें मिलतै
रोंस-रसायन जीयै लेली?
ठाढ़ों रहतै सही-सलामत?
की उम्मीदो एक अधेली?
जीवों-गाछी कें मारी कें
बोलों जित्तों की रहना छै,
मनन करों तोरा सब आबें
हमरा कुछुवो नै कहना छै।

(एक दिसों सें आनन्द रों प्रवेश। बुद्ध के आगु पकैलों अन्न के पात्र बढ़ैतें हुएँ बोलै छै।)

आनन्द :

आय यही चोकर के हलुवा,
एकरा सें कुछ ज्यादा नै छै;
पावस-काल में आपन्है दिक्कत
के केकरा अन्नों कें दै छै?

बुद्ध :

चिन्ता की करवों एकरा में
सब एकरै में पावी लेवों,
जे संघों के धरम-करम छै
प्राणो दै कें नियम निभावों!

(बुद्ध आनन्द के हाथों से अन्न के पात्र लैकें भिक्खु सिनी के पात्र में काठ के कलछुल सें हलुवा बारी-बारी सें रखै छै, आरो आखिर में बाकी पात्र एक दिस राखी के साधना रों मुद्रा में बैठी जाय छै। अन्य भिक्खु सिनी रों वैठां सें अभिवादन के मुद्रा में हटवों।)

(पर्दा-पतन।)

अतिथि-सेवा

(चार लड़का, उमिर छों-सात सालों के बीच, माँटी आरो बालू सें घैरकों बनाय में बेहाल छै। घैरकों बनला पर हाथ-गोड़ झाड़ै छै कि तखनिये एक के नजर भिक्खु सिनी पर पड़ै छै आरो सबके नजर वही दिस चल्लों जाय छै।)

बुतरू १ :

घोल्टू, देखैं के आवै छै,
साधु हेनों दिखलावै छै।

बुतरु २ :

कहाँ कमंडल, चिमटा, लाठी?
बस लेलें माँटी रों बाटी,
हमरों मन में ई जावै छौ,
ई सब भिक्खु ही लागै छौ।

बुतरू ३ :

हों, भिक्खु के टोली छेकै,
हिनकों बाटी झोली छेकै;
बाटी में कुछ अन्न जुटैतै,
मिली-जुली के सब्भैं खैतै।
सबसें आगू बुद्ध बुझावै,
हिन्नै ही सब चल्लों आवै,
चल नगीच सब पूछिये लेवै
अपनो मन रों कही सुनैवै।

बुतरू २ :

कहना-सुनना कुछुवो नै छै,
सुनलें छियै, सनेशो दै छै;

चल किस्सा हुनका सें सुनवों,
की घैरको पर माथों धुनवों!

बुतरू १ :

पूरो तें होय्ये गेलों छै
बालू-माँटी रों बनलों ई,
चारो दिस सें चारदिवारी
की रं लाठी रं तनलों ई!
भंडारो-घर भरलों-भरलों
कोन बात के कमी बुझावौ?

बुतरू ३ : (एक बुतरू के हाथ पकड़तें।)

अरे मंगलिया, हुन्नें देखैं
हिन्नै भिक्खु चल्लों आवौ।
शायत भिक्षै पावै लेली
हिन्नें दिस छै आवी रहलों,
सब्भैं कुछ-न-कुछ खाय लें दै
हुऍ सकै छै, होतै भुकलों।
हमरों सबकें देना चाही,
की घोल्टू तोरों विचार की?

बुतरू २ :

ई तें ठिक्के बात छै, यैमें
कटियो टा कुछुवो कचार की?

बुतरू ४ :

मतुर भंडारों में तें, सुग्गी
बालू रों ही चौर-दाल छौ,
की भिक्खु सब गोस्सैतौ नै?
माथों पर ही लगौ काल छौ!

बालक १ :

की बोलै छैं, बालू छेकै?
आबें अन्न कहैं कोठी के;
ई माँटी नै; चिकसोॅ छेकै,
चिन्ता करें तें बस रोटी के।
माँटी-बालू-कादोॅ—चिकसोॅ,
उपहारोॅ में दै देना छै,
खेलै तक ही यैसें मतलब
फेनू यैसें की लेना छै!
देर करें नै, रख पत्ता पर
भंडारोॅ सें अन्न निकाली,
भरिये देवै सब भिक्खु के
खाली बाटी, छिपली, थाली।

(सब बुतरू थपड़ी बजाय कें हाँसै छै। फेनू झब-ढब बगले में पड़लोॅ पत्ता सिनी पर धैरको के भंडारोॅ सें बालू-माँटी निकाली कें राखी लै छै आरो भिक्खु दिस मुड़वे करै छै कि बुद्ध भिक्खु सिनी साथें वैठां पहुँची जाय छै।)

बुद्ध :

पत्ता में है की लेलें छोॅ?
की करना छै? केकरा लेली?
तोरा में सें के समझैतै,
केन्होॅ ई ठो नया पहेली?

बुतरू १ :

ई चिकसोॅ-सत्तू सनलोॅ कुछ
भेंट नगरवासी के छेकै,
यहा हिदायत छै कि एकरा
कोय्यो भी भिक्खु नै फेकै।

(बुद्ध मुस्कैतें हुएँ बालू-माँटीवाला पत्ता लैकें आनंद कें दै छै।)

बुद्ध :

रखों संभारी कें, घुरवै तें
आश्रम जे भभरी रहलों छै,
लीपी कें चिकनैवै यैसें
फेकना नै छै, जे कहिलों छै।

बुतरू ३ :

भेंटों में होलौं जे, देलियौं,
आबें बदला में की करवौ?
बिना सुनैलें कोय कहानी
बढ़ियों नै तोंय; यही ठहरवौ।
है टीला पर बैठी कें तोंय
एक कथा तें कहलें ही जा,
भले रहें राजा-रानी के
या राकस के बाग-बगीचा।

(बुद्ध टीला पर बैठी जाय छै आरो आमना-सामना में पाँचो बच्चो। बुद्ध एक-दूसरा कें देखतें होलें कहानी कहना शुरू करै छै। भिक्खु सिनी ठाड़े रहै छै।)

बुद्ध :

किस्सा राजकुमारों के ई
विश्वांतर जिनकों कि नाम,
के होतै हुनकों रं दानी !
सुख-सम्पत सें भरलों धाम।
हुनकों पत्नी होने छेली,
दान-दया सें भरलों मोंन,
माद्री नामों सें सब जानै
मीट्ठों बोली जेकरों धोंन।
राजकुंवर कें बेटो एकटा
एकटा बेटी साथे-साथ,

जे रं बेटा जतिन, वही रं
बेटी कृष्णाजिन रों बात।
आबें तोहें सब ही बोलों
क्रम सें ऊ चारो के नाम,
तभिये आगू बढ़भौं हम्में–
कना विधाता होलै वाम?

सब बुतरू :

विश्वांतर माद्री के पति जों,
जतिन रहै कृष्णाजिन-भाय;
आगू की होलै सब बोलों,
एकेक करी हमरा समझाय।

बुद्ध :

ठीक-ठीक सुनलों छौ किस्सा
तोहें सब्भैं मोंन लगाय,
तोरों लगन लखी कें हम्में
खुश छी कत्तें-कत्तें आय।
हेने बुद्धिवाला बुतरू
करै समाजों के उपकार,
हेने बुतरू कें राखै छै
याद हमेशे ई संसार।
तें होलै की राजकुंवर के
बेटा-बेटी केरों हाल?
वही राज में जखनी पड़लै
अनचोके ही घोर अकाल।
राजकुंवर दानी पहिले सें
होने पत्नी रों सोभाव,
ऊ अकाल में दीयें लागलै
दान दिलों सें, जत्तें जाव।

हाथी तक हथसारों केरों
दै लेलकै दुखिया कें दान,
ई देखी कें मंत्री केरों
चटकें लागलै तनलों ध्यान।
राजा कें जाय कही सुनैलकै
विश्वंभर-माद्री के दान,
यहू कहलकै, यैमें नै छै
राजकोष के तें कल्याण।
ई अकाल सें बढ़िये कें कुछ
होतै बुरा कोष के हाल,
विश्वंभर के जेन्हों सुर छै
ओन्हे माद्री केरों ताल।

(एक बुतरू दिस संकेत करतें)

ई तें कहों, उचित की छेलै
विश्वंभर के ई रं काम?
की हेनों कामों सें कभियो
केकरो भाग्य हुऐ छै वाम?

बुतरू २ :
दया-दान तें खुब्बे बढ़ियां
पर सीमानै में रहिये कें

बुतरू ३ : (खड़ा होय कें।)
ठीक। नदी जों तोड़ें तट कें
गाँव तें रहतै ही बहिये कें।

(बुद्ध बड्डी प्रसन्न दिखै छै, खड़ा लड़का कें बैठै के संकेत करै छै; बुतरू बैठी जाय छै।)

बुद्ध :

एकदम सही बतैलौ दोनो,
अच्छा तेॅ—बीचे के राह,
जे नै ई बातोॅ केॅ बूझै
ओकरा लेॅ बस लोरे-आह।
राजकुंवर सीमा सेॅ बाहर
तेॅ राजाहौ होलै वाम,
राजां खुली कहलकै, "ई तेॅ
विश्वंभर रोॅ अनुचित काम।
भेजोॅ राजकुंवर केॅ अभिये
पर्वत पर परिवार समेत,
सुख-अभाव की करै विपद में
एकरा ऐतै तभिये चेत।"
विजयसुरा पर्वत कोय छेलै
दूर कहीं में दूसरोॅ देश,
जंगल सेॅ घिरलोॅ जे छेलै,
रहौवला के होने भेष।
राकस रं नद्दी गरजै तेॅ
अंधड़-पानी; चोर-डकैत,
वहाँ उगै नै भोर-साँझ ठो
वहाँ नै आवै फागुन-चैत।
मेघ कभी भी दिखलावै नै
पर ठनका ठनकै दिन-रात,
विश्वंभर लेॅ आवी गेलै
दुक्खोॅ केरोॅ नया कभात।
पर रस्ता में जे भी मिललै
साधु, रिखि, मुनि, दुखिया, दीन
भूषण-वस्त्र लुटैले गेलै
आखिर होलै रथो विहीन।
ऊ पर्वत पर कोय योगी के
दिखलै एकठो टाट-कुटीर,

जिनगी वही में काटें लगलै
बान्ही कें सब्भे टा धीर।
माद्री साथें दोनो बुतरू
मइये-बाबू रं हलकान,
टंगलों रहै हमेशे वै पर
दादी-दादाहौ के ध्यान।
कखनू नानी कें देखै लें
ठुनकै, बोलै—जैवों घोंर,
माय बुलाय दे, दादी हमरों;
यहाँ लगै छै हमरा डोंर।
भला कहैतियै की बच्चा सें
रहै माय, तें बापो मौन,
सब तें भीतर सें कलपित्तों
दुख होलों जाय बीसो बौन ।

बुतरू ३ : (खड़ा होय कें।)
भागी कें चल्लों ऐतियै सब
राज-पाट अपनों ठों घोंर,
अपनों घर तें अपने होय छै
भला वहाँ केकरों की डोंर?

बुतरू ५ : (बैठले-बैठले।)
ऐतियै कना, राजदंड जे पैलें!

बुद्ध :
ठीक बोललौ, ठीक विचार,
लेकिन धरमों के रुकलों छै
कोय युगों में की उद्धार?
की कहियौं दुख-चक्र केना कें
पीसै छै ई मानुख-लोक,

सुख कन्हौ भी छुपें भागलों
पिछुवावै छै ओकरा शोक।
एक दिनों के बात छिकै ई
राजकुंवर माद्री रों संग,
वन मैं कहूं फलों कें तोड़ै
हिन्नें होलै रंग में भंग।

बुतरू १ :

आंय, कहों की हेनों होलै?
वहाँ डसलकै की कोय साँप?
की होनों खाको जंगल के
हुनका रहै नै कोनो माँप?

बुद्ध :

नै हेनों कुछ बात नै होलै
जे होलै ऊ आरो घोर,
माय-बाप हुन्नें, तें हिन्नें
बच्चा कें लै गेलै चोर।

बुतरू ४ :

की बच्चो कें चोर चुरावै?
बच्चा लै की करतै काम?
जों बेचै लें चाहवो करतै
की मिलतै कुछुवो भी दाम?

बुद्ध :

प्रश्न करी कें अच्छा करला,
ई धंधा के ढेरे चोर,
गाँव-नगर रों प्रेत छिकै ई
नर-भेषों में आदमखोर।

बेची दै छै बच्चा कें ई
व्यापारी कन लै कें दाम,
फेनू व्यापारी बच्चा सें
खूब करावै मोटों काम।
समय-समय पर करवावै छै
बच्चा सें चोरी के काम,
फेनू ओकरा बेची दै छै
लै कें आरो बेसी दाम।

बुतरू २ :

की हेनों चोरों कें राजां
दंड नै दै छै, पकड़ै नै?
बच्चे कना रही जाय चुप छै
बोंल लगाय कें चिकरै नै?

बुद्ध :

राज्है के नै ध्यान रहै छै,
लोगो के एकरा पर ध्यान,
धरी दबोचै मिली-जुली कें
जरियो हुऐ जों एकरों भान।
नै होतियै हेनों, तें केना
कहों धरैतियै ऊ ठो चोर,
जे बच्चा के रखलें छेलै
हटिया केरों पीछू ओर।

बुतरू ५ :

की ऊ जतिन रहै आरो की
कृष्णाजिन ही? खोलों बात,
के पहचानी लेलकै दोनो,
चोर धरैलै राजा हाथ?

बुद्ध :

हों कृष्णाजिन, जतिने छेलै
जग्घोः—विश्वांतर के राज,
के बच्चा कें नै पहचानै?
समझों, सौंसे राज-समाज।
एक सिपाहीं देखी लेलकै
मंत्री कें देलकै संवाद,
जाय पहुँचलै राजा के लुग
मंत्री तुरत हेकरों बाद।
मंत्री सें सब बात सुनी कें
राजा ऐलै दौड़लों हाट,
राजकुंवर बिन लागै छेलै
राजो के मन बड़ी उचाट।
कृष्णाजिन संग जतिन पावीकें
राजा-रानी घोर निहाल,
रथ पर चललै विजयतुरा दिस
हिचकोला, तें कहीं उछाल।
आबें पूछवौं तोरा सब सें
विजयतुरा ई केकरों नाम?
की जंगल, की नद्दी आकि
कोय देवों के छेकै धाम?

बुतरू १ :

नै जंगल, नै नद्दी आकि
विजयतुरा देवों के धाम,
ई तें कोय राजों में स्थित
पर्वत केरों छेकै नाम।

बुद्ध :

एकदम ठीक, सही कहलों छौ
राजा वहीं पहुँचलै जाय,

विश्वंभर-माद्री कें लैकें
घुरलै, सबटा बात बताय।
यहू कहलकै; पकड़ैतै सब
ठग, बच्चा रों असली चोर,
आरक्षी खोजी ही लेतै
बस होतें-होतें नी भोर।
राजभवन सब लौटी ऐलै
बजलै ढोल, मंजीरा, झाल,
माद्री-राजकुंवर खुश छेलै
पावी कें अपनों दू लाल।
एकरों बाद तें राजाहौ नें
बेटा कें देलकै आदेश—
जे कुछ देलौ प्रजै कें देलौ
प्रजा-हितों में होतै शेष।
फेनू की छेलै दीनों लें
राजकुंवर रों खुल्लै हाथ,
माद्री आरो दोनो बुतरू
दान-पुण्य में साथे-साथ।
सौंसे राज खुशी में डुबलै
सुख कें लूटै खूब अघाय,
जेनाकि तोरा दानों सें
हमरौ सब खुश भेलौं आय।
देतें रहियों जिनगी भर ही
कुछ-नें-कुछ सबकें उपहार,
नै धन, तें फूले टा भेंटियों
एकरौ सें बढ़ियां छै, प्यार।

मित्र हुएँ कि मय्ये-बाबू
सबलें कुछ-नें-कुछ उपहार,
दान, भेंट, उपकार यही तें
तोरों-हमरों जीवन-सार।

जे देलौ उपहार आय तोंय
हरखित करला, ला आभार,
यहा किसिम सें तोरासब के
बीतें सुन्दर रं संसार।
घैरको के भंडारों सें जें
देलौ बालू केरों अन्न,
की कहियौं ई उपहारों सें
कत्तें-कत्तें होलौं धन्न।
ई चिकनों माँटी कें
सानी, गाँथी-गूथी आय,
लीपी देवै आश्रम पर जों

आत्मसमर्पण

(श्रावस्ती नगर में महात्मा बुद्ध रों प्रवेश। नगर के सब्भे घोंर के द्वार बंद छै आरो चारो दिस सन्नाटे-सन्नाटा।)

बुद्ध :

श्रावस्ती कें की होलों छै
की द्वारे, खिड़कियो बंद छै,
हाय, वहीं ठां, जहाँ हमेशे
जखनी देखों घनानंद छै।
कोलाहल की, कलरव तांय भी
घर-ऐंगन में बंद दिखै छै,
हेनों के? आवी कें यैठां
सन्नाटा के छंद लिखै छै?
नै चैता, चैतावर, चैती
नै फागुन छै चौपालों में,
रंगों के बदला में कारिख
के पोतलकों छै गालों में?

(एक घरों सें एक गृहस्थ द्वार खोली कें हुलकै छै, बुद्ध कें पहचानी नगीच बावी बोलें लागै छै।)

गृहस्थ :

मान्य तथागत चलों यहाँ सें
इखनी घर में रहनै अच्छा,
देखै नै छों, कहीं दिखावै
एक्को टा बूढ़ों या बच्चा?

बुद्ध :

मतुर बतावों तें ई पहिलें
दिन कैन्हें ई रात लगै छै,

जैसें पथलो तांय सहमी जाय;
कुछ संकट रों बात लगै छै।

गृहस्थ :

की कहियौं, हे पूज्य तथागत,
अँगुलीमाल वधिक दिखलों छै;
श्रावस्ती के कोय जग्घों में,
समझों कि नाशे लिखलों छै।
जेकरा देखै, मारी दै छै,
अँगुरी ओकरों काटी लै छै;
अँगुर कें माला रं गूँथी
लहू खड़े-खड़ चाटी लै छै।

बुद्ध :

तें, प्रसेनजित की करलें छै,
अँगुलीमाल कें पकड़ै लेली?

गृहस्थ :

सेना कें भेजी देलें छै
जंजीरों में जकड़ै लेली।

बुद्ध : (आश्चर्य सें)

एक वधिक लें सेना-सैनिक!
से कर्त्तें बरियों-बलशाली?

गृहस्थ :

नै पूछों ओकरों ताकत के
कहियौं; नया जनम रों 'बाली'।
कभी जालिनी वन सें बाहर
हेना तें शायते ऊ निकलै,

निकलै तें बूझों मशान छै
जैठां-जैठां जहिया दिखलै।
ओकरों आगू बीस-बीस ठो
सैनिक गाजर-मूली समझों,
हाथी के लम्बा सूँढ़ों में
फँसलों होलों धूली समझों।
कै दाफी ई होय चुकलों छै
दाले रं मनुखों कें दरवों,
गरमी सें तपलों हाथी ठो
की छोड़ै छै पोखर घिकवों?
यही वास्तें कहियौं हम्में
आय भरी हमरा कन ठहरों,
गुजरें दौ अंधड़-वतास कें;
इखनी समय बड़ी छै बहरों।

बुद्ध :

बहरों छै तें की लेना छै
अँगुलीमाल हुऍ की काले,
हमरों वास्तें हमरों चिन्ता
साथ रहै छै बनलों ढाले।

गृहस्थ : (चौकन्ना होतें हुऍ।)

सुनों तथागत ध्यान लगैनें
आहट कोय पिछुवैलें आवै,
केन्हों धपधप चाल, जेनाकि
हो-हो हाँक लगैनें आवै।
ई तें अँगुलीमाले होतै
कोइयो शक नै, चलों तथागत,
आय भरी हमरे कन रहियों,
हमरा कन तोरों छै स्वागत!

बुद्ध : (निर्भीक स्वर में।)

गृहपति, ई पदचाप जरूरे
अँगुलीमाल के होतै निश्चय,
लौटी जा, हमरा छोड़ी कें
भिक्खु लें काहूँ नै कोय भय।

(गृहस्थ मलकी कें द्वारी दिस बढ़ी जाय छै, तभिये एक जोरदार आवाज गूँजै छै।)

अँगुलीमाल :

भिक्खु, रुकोंऽऽ अरे नै सुनलौ,
मौतें तोरा की घेरलें छौं?
यही बुझैवै छै कि कालें
माथा पर अँगुरी धरनें छौं।

(बुद्ध ई आवाज पर ध्यान देले बिना अपनों रास्ता पर चलतें रहै छै कि तभिये अँगुलीमाल झपटी कें आगू खड़ा होय जाय छै। पीठी पर तलवार आरो गल्ला में अँगुली के माला लटकलों होलों छै।)

अँगुलीमाल :

भिक्खु रुकों, कहैलियौं हम्में
बैहरों रं ही नै सुनलौ की?
केकरों ई आवाज ठो होतै?
ई बातों पर नै गुनलौ की?

बुद्ध : (शांत स्वर में।)

अँगुलीमाल की रुकवों हम्में
हम्में तें इस्थिर कहिये सें,
जन्म-मरण के भेद जानलां
समझों कि रुकलौं तहिये सें।

अँगलीमाल : (दर्शक दिस आवी कें बोलै छै।)

अचरज छै ई भिक्खु केन्हों
नामो नै हमरों जानै छै,
कटियो टा नै डोंर मनों में
जेकरा देखी यम कानै छै!
ई हेन्हों-तेन्हों भिक्खु नै
भिक्खु में ई श्रेष्ठ बुझावै,
आँख चुरावै के बदला में
केन्हों छै ई आँख लड़ावै!
हमरौ में बदलाव केन्हों ई
की होलै, कमजोर दिखै छी,
लेख लिखौं तें लहुवे सें बस
स्याही सें की लेख लिखै छी?
जों भयभीत नै ई भिक्खु छै
की फेनु ई बुद्ध तथागत?
कैन्हें हमरों मन व्याकुल छै
बोलै लें, स्वागत छै, स्वागत!

(बुद्ध के नगीच आवी कें।)

अच्छा एक बात ई, भिक्खु,
की छिपलों छै हमरों करतव?
तोहें इस्थिर, हम्में नै छी,
बतलैवों की एकरों मतलब?

बुद्ध :

अँगुलीमाल, कहलियौं हम्में
डर-भय तें कहिये के छोड़लां,
प्राणिमात्र के रक्षा लेली
अपनों लीवनगति कें मोड़लां।

सब्भे जित्तों रहै लें चाहै
के मिरतु कें वरै मनों सें?
कत्तो देह दियें दुख, सब्भैं
ओकरै चाहै प्राणपनों सें।
केकरौ कष्ट नै हमरा सें छै
लेकिन की तोरो सें ओन्हों?
तोहें तें सुक्खों-माथों पर
दुक्खों के लहुवैलों चेन्हों।
तोरा सें नर थरथर काँपै
तोहें धरती पर जम्मे नी,
जम्मो सें छों बढ़लों निर्दय
तोरा सें तें ऊ कम्मे नी।
हम्में तें आबें इस्थिर छी
तोरों होने चाल-चलन छौं,
मारै-काटै में अभियो भी
की रं तोरों मोंन मगन छौं!

अँगुलीमाल :

भिक्खु, तोहें जे कुछ कहलौ
झूठ कहाँ कुछ, सब सच्चे छै,
लेकिन तोहें की समझै छौ,
अँगुलीमाल मुरुखे-बच्चे छै?
जे मनुक्ख निर्दय, धोखै दै,
छल-प्रपंच सें भरलों-पुरलों,
ओकरा लें की चिंता करवों
जित्तों छै आकि छै मरलों!
मनुखों पर की दया दिखैवों;
चुनी-चुनी कें मारी देवै,
नया जनम के बाते की छै
हेनों घाट उतारी देवै।

बुद्ध :

बूझै छी तोरों गुस्सा कें
बहुत सतैलों छों लोगों सें,
मतर भेंट नै भिक्खु सें छौं
मिली गेलों छों संयोगों सें।
भिक्खु ही की, आरो जन छै
जे उदार छै, करुणामय छै,
हुनकों धरम, दया ठो होने
यैमें कोय्यो की संशय छै।
पर भिक्खु-जीवन कुछ अलगे
करुणाहे पर रुकी गेलों छै,
मनुख वही, जे हुएँ अहिंसक
स्नेह-प्रेम पर झुकी गेलों छै।

अँगुलीमाल : (दर्शक दिस आवी कें।)

अरे, भिक्खु केना जानै छै
हमरों पहिलों नाम अहिंसक,
यही नाम सें माय पुकारै
बाबू, इस्कूली में शिक्षक।
लागै छै ई भिक्खु जरूरे
भिक्खु-भेष में मंतरिया छै;
समझै नै हमरों मन कुछुवो
असमंजस में ई बेरिया छै।
कहीं भिक्खु ई गौतम ही की?
भाव-वचन सें यही बुझावै,
अच्छा तें होतै, पूछिये लौं
कैन्हें एत्तें नेह लुटावै !

(बुद्ध के नगीच आवी कें।)

कहीं भिक्खु गौतम तें तोंय नै?
है रं प्रेम वचन केकरा में!

बुद्ध : (स्वीकार में मूड़ी हिलैतें हुएँ)
वही भिक्खु, अमिताभ वही तें
प्रेम-दया जागै जेकरा में।
अँगुलीमाल, रुकों, जे पथ पर
दौडै छों, ऊ उचित कहाँ छै!

अँगुलीमाल :
बेरथ आबें ई सब कहवों
यैसें अलगो राह कहाँ छै?
नै-नै आबें रुकना मुश्किल
देरी बहुत्ते होय चुकलों छै,
रुकियो जय्यै, तें मानै लें
ई बातों कें, के रुकलों छै?
हमरों कर्म तें हमरे साथे
आखिर तांय चलतै ही रहतै,
जों सद्धर्म धरी चलियै तें
भिक्खु भला हमरा के कहतै!
कहतै; अँगुलीमाल ही कहतै
कोय अहिंसक भी कहतै की?
सम्मुख कुछ बोलें-नें-बोलें
सूना में चुप ऊ रहतै की?

बुद्ध : (अँगुलीमाल के हाथ पकड़तें।)
मन सें दुख के भार निकालों,
भाँसों, भूसी, बालू चालों;
जेन्हैं सद्गुण भाव उठै छै,
दुर्गुण केरों साथ छुटै छै।
सद्धरमों लें समय की निश्चित?
जखनी चाहों, तखनी शोभित।
घृणा, द्वेष जे छौं, ऊ त्यागों!
आय समय छै, अय्ये जागों!

अभ्यासों सें संभव की नै?
आकाशों में चद्दर बीनै।
सदाचरण निर्वाण दिलैथौं,
जे कुछ नै पैलों छों, ऐथौं;
जे निछलों-बिछलों छै, पावों,
संघ-धर्म खुल्ला छै, आवों!

(अँगुलीमाल अपनों पीठी सें बंधलों तलवार उतारी कें एक दिश राखी दै छै आरो बुद्ध के सम्मुख नतमस्तक होय जाय छै। एकरों साथे अँगुलीमाल रों वचन गूंजै छै।)

बुद्धं शरणम् गच्छामि
सघं शरणम् गच्छामि
धम्मं शरणम् गच्छामि।

(पर्दा-पतन।)

विशाखा

(कुटिया के बाहर बुद्ध पालथी मारलें आनंद सें बात करी रहलों छै, तखनिये भिजली-तितली विशाखा रों आगमन, जे बुद्ध के नगीच आवी कें ठेहुना बलों बैठी रहै छै।)

बुद्ध :

हाय, विशाखा ई धराण मैं
कैन्हें छों? की कारण छेकै?
खुल्ला चूल, उतरलों चेहरा!
पानी में के पत्थल फेकै?
बदहवास रं भिजलों-तितलों
ऐली छों हमरा लुग कैन्हें?
जे कुछ होतै बात, बाद में
अपनों दुख बोली दा पहिनें!
की सासें कुछ बात कहलकौं
या ससुरें कटु वचन उठैलकौं?
माय के पक्ष लियै में ननदें
उटपटांग रं बोली देलकौं?
किए हफसलों धतपत-धतपत
असकल्ली हेना तोंय ऐला?
की रं झोंर-झकासों, झकसी,
वै पर ई संझकी ठो वेला!
कारण कुछ-नें-कुछ विशेष छै
किएँ विशाखा रों ई भेष छै?

विशाखा :

हे गुरुदेव, कहै छी सच-सच
नै तें ननद सें बाताबाती,
आरो नै तें सास-ससुर ही
तिक्खों बोललों छै कल राती।

ई सब हेनों दुख तें तिरिया
जना हुवै छै, सहिये लै छै,
लोरों के बोहों में उबडुब,
कानी-काटी बहिये लै छै।
हमरों दुख तें दुख पर भारी
ऐलों छी, तें सब कुछ हारी।

बुद्ध :

की होलों छौं, कही सुनावों,
होनै कें, जैमें सुख पावों!

विशाखा : (कपसतें।)

हे गुरुदेव, कना कें कहियौं
हमरों छोटका ठो परपोता
अय्ये भोरे गेलै उजाड़ी
हमरों अँचरा केरों खोता।
आवै में जे देरी भेलै,
दुर्दिन केरों फेरी भेलै।

बुद्ध :

दुख सें एत्तें दुखित हुवों नै,
एकरों आगू कहों; कहौं की,
धीरज रखों कहों खोली कें
परपोता बीमार रहौं की?

विशाखा : (लोर पोछतें।)

हे गुरुदेव, रोगिये छेलै
मालत माय देहों पर लहरै,
जे मनौन भी नै मानै छै
भला केना कें बुतरू ठहरै!

बुद्ध :

कहों विशाखा, परपोता ठो
कै सालों के होथौं तहियो?
एकरा सें कम नहियें होथौं
तीन बरस नहियो-तें-नहियो।

विशाखा : (लोर पोछतें।)

हों, हों, जे नुकसान होलों छै
तीन बरस के ही ऊ छेलै,
जानौं कहाँ पारलौं हम्में
कखनी-केना कहाँ नुकैलै!

बुद्ध :

अच्छा, कहों विशाखा आबें
तोरा बेटा-पोता कैठो?
परपोतो के गिनती करियों
नुकसानों के बादो जैठो।

विशाखा : (फेनु लोर पोछतें होलें।)

श्रीमन सोलह बच्चा हमरों
वैमें नों ठो बिहैलों होलों,
नवो बिहैलों सें नो पोता,
दू कम, तें परपोता सोल्हों।
वैमें एक परपोता खोलां
की कहियौं, कत्तें की करलौं!
कोंन पाप करलां, भोगै लें
आबें जे जीवन ई धरलौं।

बुद्ध :

माय सें दादी, परदादी छों
तहियो हाही कें तोंय बीछों,

कत्तें परपोता-छरपोता
के किंछा सें मन कें सींचौं?
जे किंछा छौं तोरों मन में?
नै देखलौं ई आग भुवन में!

विशाखा :

श्रीमन, क्षमा! यही आगिन तें
खूब जियै लें बोंल बढ़ावै,
जत्तें सोचियै छरपोता के
ई सब ओत्तै कोंल बढ़ावै।

बुद्ध :

रुकों विशाखा, की चाहै छों
अनपट्टों पोता-परपोतो!
मन में ई किंछा ठो होथौं—
देखी लौं ढेरे छरपोतो?

विशाखा :

श्रीमन, ओत्तें तें नै जानौं,
अपनों मन कें पर पहचानौं;
मन में एक्के चाह पलै छै
गुग्गुल-धुमनों जकां जलै छै,
पूछों; बुतरू चाही कत्तें?
श्रावस्ती में लोग छै जत्तें;
भरलों हमरों महल-अटारी
गूंजें, तें गूंजें किलकारी।
हे गुरुदेव, यही किंछा बस
दरमस्सी मन रहै छी कसमस।

बुद्ध :

की बोलै छौं, रुकों विशाखा!
ई तें नै भिक्खु के भाखा;
की जानै छौं श्रावस्ती में
रोजे कत्तें लोग मरै छै?
कहाँ-कहाँ कत्तें टोला ठो
फगदोलों लुग हकन करै छै?
कहों विशाखा जों जानै छौं,
संघ-नियम कें जों मानै छौं!

विशाखा :

श्रीमन, कम-सें-कम तें पाँचो
निश्चित छै फगदोल उठै छै,
ऊ दिन भागे ही बस समझों
जे दिन एक्के साँस टूटै छै।

बुद्ध :

रुकों, रुकों! आगू नै बोलों,
तोरों दुख के भेद यही में,
ई तोरों किंछा छौं हेनों
भरतौं की, जों छेद यही में?
जों चाहै छौं ओत्तें बुतरू
जत्तें श्रावस्ती में जन छै,
की परिणाम निकलथौं एकरों
ई बूझों, मुश्किल वर्णन छै!
अखनी तोरों जे धराण छौं
लोर संभारै नै पारै छौं,
एक्के खोंर उड़ै पर है रं;
आँधी में छप्पर छारै छौं!
अभिये तोरों ई धराण छौं
जिनगी ई रोते ही रहथौं,

इखनी लोर तें आँखे भर छौं
चानन के बाहों रं बहथौं।
इखनी तें बरसा सें भिंजलों
तोरों देहों पर साड़ी छौं,
संतति-हाही नरक-पीर रं
बुझों, डेढ़िये पर ठाड़ी छौं।
मज्झिम राह चलों, तें सुख छै
हाही में सब दुख छिपलों छै,
खाली गोड़ बुलों नै हेनों
जेठ रेत पर जों धिपलों छै।

विशाखा : (हाथ जोड़तें।)
क्षमा, क्षमा, दा क्षमा! क्षमामय,
याद रहें धरमों के आशय!
मोहे में ही डुबलों छेलां,
"मोहे दुख छै" भुल्लों छेलां!
ई देहो तें दुख के कारण,
वै पर हाही; नरके ही तें,
ठीक क्रिया, उद्देश्य, वचन में
बाकी हमरों जीवन बीतें!
जे शरीर दुख के ही कारण,
ऊ शरीर लें केन्हों मोहे?
ई तें पकलों रं फसलों पर
बरखा ही रों बहलों बोहों।
याद दिलैलौ, ज्ञान करैलौ,
तिमिर-घटा घनघोर नशैलौ;
पोता, परपोता, छरपोता–
केरों सपना, उड़लों तोता!
आबें मोंन नै कलपित्तों छै,
मरलों मोंन लगै जित्तों छै!

(माथा कें धरती सें टिकैतें आरो धरतिये पर दोनो हाथ जोड़तें प्रणाम के मुद्रा में विशाखा झुकी जाय छै।)

(पर्दा-पतन।)

बुद्धं शरणम् गच्छामि

(नेपथ्य में वेद-पाठ उभरी कें शांत होय जाय छै। पाँच शिष्य के साथ बैठलों सोणदंड कुछ चिन्तित मुद्रा में दिखाय पड़ै छै।)

सोणदंड :

जगह-जगह पर आय बुद्ध के
करतें रहै छै हुनके चर्चा,
की बूढ़ों, की जोंर-जनानी
छोंर-छवारिक सें लै बच्चा।
बात करै छै बस बुद्धे के,
से कत्तें बड़का ऊ ज्ञानी!
जाय कें जाँचै लें ही पड़तै,
थाही कें रहवै ही पानी।
होन्हौ कें जेकरों ई चर्चा
हौ नै होतै हेन्हों-तेन्हों,
अंग देश के रोआँ-रोआँ
रोमांचित छै पावी एन्हों।
मिलवै आय जरूरे जाय कें
रहवै आय समुन्दर थाय कें।

शिष्य १ :

बुद्ध नै ऐतै, तोही जैवौ
यैमें तोरों मान नै होथै,
सोचों, तोरों ई निश्चय सें
चंपा रों अपमान नै होथै?
तोरों रं के पंडित-ज्ञानी?
उतरी जाय केकरों नै पानी!

सोणदंड :

तोहें सब छों ज्ञानी चटिया
जे कहलौ, सब्भे टा सच्चे,
मतुर बुद्ध तांय जैवों हमरों
सब्भे ढंग सें होतै अच्छे।
की कहियौं तोराहै आबें
मन सें हारलों हेनों लागौं
फेनू मौको ई की मिलतै,
नींद लगै सें पैहिले जागौं।
चलों तहूं सब हमरों संग में,
बुद्ध विराजै चंपा-अंग में।

(सब्भे शिष्य साथें सोनदंड एक दिस प्रस्थान करै छै।)

दृश्य-दू

(बुद्ध आपनों शिष्य सिनी साथें आश्रम के बाहर बैठलों छै। सोणदंड कें सामना में पावी बुद्ध खाड़ों होय जाय छै, तें सोणदंडो अभिवादन करै छै। जल्दिये सोणदंड दर्शक दिस आवी कें स्वगत वचन करै छै।)

सोणदंड :

हाय, कहाँ सें कोंन विषय पर
बात करौं, नै समझें पारौं,
हौलदिल कैन्हें होलों जाय छी
विषम समय छै, केना टारौं!
सचमुच बुद्ध अगर जों ज्ञानी,
मन के चिन्ता लेतै जानी।

(सोणदंड लौटी कें बुद्ध के नगीच आवी जाय छै।)

बुद्ध :

तोरों मन के भाव बुझी कें
हम्मी तोरा सें पूछै छी–

श्रेष्ठ विप्र केकरा तोंय कहभौ
बात बतैय्यों बीछी-बीछी!

(बुद्ध के प्रश्न सुनथैं सोनदंड प्रसन्नचित्त दिखें लागै छै आरो समझावै के मुद्रा में दायाँ हाथ ऊपर-नीचें करतें बोलें लागै छै।)

सोणदंड :

भिक्खु गौतम, उत्तर जानों
श्रेष्ठ विप्र के गुण पहचानों—
जे व्यक्तिवे सें नै सुन्दर,
कर्मकांड में घोर निपुण छै;
मंत्रोच्चार करै में ओन्हे,
शुद्ध लहू के जैमें गुण छै।
पँचमों खूबी कर्म, अनूठा ज्ञान,
धरती पर ऊ श्रेष्ठ विप्र, भगवान!

(सोणदंड के पाँचो शिष्य हाथ उठाय-उठाय कें बोलें लागै छै, "आचार्य जी रों कथन एकदम सत्य छै, एकदम सत्य छै।" बुद्ध हाथ के संकेत सें सबकें शांत हुऐ के इशारा करै छै।)

बुद्ध :

सोणदंड, तोहें जे कहलौ
पाँच गुणों कें चुनी-चुनी कें,
की यैमें कुछ गिरै लायक छै?
छोड़लों जावें आँख मुनी कें?

सोणदंड : (एक क्षण चुप रहला के बाद।)

भिक्खु गौतम, ठिक्के पुछलौ,
ओरी के जे गुण छै तीनो,

ऊ सब छोड़लो जावें पारें
ओकरा कहें सकै छों, हीनो।
कर्मकाण्ड की, दपदप रूपो,
सात पुश्त सें लहू पवित्तर,
ई सब छोड़लो जावें पारें
तोरों प्रश्नों के ई उत्तर।

(सोणदंड के सब शिष्य ई बात के विरोध करतें बोली उठै छै, "आचार्यजी के बात अनुचित छै, आचार्यजी के बात अनुचित छै।)

बुद्ध : (इशारा से उत्तेजित शिष्य कें शांत करतें हुएँ।)
रुकों-रुकों, व्यवहार संभालों!
जों लागै छौं, बात गलत ई,
तें सच की? समझावों हमरा
तोरा में कोय; हिन्नें आवी!

(सोणदंड के सब शिष्य एक दूसरा के मुँह देखतें खाड़े रहै छै।)

सोणदंड :
शिष्य, सुनों धीरज कें धरनें-
पितयैतों भाय अंगद हमरों
सात पुश्त सें शुद्ध लहू सें;
देखलै सें मन गदगद हमरों।
कर्मकाण्ड के होने ज्ञानी
जेहनों वेद उचारै में छै,
मतुर कहों, की करतै ई सब
जों हौ शील-विचारे नै छै?
हत्यारा छै, घोर शराबी
घरढुक्की में छै बढ़िये कें,

की होतै रूपों-वंशों सें,
जों अंगद ऊपर चढ़िये कें?

(सोणदंड के कथन सुनी भगवान बुद्ध अपनों हाथ आशीर्वाद के मुद्रा में उठैतें कहै छै।)

बुद्ध :

सोणदंड, तोय सत्य बतैलौ,
कर्म-ज्ञान ही सत्य जगत में;
कुछ नै रखलों कर्मकाण्ड में
सात पुश्त सें शुद्ध रक्त में।
सोणदंड, की बोलें पारों—
ज्ञान-कर्म में के उच्चों छै?
जों तेजै लें पड़ें, तें ऊ की?
दोनो ठो में कोय बुच्चों छै?

सोणदंड :

भिक्खु गौतम, ज्ञान-कर्म में
ऊँच-नीच के भेद कहाँ छै,
दुसरा के बिन एक अधूरा
जहाँ कि दोनो; मोद वहाँ छै।

बुद्ध : (बेहद प्रसन्न मुद्रा में।)

साधुवाद, हे सोमदंड, छौं,
तोहें कहलौ सत्य वचन कें,
की तोहें ई बोलें पारों—
कना बचैलों जाय ई धन कें?

सोणदंड : (झुकी कें प्रणाम करतें हुएँ।)
हे गुरुदेव, की कहियौं हम्में
ऊ तें तोहीं मार्ग बतैभौ,
हम्में तें सिद्धांते जानौं
यैमें हमरा कोरा पैभौ।

(सोणदंड के हाथ जुटले रहै छै।)

बुद्ध :
सोणदंड, बस शीले टा सें
ठीक ज्ञान कें पावें पारों,
ठीक साधना, ध्यान ठीक तें
ठीक ज्ञान कें लावें पारों।
वचन ठीक, उद्देश्य ठीक छै,
ठीक जीविका, ठीक धरम छै;
दूर-दूर छै मोह अगर जों
निब्बाणो के निकट रतन छै।

सोणदंड : (पहिलके मुद्रा में रहीकें बोलै छै।)
गुरुवर, हम्में धन्य-धन्य छी–
बुद्ध शरण में जाय छी हम्में,
धम्म शरण में जाय छी हम्में,
संघ शरण में जाय छी हम्में!

(नेपथ्य में एक्के साथ सब्भे शिष्यों के एक्के साथ स्वर उठै छै।)

बुद्धं शरणं गच्छामि!
धम्मं शरणं गच्छामि!
संघं शरणं गच्छामि!

(पर्दा-पतन।)

करिया झुम्मर खेलै छी

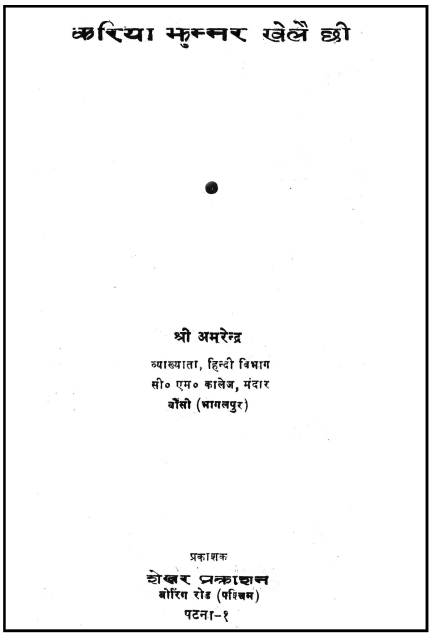

प्रथम प्रकाशन
१९८२

प्रकाशक
शेखर प्रकाशन, पटना (बिहार)

भूमिका

श्री अमरेन्द्र जी अंगिका के बड़ा ही लोकप्रिय कवि छोंत। हिनी आपनों कविता सुकंठ सें गावी कें जबें सुनाय छै, तें जनता झूमी उठै छै। हर कविता में प्रवाह, माधुर्य आरो समाज के स्पष्ट चित्र अंकित छै। कविता सहज, सरल आरो बोधगम्य छै। हिनकों कविता सुनी कें लोग प्रफुल्लित होय जाय छै। हर कविता के शीर्षक अंगिकांचल में प्रचलित लोरी आरो फैकड़ा के अंश छेकै। कवि कें ई कविता-संग्रह के लेली बहुत-बहुत

ताड़ काटूँ, तरकुन काटूँ

ताड़ काटूँ, तरकुन काटूँ,
काटूँ रे वनखाजा,
हाथी पर जों घुंधरू
ठुमुक चले राजा।

ठाठों में चिरैया चहकै,
मन में सौ-सौ फोड़ा टहकै;
घोल्टू के जे बाबू गेलै,
आबें तें दू बरखा भेलै;
जब, सें शहरों में गेलों छै,
चिट्ठी एक्को नै देलों छै;
हेनों की निठुराई अच्छा
नौकरी सें बढ़ियां भिच्छा;
सूनों-सूनों घोंर लगै छै,
मन में सौ फोड़ा टहकै छै;
घर-धंधा में की मन लगतै,
रात कटै छै हमरों जगथैं;
खाली असगुन रही-रही आवै,
केना नै ई मन घबरावै,
अय्ये लिखवै चिट्ठी, कबतक
सुनवै सबके ताना!

प्राणनाथ बस ई जानै छी,
प्रेमे पावै लें तरसै छी;
चिंता नै तोहें कुछ करिहों,
ठिक्के छी, तोहें नै डरिहों;

घोल्टू नें इन्तहान जे देलकौं,
दूसरी अबकी पास करलकौं;
हाल-चाल सबके अच्छा छै,
देवर झगड़े छौं; बच्चा छै;
दादा परसू ही ऐलोॅ छौं,
तोहें आवोॅ, ई कहलेॅ छौं;
समझाना छै की केकरा केॅ,
झगड़ा चलथौं बस लै दै केॅ;
खेतोॅ के झगड़ा में अबकी,
तोहें नै अय्योॅ कैन्हें कि
मंगवैलोॅ छौं लाठी-भाला,
फरसा आरो गड़ासा ।

गाँमोॅ केरी सितिया खातिर,
देवर रहै छौं बाहिर-बाहिर;
गाँव-टोला में कानाफूसी,
कहवै केकरा सेॅ बोलोॅ की;
ललचनमाँ-कैलु के संग में,
हिहियो रंगलोॅ छौं वही रंग में;
डाँटोॅ तेॅ गलथोथरी करथौं,
बचलोॅ इज्जत आबेॅ जैथौं;
हीरोइन के माने की छै ?
सबकेॅ ऊ येहेॅ बोलै छै;
मुश्किल छै लड़की के चलना,
सीटी मारे छौं फुलचनमा;
भितरी मन के बात कहै छी,
डरलोॅ-डरलोॅ हमू रहै छी;
हाथ कभी पकड़ी केॅ छूथौं,
हमरोॅ कान के पासा ।

गामों के की हाल सुनैय्यौं,
केकरों-केकरों चाल सुनैय्यौं–
सिरचन दा, कैलू दा अबकी,
दोनों ईलकसन के वक्ती
लड़लौं खून-खराबा भेलौं;
गाँव में पाटीसन भै गेलौं;
बिकवर्ड-फुरवर्ड, की बोलै छै,
समझै में कुछ नै आवै छै;
सबकें सबसें डोंर छै लगलों
सबकें देखभौ रातौं जगलों;
गाँमों में की जी लागै छै,
मन व्याकुल जेना दागै छै;
लिक्खों की कहिया आबै छों
आरो हमरा लै जावै छों;
अबकी तें हरगिज नै भुलयों
लुंगा - चोली - साया!

रौदा उग रे ऐंगना

रौदा उग रे ऐंगना, मुर्गी देवौ चखना
ठंडा में ठिठूरी रहलों छै–बेटा, भतीजा, भैगना!

ई माघों के पल्ला में, भीत-दुआरी खुल्ला में
केना रहतै बुतरू, ओढ़ना लें कानै छै बीरना!

सब्भे अपनों घुसलों घोंर, ओकरौ में सब बोरसी तोंर,
रूय्यो तोंर भी जाड़ा लागै, की फेरू ई ओढ़ना!

कपड़ा नै एक हालों के, कम्बल ई छों सालों के
छाती ढकों तें खुल्ला रहै छै माथों नीचूँ ठेहुना!

शीतलहरी छै जोरों पर, प्रान रहै छै ठोरों पर,
जेना कि काटै छी जिनगी, के काटै छै एहना!

हों-हों ठंडी बहै छै, हड्डी-हड्डी डंसै छै,
थर-थर काँपौं पुरबा में पीपर के पत्ता जेहना।

चहियौं अगर जों कीनै लें, कुछ बेची कें पिहनै लें,
पौरकैं बिकले साहू के कर्जा दै में सब गहना।

चेथरी-चेथरी साटै छी, जाड़ केन्हौं कें काटै छी,
की करवै जों आवी गेलै हेनों हालो में पहुना!

अलिया गे, झलिया गे

अलिया गे, झलिया गे, बाप गेलौ पुरैनिया गे,
कैंथी लें तोहें कानै छैं, बात कुछू की जानै छैं,
नौकरी कैरै गेलों छौ, है ले पैसा देलों छौ,
जेहना होवौ काम चलाव, दुख के आरो कुछ दिन दाव,
लोर आँखी सें पोछी ले, खेलें ता-ता थैय्या गे ।
अलिया गे, झलिया गे, बाप गेलौ पुरैनिया गे ।

दुख के दिन कुच्छू रहलौ, सुख के दिन आवी चललौ,
खैय्यें-पीवियें सुक्खों सें, अब तक रहले दुक्खों सें,
भाग फिरै छै सब्भे के, दुख नौ के सुख नब्बे के,
हाँसें-हाँसें आबें तें आबी चललौ मैय्या गे,
अलिया गे, झलिया गे, बाप गेलौ पुरैनिया गे ।

इखनी रहै छैं बारी में, तोहीं रैहवै अटारी में
कोंर कोठी होतो देखियैं, रानी रं बैठलों रहियैं,

राजा ब्याहै लें ऐतौं, सब्भे तोहरों गुन गैतौ,
तेंबें तोहरों लें कहाँ, बाबू आरो भैय्या गे।
अलिया गे, झलिया गे, बाप गेलौ पुरैनिया गे ।

अड़गड़ मारूं, बड़गड़ मारूं

अड़गड़ मारूं, बड़गड़ मारूं; बसिया भात खोली-खोली खांव!
दोंस दुआरी घुरी-घुरी ऐलौं, सब्भे ठां दुतकारे पैलौं,
की दूसरा के? आपनो होने, केकरों पास नै हम्में गेलौं;
आबें बोलों कन्ने जांव, बसिया भात खोली-खोली खांव!
केकरों की विश्वास सुदमियां, बदली गेलै पूत-दुल्हैनियां,
ऊ भुक्खों सें मेंरै तड़पै, जेकरों कोख के बेटा कमियां,
दौड़तें-धुपतें दुखलों पांव, बसिया भात खोली-खोली खांव!
दोनो मिली कें मौज उड़ाबै, की साथों में गाना गावै!
हम्में ओसरा पर सुतलों छी, एकरों केकरौ लाज न आवै;
अंगरेजी में की घांव-घांव, बसिया भात खोली-खोली खांव!
हमरों भागे फुटलों छेलों, बेटा नांखी पतुहुवो भेलों,
लंगड़ों बोंर दुल्हैनो कानी, दोनो छै देवै के माँगलों,
एक मूसों तें दूसरों म्यांऊ, बसिया भात खोली-खोली खांव!

हिन्नें लोढ़ी हुन्नें पाटी

हिन्नें लोढ़ी हुन्नें पाटी, सकर कन्न बीजू बन्न!
देखी अयलौं शहरो कें भी, गाँवों कें तें देखले छै;
के बचैतै दोनों कें ? संहार दोनों के लिखले छै;
झुट्ठे हल्ला छेलै कि लोगों कें चैन छै शहरों में
प्राण उठै छै अमरित में भी, नै खाली ई जहरों में,
खून-खराबी, कोर्ट-कचहरी, मोंर-मोकदमा रोजे-रोज,
खून करै छै कौनें केकरों पुलिस करै छै केकरों खोज;
हरदम्मे छाती सें सटलों छूरा-बन्दूक की-की नै,
कना रहै छै तौ पर भी सब ? काका, लोग वहाँकरों धन्न!

गाँवों में की सुख छै काका? वहें डकैती मारे-पीट,
बड़का मैलकौं के हौ जूता, आरो हमरों खुल्ला पीठ;
शहरे हेनों मारबों-काटबों, औरत के इज्जत सें खेल,
बीच-बचाव करों तें काका, उल्टे जैभा थाना-जेल;
पुजते रेंहों जिनगी भर, फेरू ई सोंर-सिपाही कें,
के चाहै छै भोगै लें ई नरक, कहों नी, चाही कें ?
बोलों माथा कहाँ बचाय लें जैभा कक्का! शहरों में ?
दोनों तरफें पथरे राखलों, सोची कें हम्में छी सन्न ।

सब जग्घों के एक्के रं लोग, सब जग्घों के एक्के हाल,
काँटों गाछ में काँटे जादा, जोंड़ रहें ऊ या कि डाल;
निकलों नै गल्ली -कुच्ची में, निकलों नै चौराहा पर,
की काका विश्वास करै छों ई लोगों बौराहा पर;
नै बूझे छै प्रेम-दया कुछ, धोंर-धरम के बाते की,
जे साथी रस्ता में लूटें, ऊ साथी के साथी की!
मारी दै कि काटी दै पर केंहै लें नै छोड़वै ई कि
आय सुरच्छा ओतनै महगों—जतना की महगों छै अन्न ।

कागज-कत्तर कलम-दवात

कागज-कत्तर कलम-दवात, ईंटा-मांटी सोना के ठाठ,
ईंटा-मांटी सोना के ठाठ, ठाठ गिराय दैं पूरे आठ।

पूरे आठ करै छै शासन, बाँकी तें पावै लें भासन,
जाँच कमीशन, अनशन-बैठक, रोज पढ़ैथौं नैका पाठ।

लम्बा-चौड़ा बाते खाली, हर कामों में हाथे खाली,
मोंन मुताबिक कुछ नैं मिलथौं, देखै के बड़का ठो हाट!

पाँच बरिस में मोहर मारों, मिलथौं कारखी दीया बारों,
हूनी तें चन्दन रं महगों, हम्में की ? हममें तें काठ!

अखबारों में हल्ला खाली, सौंसे देश में गल्ला खाली,
राजघाट कें छोड़ों तोहें, देखों आपनों-आपनों घाट।

सा रे ग ग रे सा ग म, एक कोठरी में आठ ठो हम्में,
हुनका कोठी अकेले चहियों, देखी ला पटना के लाट !

औका-बौका तीन तड़ौका

औका-बौका तीन तड़ौका, लौआ-लाठी-चन्दन-काठी,
बाग रे बगडोल-डोल, आबें की लोगों के मोल!

लोगों सें जादा तें दाम, मिट्टी के आबें हे राम!
नरमेघों के होम हुवाम, जानों के दू टाका दाम!
इक-दू टा नै छै बदनाम, कत्तें कैटभ के ई काम,
लोगों के छीलै छै चाम, जानों के दू टाका दाम!
भोरे होय छै राम-सलाम, साँझे हुनकों काम तमाम!
होले जाय छै मँहगों माँटी, लौआ-लाठी, चन्दन-काठी,
बाग रे बगडोल-डोल, आबें की लोगों के मोल!

ई केहनों भागों के चाल, लोगों लें लोगे छै काल!
मिट्टी लोहू सें छै लाल, लोगों लें लोगे छै काल!
सगरे सन्नाटा रों जाल, लोगों लें लोगे छै काल!
ऐलों छै केहनों ई काल, नरमुंडों रों पिहनी माल,
नांचै छै उमतैलों व्याल, लोगों लें लोगे छै काल!
हम्में तोहें पाठा-पाठी, लौआ-लाठी, चन्दन-काठी,
बाग रे बगडोल-डोल, आबें की लोगों के मोल!

इति-इति पुड़िया, पकड़ कनैठिया

इति-इति पुड़िया, घीयों में चपोड़िया, मैदा के धूमधाम ना,
हाय राम मैदा के धूलधाम ना, हाय राम मैदा के धूमधाम
इति-इति पुड़िया, पकड़ कनैठिया ना।
मिली-जुली खैवै, घुमी-फिरी ऐवै, टोला के टोला ना,
हाय राम टोला के टोला ना, हाय राम टोला के टोला,
घूमी-फिरी ऐवै, धूमो मचैबै ना।
पहलें जैवै पुवारी टोलों मंटू काका कन ना,
हाय राम जोगी चाचा कन ना, हाय राम तनकू चाचा कें
गोड़ें लगवै, मिठ्ठों खिलैतै ना।
पछियारी टोला में सबसें पहलें पुरहैत चाचा कन ना
हाय राम फेरू वहाँ सें ना, हाय राम फेरू वहाँ सें
मिसिर काका कन खेला खेलवै ना।
देखी-देखी हाँसतै, आपनो खेलतै हमरों संग में ना
हाय राम कान्हा चढ़ैतै ना, हाय राम माथों पर हमरों
हाथ रखी कें आशीषो देतै ना।
उतराहा टोलों के मंडल बाबा कें गोड़ो भी लागबै ना,
हाय राम खानो भी खैवै ना, हाय राम हुनकों बैठैवै
अपनों बैठवै, खिस्सो भी सुनवै ना।
दखनाहा टोलों के गोपी दादा कन जैवै पर बोलवै नै
हाय राम गोड़े धरी कें ना, हाय राम कानवै खाली
बोलवै गाँम कें कैहनें विसरलौ ना।
आबें नैं जय्यों हो गोपी दा, धरी भरी पांजों कहवै ना,
हाय राम कानी-कानी कहवै ना, हाय राम बीजू वन नै
जय्यों दादा हमरा बिसारी ना।
गामे हभांक हेनों लागै छै दादा, टोले नै खाली ना
हाय राम घोंरे नै खाली ना, हाय राम गाँमे में रहों
गेलों बुलावों, मेला लगावों ना।

तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी

अपनों गाँव कें भूली देखों शहरों के गुनगान करौं,
माय के हुऍ पारलों नै तें मौगी के सम्मान करौं;
देखों पेटों लें शहरी के तलवा कें सहलाय छी,
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!
हम्में तें गाँवों के गँवई, 'रूपसा' हमरो गाँव हो,
रोटिये फेरों में नै पड़लों घर पर हमरों पाँव हो;
चार ठो पैसा लें गाँवों कें छोड़ी कें पछताय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

गिरतें होतों छप्पर-देहरी झोंर-हवा में भाय हो,
कोय नै हमरा खबर करै छै, देलें छै अनठाय हो;
की करवों, रोजी कें छोड़ी गाँव केना कें जाय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

औसरा पर संदूक हौ बड़का कोय तें लइये गेलों होतै,
बाबा कें बनवैलों छेलै, हुनकों आतमा कत्तें रोतै;
मन कें कोंल पड़ै नै, मन कें कत्तो भी समझाय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

तुलसीचौरा रों तुलसी के जोंड़ सूखी गेलों होतै,
एक्को ठो लोगों के बिन तें घोंर भुताहा रं होतै;
सब्भे तें रेंनें वेंनें छै—सोची कें पछताय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

केहनों होतै गोपी काका, केहनों छोटका बाबा हो,
केना रहती होती चाची आरो आबिद चाचा हो;
देखै लें पंचकौड़ी दा कें तरसी-तरसी जाय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

खूब बियैतें होतै अभियो मंडलका के गाय नें,
कथी लें बेचियो देलकै नी है रं गाय कें माय नें;
कंटोली रोटी में दूधो पनछेछरों रँ खाय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै दी, अपने डेंगिया ढाय छी!

चानन नद्दी में हौ छप-छप, पानी चुआंड़ी के पीवों;
अट्ठा गोटी खेले लेली चिकनों पत्थर कें चुनवों;
बहियारों में हेनै भटकै लेली अबें ललाय छी!
तोहरों डेंगिया खूब पूजै छी, अपने डेंगिया ढाय छी!

कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर

''कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर,
कनियाँय-माय कें लै गेलै चोर,
कनियांय-माय कें लै गेलै चोर,
दौड़ों हो शहर के लोग!''

''बीरना माय कहिनें कानै छों,
हमरों कैहलों नै मानै छों,
लै गेलै चोर, तें लै जाबै लें दौ,
आपनों करनी कें पाबै लें दौ,
पिहनी कें साड़ी चमकौआ,
तेल माथा में की महकौआ!
टैम देखै लें घड़ियो लेलें,
बड़का बटुआ की लटकैलें,
देह उघारी कें ऐठ्ठै छेली,
सबमें अलगे छुट्टे छेली!
आँख में काजर डाली कें सेथरों,
फसली जाल में लेलकी केकरों!
फैसन-पाटी सजबों हौ रं,
माय गे माय, की फाटबों हौ रं!

माथा पर नै अँचरा जरियो,
ठिक्के ऐलै कलजुग घोर!
कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर,
कनियाँय-माय कें लै गेलै चोर।

"बुतरू हेनों की कानै छों,
सच कें तोहें की जानै छों,
बोलै छेली सब सें मुस्की,
सौंसे बस्ती में कनफुस्की;
है रं हाँसबों के की मानै,
बड़का की, छोटकौं भी जानै।
जन्नें जा हुन्ने हल्ला छौं,
बात दबावों तें अच्छा छौं;
कीचड़ में ढेला फेकला सें
की मिलतौ ई चिल्लैला सें?
दस ठो सुनथौं, हाँसतौं नै की ?
है उमिरों पर बोलों है की ?
है रं भोकरी कें की कानवों,
पोछों नी आँखी के लोर!
कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर,
कनियाँय-माय कें लै गेलै चोर ।

"कनियाँय-माय कें चोर लै गेलौं,
थोड़े टा अपजस नी भेलौं,
हिन्नें तें गाँवों कें सौंसे,
लै गेलै मुखिया उल्टे धौंसै;
देश गेलै लीडर के साथें,
कानून कोर्ट-कचहरी हाथें,
गेलै मास्टर साथैं शिक्षा,
पुरजी लै कें होय छै परीक्षा,

उल्टा-पुल्टा सब्भे भेलै,
थाना घुसखोरी संग गेलै;
सास-पुतोहू के झगड़ा में,
घर गेलै, घरवैया गेलै!
सगरो के एक्के खिस्सा छै,
कानवा, के कहतौं अच्छा छै!
ई तें अन्हरिया भोगै लें लागथौं,
लानलें छेली घर में इंजोर!
कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर,
कनियाँय-माय कें लै गेलै चोर।

''हुनका कन्नें-कन्नें खोजवा,
कन्नें दिवसे-राती रहवा?
शहरों के सब चोर-उच्चका,
देथौं हिन्नें-हुन्नें धक्का;
चाट्ठों पीछुवे-पीछू रहथौं,
बिन्दु, राखी, हेमा, कैहथौं;
चाल-चलन केकरो अच्छा नै,
आबें तें बच्चो बच्चा नै;
अपनों कोय नै यहाँ पें होथौं,
तोही कानवा, कोय नै रोथौं
हमरों कैहलों मानों, लौटों!
एत्तें जी कें करों नै छोटों!
है जे पुलिस छौं—की समझै छौ,
दुनियाँ कें तोहें की जानै छों,
झुट्ठे जेल तोरा लै जैथौं,
राखतौं वैठां भोरमभोर।
कनियाँय-मनियाँय झिंगा-झोर,
कनियाँय-माय कें लै गेलै चोर ।''

सुइया हेराय गेलों खोजी दे

"सुइया हेराय गेलों खोजी दे"
"केना हेराय गेलों दादी गे?
भौजी तोरों नै छौ सीधी गे,
सुइया लें ठुनकों चलैथो गे,
भय्यो बचाय लें नै ऐथौ गे।
बंदूक लेलों जेनों फौजी के,
होने रबैया छौ भौजी के;
बड्डी मनाय छेलैं देवी सें
दुरगा माय, दुरगा माय भौजी दे"

"सुइया हेराय गेलों खोजी दे!"
"देखले नी माँगी कें दीदी गे,
तोहें बड़ी ही छै सीधी गे;
अच्छा निभाय लें ई जानी ले
दिले नै सब कुछ छै मानी ले।
तोहरौ जों होतियो झलारों गे
रैथिहैं की हेन्हे उघारों गे?
इज्जत सें रहै लें देवी सें
माँगे-मनावें कि रोजी दे!
सुइया हेराय गेलों खोजी दे।"

अंतर-मंतर घोंघा-साड़ी

अंतर-मंतर, घोंघा-साड़ी, बुढ़िया थूकै लौंग-सुपाड़ी।
लौंग-सुपाड़ी सें की होतै, चार दिनों के भूख की जैतै!
रग-रग टूटै चार दिनों सें, लोर छुटै छै चार दिनों सें;
जीयै के नै मोंन करै छै, देहों केहनों—जे नै जरै छै!

कोंन उमीदी पर छै टिकलों, कोय भरपेट्टा, कोय तें भुखलों!
खूब विधाता के विधियो छै, कोय नंगा, कोय फर-फर साड़ी!
अंतर-मंतर घोंघा-साड़ी, बुढ़िया थूकै लौंग-सुपाड़ी।

बड़ा साब कन मौजे देखों, हिन्नें हाही रोजे देखों,
हुनकों घर आराम चुवै छै, हमरों घर में घाम चुवै छै;
तहियो दाना लें बिललावौं, कत्तें केकरा लग घिघयावौं!
के देखै छै केकरों दुख कें, सब पूछै छै अपने सुख कें;
देवो भी अन्हरों नै देखै, लोर चढ़ावौं रोजे ठाड़ी!
अंतर-मंतर घोंघा-साड़ी, बुढ़िया थूकै लौंग-सुपाड़ी।

पीरो-पित्तर सब कें पुजलौं, केकरा लुग कहिया नै गेलौं!
ठिक्के नी सब लोग कहै छै—अपने मरलों सरंग देखै छै।
आबें हम्में ही कुछ करवै, आखिर कब तक हेने मरवै?
सब नागै कें दूधो दै छै, ढोढ़बा कें कोय नै पूजै छै।
आखिर पोसला सें की फायदा—फुलचनिया माय अधकपाड़ी!
अंतर-मंतर, घोंघा-साड़ी, बुढ़िया थूकै लौंग-सुपाड़ी ।

धान कूटै धनियाँ

धान कूटै धनियाँ, बैठों बहिनियाँ,
केला के चोप लै कें दौड़े कुम्हैनियाँ।

एकों-एकों पत्ता पर सुपों भर धान छै,
अभी-अभी बरसा में करलें असनान छै;
झूमै, मतैलों रं खेतों के धान सब,
पुरतै किसानों के अबकी अरमान सब।
पुरवा के झोकों में उठै छै, गिरै छै,
देखै में हेन्हे कि साँप जेना तैरै छै;
राघो किसानों के दुलहैनिया ठुनकै छै
अबकी अगहनों में जैवै पुरैनियाँ ।

धानों पर बूँदों के मोती छै छिरयैलों,
हरियैलों धान देखी मनों छै हरियैलों;
धानों के जड़ी में पानी के रेत बहै,
मेंढ़ी पर बगुला-बराती के पाँत रहै।
उड़लै दू-चार, शेष ध्यानों में मस्त छै
आरो दू-चारों के मछली लें गस्त छै;
आपना औसारा पर आपनै में बात करै,
बात करी हाँसै छै साहू–सहुनियाँ ।

कलि गनेस देबा

कलिगनेस, कलिगनेस, कलिगनेस देवा,
लड्डुवन के भोग लागै, संत करै सेवा।

आपने खा, आपने हेनों कें खिलावों,
लछमी तें साथें छौं–पूँजी बढ़ावों।
संतै कें देभौ; कि हमरों भी देवा
कलिगनेस, कलिगनेस, कलिगनेस देवा।
भूखलों छी कै दिन सें तोरा की कहियौं,
आबें नै मोंन करै तोरा तक अइयौं;
रुसवे नी करभें तें हमरों की लेवा
कलिगनेस, कलिगनेस, कलिगनेस देवा।

छोड़ों ई ठाट-बाट आबें नै चलथौं,
बैठला सें लड्डू की, रोटियो नै मिलथौं;
हमरौ भी देखभौ, की तोंदे बढ़ैवा?
कलिगनेस, कलिगनेस, कलिगनेस देवा।

हमरे चढ़ैलों तोहें मूसा कें देभौ
हमरा परसादी लें कब तक तरसैभौ?

है रं जों करवा तें जाने नी लेवा!
कलिगनेस, कलिगनेस, कलिगनेस देवा।

के-के जैबे गंगा पार

कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार?

गंगा पार में मेला लागतै, पौंरके नांखी थियेटर ऐतै;
फेरू बजरंगी काका के चलतौ वैठां राग मल्हार।
कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार ?

अबकी तें नौटंकी संग-संग लानतै सॉर-सिनेमा भी रंग,
तरऊपरी पर ऊपर-नीचें जी भर करवै अबकी बार।
कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार?

टिकुली, पाउडर, फीता, लेवै, हिरिया कें जाय कें दिखलैवै,
चिढ़तै भीतरे-भीतर देखियैं, देखतै जखनी मोती के हार!
कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार ?

भागलपुर के बाबू ऐतौ, देखियैं की रं आँख दबैतौ,
बचिये कें तोरा सब रहियें, की रं हाँकतौं मोटर कार!
कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार ?

शहरों सें जादूगर ऐतै—आँख मूंदी कें नाम बतैतै;
सूना में चल पूछियै लेवै—कहिया उठतै बाबू के भार?
कन्ना गुजगुज महुआ के डार, के-के जैवे गंगा पार ?

एकों माथा पर

एकों माथा पर तित्तिर बुलै छै,
कोय नै लै छै मोल;
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

खाली तमाशा देखी कें हाँसै,
केहनों ई सब लोग,
आरो आपनों अच्छा होय के सब पीटै छै ढोल;
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

के बोलें केकरौ सें कुछछू
सबके एक्के चाल;
आपना कें सब तेज बूझै छै, दूसरा कें भुसगोल;
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

सब मौका के मारलों दीदी,
सब सुक्खों के यार,
जेकरा सें कुछ्छु फायदा छै, ओकरे आबें मोल;
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

इतियो टा विश्वास करै छै
केकरौ पर नै कोय,
बेसिये तें भेड़िये छै दीदी, पिन्हलें भेंड़ के खोल।
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

मानलौं कि हमरों गीतों में—
रस नै छै, नै बात,
सुग्गा के अच्छा लागै छै सबकें टेढ़ो लोल!
तित्तिर धीरें-धीरें बोल।

आमों के लकड़ी कड़ा-कड़ी

आमों के लकड़ी कड़ा-कड़ी,
हथिया दौड़ै तड़ा-तड़ी ।

जंगल के छोटका सब सोचै–
जे अच्छा छै, हाथिये नोचै।
बोलें के ? केकरा पड़लों छै,
दस के भी आँखे गड़लों छै;
सिंह सुधारों में की लगतै,
देखें हमरा खड़ा खड़ी।
आमों के लकड़ी कड़ा-कड़ी,
हथिया दौड़ै तड़ा तड़ी।
हे हो, हिन्नें साथें आवों,
अपनों धुन नै अलग बजावों;
जों जमात नै अपनों होथौं,
एकेक करी कें सबकें खैथौं!
भालुवो कें देखवे नी करै छौ
हर बातों में अड़ा-अड़ी!
आमों के लकड़ी कड़ा-कड़ी,
हथिया दौड़ै तड़ा-तड़ी ।

रघुपति राघव राजा राम

रघुपति राघव राजा राम, पतितपावन सीताराम!
के देशों में सब सें कोढ़ी; पट्टा पर मोटका रँ लोढ़ी?
के अपनों आराम करै के लोगों सें मांगै छै दाम?
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम!

सबसें कोढ़ी धनपति, धनजन, सेहे विषहर, सेहे गेहुअन,
की मतलब लोगों के दुख सें, डँसवै के हिनका एक काम;
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम!

के भोरे सें शाम खटै छै? के धरती के पहलें फटै छै?
केकरों खून नदी के पानी? खेत पीयै छै केकरों धाम?
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम!

मोंर मजूरा खेत खटै छै, की मुट्ठी भर अन्न जुटै छै ?
नमक जुटैथैं मरै मजूर, नमक पचावै नमकहराम।
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम!

के देशों में राज करै छै? के शासन के घास चरै छै?
के छुच्छे हिन्नें सें हुन्नें दौड़ लगावै बिना लगाम?
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम।

कुछ दादा के राज चलै छै, साधू के की दाल गलै छै!
कोमा सें सब काम निकालै, के पूछै छै पूर्ण विराम!
रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम ।

सभ्भे कुछ भूली गेला

हमरा की-की तोहें देतियौ, छोड़ों, घूरी कें तें ऐतियौ,
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

तोहरों भाषण धुआंधार, 'सब कें जीयै के अधिकार'
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

'सब कें रोजी रोटी घोंर, सब्भे होतै सुख सें तोंर'
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

हमरों घर के फट्टा हाल, तोहें आपने लें बेहाल,
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

हमरों पैर पकड़वों रोवों, आपनों वोटो लें घिघयैवों
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

केना तोहरा पर पतियैतौं, तोहें जुतयैवौ, जुतयैतौं
तोहें दिल्ली जैथैं सब्भे कुछ भूली गेला ।

सिंगार सोलहो

"अबकी ऐवा, तें लानियों सिंगार सोलहो !

सोना के अंगूठी लियों आरो लियों टिकुली,
हाथों के कंगन लियों आरो लियों हँसुली,
पासा लियों कानों केरों, आँखी केरों काजल,
फीता लियों, बिंदी लियों, पैरों केरों पायल,
आरो सुनों, कीनी लियों—ऐल्ता-पौडरो।
अबकी ऐवा तें लानियों सिंगार सोलहो !"

"हों जी, ऐभौं, तें लानभौं सिंगार सोलहो!
सोना के अंगूठी लेभौं आरो लेभौं टिकुली,
हाथों के कंगन लेभौं आरो लेभौं हंसुली,
पासा लेभौं कानों केरों, आँखी केरो ँ काजल,
फीता लेभौं, बिंदी लेभौं, पैरों केरों पायल,
आरो सुनों कीनी लेभौं—ऐल्ता-पौडरो,
अबकी ऐभौं तें लानभौं सिंगार सोलहो !"

"अबकी ऐवा, तें लानियों सिंगार सोलहो!
नाकी केरों बेसर लियों आरो मँगटिक्का,
देखी-देखी छूटी जैतै सब्भे केरों छक्का!
बाजूबन्द बाँही केरों लियों पिया हेनों;
मुखिया के दुलहैनी पिहनै छै जेहनों।
चुनी कें बुलाउज लियों, साया-साड़ियो!
अबकी ऐवा तें लानियो सिंगार सोलहो !"

"अबकी ऐभौं, तें लानभौं सिंगार सोलहो,
नाकी केरों बेसर लेभौं आरो मंगटिक्का,
देखी-देखी छूटी जैतै सब्भे केरों छक्का।
बाजूबन्द बाँही केरों कीनी लेभौं एहनों,
मुखिया के दुलहैनी पिहनै छै जेहनों।
चुनी कें बुलाउज लेभौं, साया-साड़ियो।
अबकी ऐभौं तें लानभौं सिंगार सोलहो ।"

करिया झुम्मर खेलै छी

करिया झुम्मर खेलै छी,
लीख पटापट मारै छी ।

देखलौं यहू राज गे हिरिया,
खाली झुट्ठे-मुट्ठे किरिया
खाय छै, पूछवै अगली बेरिया;
इखनी तें हमें कानै छी ।

पहिला सें ई निक्के छै,
केना कहै छैं—ठिक्के छै?
हिरिया यहू फिक्के छै,
एतन्हैं हम्मू जानै छी।

की कहियौ कि एक्के ठैय्यां,
हम्में बैकबर्ड, फुरबर्ड सैय्यां;
रोज मरौड़ै हमरों बैहियां,
लोर आँखी सें गारै छी।

जेकरों गोड़ें ढलढल फोका,
ओकरों वास्तें की पनसोखा!
तोहीं खेलें औका-बौका,
दरदों सें हम्में फाटै छी।

घोग्घो रानी कत्तें पानी

घोग्घो रानी, कत्तें पानी ? छोड़ों कक्का वहें पिहानी।

हाल सुनावों घर-देशों के, जोंर-जमीनों के केसों के,
अबकी खेती केहनों रहलौं? दादा ऐलौं की नै ऐलौं?
हुनका तें पैसे के धुन छै, आरो की हुनका में गुन छै!
बूढ़ों बाबू आरो माय के, केना चलै छै हुनकों खाय के?
दादा कुछ भेजै छै की नै? हमरा पैसा मिलथौं जेहनैं,
भेजी देवौं; इखनी तें बस—सौ टाका में पाँच परानी;
घोग्घो रानी, कत्तें पानी ? छोड़ों कक्का वहें पिहानी।
अभियो की पोखरी में फूलै कमल; गाछ सें बच्चा झूलै?
अभियों की इसकूल के पीछू निकलै छै गोजरैठों-बिच्छू?
की अभियों ईमली गाछी पर, भूत दिखै छै रात ऐला पर?
कुआं खनैलौं की नै अपनों, मंगर का के मोंन छै कैहनों?
मेला पर दंगल अभियों की लागै छै। देखवों कभियो की !
काका हमरों देखिया लेला—रात जगै छी, मरौं विहानी;
घोग्घो रानी, कत्तें पानी ? छोड़ों कक्का वहें पिहानी ।

खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी

खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी,
गाँवों में खाली यें आगे लगाय छै,
एकों कें दोसरा सें खाली लड़ाय छै,
हेकरा सें केकरो नै कहियो भलाय छै,
सुसुरमुँही हेनों; जेहनों की माय छै;
सतरंगी पिहनी कें बनतौं की मोरनी,
खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी।

सबके घरों में जाय कनसुवों लेतौं,
ओकरा में थोड़ों मिलाय कें बतैतौं।
ऐथौं मुंझौसी तें जल्दी नै जैतौं,
सब्भे घरों के यें खिस्सा उठैतौं।
फाटतौं की सब्भै में ई चुगलखोरनी,
खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी।

मरदों सें बात की ठस-ठस सरपट्टा,
आपनों पुरुषों के नामों पर बट्टा।
बोलै तें यहें सब, चूलो नै छट्टा,
मौसरी के दाली में इमली के खट्टा।
कुलों में होलों छै ठिक्के कुलबोरनी,
खुट्टा अगोरनी माय-बाप चोरनी ।।

नानी गेलौ पानी भरें

"नानी गेलौ पानी भरें भात भेलों गील,
दौड़वे तें दौड़ नै तें मारवौ दू कील।"

"मारवौ कैहिनें नी बाबू तोहरे छौं राज,
जेबिये में कानून छौं, जेबिये में ताज;

पैसा के जोर छौं, की थाना के डॉर,
कोटो-कचहरी सब तोहरे तें घोंर।
मारों-जुतयावों—के सुनतै अपील,
सहले तें ऐलों छी तोहरों दू कील।

"बचपन सें लै कें जुआनी तक आज,
तोहरे तें डेढ़ी पर करलें छी काज;
दादा-परदादा सब घरों के जोंन,
तोहरे तें राखलें ऐलों छौं सब मोंन।
बढ़ले ही गेलों छों पाबी कें ढील,
मारभों कैह्नें नी तोंय हमरा दू कील।

"मारों की जारों, नै दौड़बौ पर आय,
हेनों की भुखलों रही कें कमाय!
हमरे नी मेहनत पर तोहरों ई शान,
कत्तें दिन टिकलों छै केकरों गुमान!
पुरतौं दू हाथ, भले दौड़ों दू मील,
छोड़ों सपनैबों ई—मारवौ दू कील।

घुघुआ-घू, मलेल फूल

घुघुआ-घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू,
वन के हिन्दी में एक होय छै, टू अंगरेजी, हिन्दी दू।

अ सें ऐथौं बाबू कहिया, आ सें आस लै जियै छी,
ई सें ई रं के दुक्खों सें मरिये जइयों तें अच्छा;
घुघुआ घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू।

क सें कल्लें-कल्लें आवों, ख सें खड़ा होय लें सीखों,
तोहरे तें देखी कें हम्में दिन केन्हौ कें काटै छी;
घुघुआ घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू।

ग सें गेलौं तोहरों बाबू तोरों ऐथैं बीजू वोंन,
च सें चार महीना भेलै, छ सें छटपट हमरों मोंन;
घुघुआ घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू।

ज सें जाय कें इनरासन सें लानभौं परी तोहरा लें,
त सें तोहरों नुन्नू-मुन्नू ऐथौं फिरु हमरों घर में;
घुघुआ घू, मलेल फूल पढ़ों बेटा का-की-कू।
थ सें थाब्बुक-थुब्बुक चलथौं, ध सें धरी कें हमरों हाथ,
गिरथौ-पड़थौं कैहवै हम्में—पा, पा, पा, पा, पा, पा;
घुघुआ घू, मलेल फूल पढ़ों बेटा का-की-कू।
ब सें 'बाबा आबों' जखनी करें लागथौं तोहरों लाल,
अँचरा में आँखी कें राखी कानवों ऐंगना-औसरा में;
घुघुआ घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू।

बापों के पूत परापत घोड़ा, नै तें कुछु कुछ थोड़म-थोड़ा,
य सें योगी भेस बनाय कें छोड़ी नै जय्यों तहूं भी;
घुघुआ घू, मलेल फूल, पढ़ों बेटा का-की-कू।

रघुपति राघव राजा राम

पोकत कद्दू, खिच्चा आम,
रघुपति राघव राजा राम।
सड़क चौराहा जामे-जाम,
रघुपति राघव राजा राम।
चोरों कें दै पुलिस सलाम,
रघुपति राघव राजा राम।
साँढ़-बिल्हामों ठामे ठाम,
रघुपति राघव राजा राम।
रोज अकासे पर छै दाम,
रघुपति राघव राजा राम।
शहर बुलै छै गामे-गाम,

रघुपति राघव राजा राम।
कोढ़िया सिर पर सौ ठो काम,
रघुपति राघव राजा राम।
जों बिक्री होतियै नर-चाम,
रघुपति राघव राजा राम।
बड़का पद बैकुंठे धाम,
रघुपति राघव राजा राम।
परिचय, युग रों बड़का वाम,
रघुपति राघव राजा राम।
भितरघात रों चर्चा आम,
रघुपति राघव राजा राम।
माधो में नै सुखै घाम,
रघुपति राघव राजा राम।
चल अमरेन्द्र होलौ शाम,
रघुपति राघव राजा राम।

बाबू हो बाबू हो, डोंर लागै छै

बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै!
केकरों डोंर बेटी, केकरों डोंर ?

कैलू दा केकरा सें की-की नी सिखतौं,
भीती में कुछ्छू सें कुछ्छू नी लिखतौं;
देखौ नी अक्षर पर अक्षर ही दिखतौं,
एकरै की कहों चुनाव कहै छै?
बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै!

हिन्नें या हुन्नें, तोहें जन्नें भी हेरों,
देखौ नी खम-खम पुलिसों के जेरों;
गाँवों कें लागलै शनिचरा के फेरों,

बोलै छै सब्भे, पर कोय नै सुनै छै।
बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै!

हौ देखों हुन्नें जनानी कें बोलतें,
मरदों के साथों पर टुकनी रं उड़तें;
माय कें की डाटै छौ घुघटों उठैतें,
यें तें मरदाना कें माँत करै छै!
बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै!

खाली चुनावे के खेल आबें खेलों,
पोलटिस के चक्कर में सबके मन मैलों,
मीटिंग के पीछूँ छै सब्भे उमतैलों,
की जिन्दा, की मुर्दावाद बोलै छै!
बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै ।

जैठां कि है रं, ऊ गाँव में नै जय्यों,
भूलौ सें हमरा नै वैठां बिहैय्यों!
डोली सें पहलें ही अर्थी उठैय्यों,
जिनगी भर हेनों के दर्द सहै छै!
बाबू हो, बाबू हो, डोंर लागै छै!

देशों लें सोचों

कुचूछू तें देशों लें सोचों।
पैहिलै सें तें छेलौं छों टा,
नया साल में फेनू एक टा;
थाह कहीं पर छौं की, नै छौं,
ई साल बेटी, ऊ साल बेटा।

भरले रहै छौं हरदम खोचों,
कुच्छू तें देशों लें सोचों।
साले-साल ई छट्टी भौजी,
बीकी जेथौं चट्टी भौजी,
केना केकरा पालवौ-पोसवौ,
खुलथौं आँख के पट्टी भौजी।
बिलबिल करथों जेहनों मूसों,
कुच्छू तें देशों लें सोचों।
हिन्नें रोकों, देश बढ़ावों,
ऑपरेशन के लैन लगावों!
पुत्र पावै के छोड़ों किंछा,
ढेंगरा-ढेंगरी घौंज-मौज-बोचों!
कुच्छू तें देशों लें सोचों।।

कहला सें, छक सें लागतौ

कहवौ तोरा तें करेजा में जाय छक सें लागतौ!
रोज-रोज के एकके खिस्सा देखै छियौ कब सें,
की बोलै छौ गाँव भरी, तोहें जाय कें सुनें सब सें;
घोल्टी-पलटी-बिरना के संग में पंडित के पूत,
औघड़ हेनों घुरतें रहै छै लेंकें अपनों दूत;
घर सें तोहें चल्ली देवैं, होतौ जेहनै भोर,
बैजू के टटिया के पीछू की चीलम के जोर!
कहवौ तोरा तें करेजा में जाय छक सें लागतौ ।

बंसबिट्टी में साँझ-सबेरे कथी लें तोहें जाय छैं?
ई छुच्छों साँढ़ों रं देह पर कथी लें अगराय छै!
केकरो बहू-बेटी रहें तोरों आँख जरै छौ,
मेथिया कें कहिनें टोकै छैं , तोहरों की वें करै छौ!

कातिक के कुत्ता रं घूमें, की रहलौ तोरों पानी,
की समझै छैं, तोहरे एकटा लागलों छौ ई जुवानी!
कहवौ तोरा तें करेजा में जाय छक सें लागतौ।

कहिने दस ठो छौड़ा के संग तोंहे गुरु कें डाँटलै?
हुनकों सामनैं खैनी खाय कें आपनों फुटानी छाँटलै?
बाप के पैसा खाय-खाय कें देह दिखावै छै की!
लुच्चा कट ई जुल्फी बढ़ाय कें तेल चुआवै छैं की!
दस रंग के कपड़ा पिहनी कें तोहें की छाँटै छैं!
मरलों लोगों के सामना में आपनों रंग गाठै छै!
कहवौ तोहरा तें करेजा में जाय छक सें लागतौ ।

पोलटिस तें जानै छैं कुछ नै, पोलटिस बतियावै छैं,
बड़का लीडर हेनों अपनों कुल्हों मटकावै छैं;
जे भी जानै छै तोहें, सब जानै छैं अधकचरों,
अधकचरों सब जानलों-सुनलों होय छै बड्डी बातरों।
खादी कें पिन्हला सें कोय भी नेता बनलों छै की?
बोतू या बकरी सें कहीं खेत जोतैलों छै की?
कहवौ तोरा तें करेजा में जाय छक सें लागतौ ।

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो, सैय्यां बोलाय छौ, पटना जो।

पटना में हमरों स्वामी गे, बोलै छै—काफी नामी गे,
जज केरों चपरासी छेकै, मुद्इ सबके काशी छेकै,
भले कोट में जज ठो कोय छै, असली तें चपरासी होय छै,
केहनों-केकरों लाग लगैलकै, की कहियौ कि कत्तें देलकै,
एम. ए., बी. ए. बैठले सब्भे, हुनका नौकरी मिललै कब्भे,

बड़का सब के साथ नै पूछैं, अलगी के कुछ बात नै पूछैं,
पन्दरह-बीस तें बात करै के, सौ-दू सौ कागज देखै के,
पैरवी के पहिले लै लै छै, फेरू तें जो हो, सो हो।

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो, सैय्यां बोलाय छौ पटना जो ।

पटना के मॉर-मिनिस्टर नामी, जिनका सें जिनकों कपड़े दामी,
कहियो-कहियो बोलतौ देसी, सब्भे ठां अंगरेजी बेसी,
मैटरिक में घुड़कनियां खैलों, की बुझतै, सबटा उमतैलों,
जेन्हैं केकरो बात चलै छै, गाली, चप्पल, लात चलै छै,
तुलसी-सूर भले कोय होतौं, सब्भे पर की भाखन देतौं,
खाली दौरा-दौरा हिनकों, घूस के कुच्छू थाह न जिनकों,
तोरों कोठी भूसों भरलों, हुनका में छै सोना धरलों,
केकरा-केकरा तोहें दूसभैं, एक्कें ही भांड़ी के सब ठो।

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो, सैय्यां बोलाय छौ, पटना जो।

पटना के हौसपीटल नामी, गुन के बदला खामिये खामी,
सेथरों डाक्टर सुविधाभोगी, सबटा पंडा, कुछ-कुछ जोगी,
सबकें ललका पानी देथौं अपने ताकतों के गोली खैथौं,
हिनी की पढ़लों-लिखलों छै, ई सब तें देवे जानै छै,
बायाँ आँख में घाव जों होथौ औपरेसन दायाँ के करथौं
दाँत अगर जों दुखतें रहतौं, बुद्धि देखै कि नाड़ी देखतौं,
डाक्टर होय छै की बिन पढ़लैं, की होय छै रब्बड़ लटकैलैं,
पेट फाड़ी कें पेटे में ही कैंची सिटतौं, येंहें सगरो।

लुक्खी बनरिया दाल-भात खो, सैय्यां बोलाय छौ, पटना जो।

कवि-प्रिया

है फेरु लेलौ तोहें पोथी आरो पतरा!
कहाँ के फेनु चलानी ई करलौ?
कहै छियौं ई कि—अच्छा नै होथौं,
जों तोहैं हेन्हों मनमानी ई करलौ।
रक्खी दौ तोहें सब पोथी आरो पतरा,
जाय कें बथानी में बछिया कें देखौ;
कुट्टी दौ, भोरे सें भुखलों छै बछिया,
टूटलों छै कै दिन सें, खटिया कें देखौ!
जाय कें ओरांची दौ, छोड़ों कविताई!
भोरे सें कानी रहलों छै फुलचनमां,
ई सब तें कुच्छू सुझैतौं नै खाली
केला के चौप ले के दौड़े पहुनमां!
घर के तें एक्को नै काम होतौं-जैथौं,
खाली तोहें सोहरों सें डायरी कें भरों,
कन्नें उठैलौ ई पोथी आ पतरा,
खींची दौ पहिलें नूनू के गनतरों।
दैयो कहाँ सें उठाय कें ई लानला,
आपने भर टिकथौं यहाँ पर मूँझौसी;
रूकी जा, तोहें बनाय कें चाय दिहौ,
ऐतै सिरपतिया के देवर-ननदोसी।
सुनलौ नै, बैहरों हेनों की ताकै छौ,
नौड़ी नै छेकियौं कि तोहें जे चाहवौ
वही करैवौ; की समझै छौ हमरा,
आखिर ई कब पिहानी बनैवो!
चंदा कें देखों पिहानी बनावों,
मंचों पर जाय-जाय कें सबकें सुनावों;
जे चीज सें झरकी छै लै दै कें वही,
उन्हें की टुघरै छौ, इन्हें नी आवों!

झुट्टे के दस कें घंघेटी कें कांय-कांय,
रोजके एक खिस्सा, ई खिस्सा उठावों;
टीनों सें आँटा निकाली लें थोड़ों,
कविता बनैला नी—रोटी बनावों!
बारी सें बैगन कें तोड़ी लै आन्हों,
कुदरुम कें थोड़ों पटैनें भी अय्यों;
हाथों में हमरों परद छै यै वास्तें
उसनी दौ धान तबें सम्मेलन में जय्यों।

भुदरा-गुनिया

भुदरा-गुनियां बड़ी चिकनियां बसिया भात न खाय,
टटका भात में मुड़ी डुलावै, सतुआ गट-गट खाय;
पढ़वे-लिखवे में पूछों तें दोनों काठों केरों फूल।

भोरे होथैं लगे छड़क्का खेत-पतारी ओर,
संझकी बक्ती छुपलों-छुपलों लौटथौं जेना चोर;
कुछ पूछों तें गुम्मी साधतौं जेना काठों केरों फूल।

की कहियौं ढीवा रों दादी, ई दोनों के बात,
बात चलै छै जत्तें दुन्हू के, ओत्तै दुन्हू के हाथ;
पीटी आवै छै केकरो भी दोनों काठों केरों फूल।

केकरो गाछ कें झाड़ी आवै, केकरो लोंत-पतार,
गारियै दै छै टोला भरी के पांड़े, कैथ, कुम्हार;
जों डाँटों तें हाँसथौं किट-किट, दोनों काठों केरों फूल।

गाँव भरी के मौगी-मुंसा की नै कहै छै बात,
रोज सुनै छी—वैनें मारलकै, वै दोनों कें लात;
कुल में आग लगाय कें रहतै दोनों काठों केरों फूल।

चकय के चकधुम

चकय के चकधुम मकय के लावा,
केना कें कटतै समय हो बाबा !

सियारों-सिर पर चमेली-केसर,
गिरै छै कारिख गुनी के ऊपर;
लते मुचरलों, की होतै गाभा ।

मरै तरासों, लू के छै चाटों,
सुखी कें सुइया नदी के पाटों,
लहू देहों रों जरी कें रावा ।

की अदरा पुरबा, छै मनझमाने,
कहूँ नै पछियो केरों ठिकाने,
की जे बरसतै, दखनाहा दावा ।

यहाँ-वहाँ बस सौ गो वैतरणी,
कहाँ नै ढाढ़स केरों सुमरनी!
ठोरों पें सुलगै पझैलों आवा ।

कोसा-कोसी

कोसा कोसी, भादों मासी,
हिरिया के बीहा कन्नें ?

जहाँ कर्ण रों राज विराजै,
बिहुला आरो बाला राजै,
चन्दनबाला के माँटी जे,
वासुपूज्य रों वाणी बाजै;

ऋष्यशृंग रों जन्मभूमि आ
तपोभूमि छै जन्नें;
हिरिया के बीहा हुन्नें ।

कोसा कोसी, भादों मासी,
जिरिया के बीहा कन्नें ?

जहाँ हिन्दी रों पहिलों आखर
लिखलें छेलै ज्ञान दीपंकर;
जहाँ बैठी सौ ग्रंथ लिखलकै
सरहपाद, शबरपा धुरन्धर;
विक्रमशील महाविद्यालय
कभी विराजै जन्नें;
जिरिया के बीहा हुन्नें ?

कोसा कोसी, भादों मासी
खखरी के बीहा कन्नें ?

जहाँ विष्णु नें मधु हनलकै,
रुद्रासन अभियो भी झलकै;
जहाँ राम नें मूर्ति विष्णु रों
स्थापित करी पूजा देलकै;
चौदह रत्न दुहैवाला
मन्दार विराजै जन्नें;
खखरी के बीहा हुन्नें ।

कोसा कोसी, भादों मासी,
खखरा के बीहा कन्नें ?

जहाँ उठै सब भोर-विहानै;
एक्को बाँध नै कोशी मानै;

भैरो काका भरी जाल में
किसिम-किसिम के मछली छानै;
माय कताने बूली-बूली
लोरी गावै जन्नें;
खखरा के बीहा हुन्नें ।

पाला पर रौद

ई नाटक लें

महाभारत के ई प्रसंग कें बाल नाटक के रूपों में रचै के बात हम्में सालो सें सोची रहलों छेलियै, मतुर नै हुऐ पारै। दरअस्ल यैमें प्रश्न कै एक ठो हेनो छै कि बच्चा लायक नै बुझावै । कि 30 नवम्बर कें पुत्र अभिनंदन नें कहलकै, जों पाँच पृष्ठों के कोय बाल रचना मिली जैतियै, तें पक्के पूरा-पूरी चौदह फर्मा के किताब बनी जैतै, नै तें हम्में बचलों पृष्ठ पर तोरों परिचय दै देभौं। कि हमरा वहा युधिष्ठिर-यक्ष-संवाद याद ऐलै आरो रात भरी रुकै के बात हम्में पुत्र कें कहैलियै। साँझ हुऐ पर छेलै। लेखन शुरू होलै आरो आठ बजे रात कें पूरा। आचरज यहू कि जे छन्द रूप कभी कर्ण काव्य रचै के क्रम में रचै के बात सोचलें छेलियै, आरो नै हुऍ पारलों छेलै, हौ यहाँ पूरा होलै। यानी कविता के चरण तें छंदबद्ध छै, मतुर तुकबद्ध नै।

फेनू जे कारण ई नाटक रूपों में एत्तें समय्यो बाद पूरा नै हुऍ पारलै, ऊ पाँच घंटाहै में ओरियैतें चललों गेलै। हौ प्रश्नो हटतें चललों गेलै, जे ई नाटक कें बाल नाटक होय दै में दिक्कत लानै। खाली ओरी आरो आखिरी के दू व्यस्क प्रश्न कें रहें देलें छियै।

ई बाल नाटक मात्रिक वर्ग के अखंड छंद में बद्ध छै। ई अभिनंदनो के इच्छा छेलै कि हेनों कोय बाल कविता दौ, जे छोटों छंद में रहें। अखंड सें छोटों छंद की हुऍ पारें, तें हम्में पूरा नाटक आठ मात्रा के छंद में रची देलियै। सच पूछों तें ई प्रसंग यै लेली बालनाटक रूपों में बान्है लें चाहै छेलियै कि यक्ष के है पूछला पर 'सुखी के छै?' आरो युधिष्ठिर के है कहवों कि जेकरों ऊपर रिन नै; जे घरों में सागे-पात खाय कें रहै छै, आरनी-आरनी... ई उत्तर हम्में कभियो नै भूलें पारलियै, जे बेचैनी आखिर में मौका पैत्हैं मुट्ठी भर समय में उतरी ऐलै, बहाना बनी गेलै पुत्र अभिनंदन।

—अमरेन्द्र

(30/11/20)

पाला पर रौद

(चलतें-चलतें यधिष्ठिर रुकी जाय छै आरो हिन्नें-हुन्नें देखतें बोलै छै।)

युधिष्ठिर : (स्वगत)

आखिर कन्नें
गेलों होतै,
चारो ठो के
चारो भाय ही!
गोड़ों के तें
छाप दिखै नै;
शायत हुन्नें
गेलों होतै।

(वही दिस आगु बढ़ै छै। नगीचे में एक जलाशय दिखै छै, जेकरों सीढ़ी सिनी पर चारो पांडव के शरीर लुढ़कलों मिलै छै, जै पर आँख पड़त्हैं युधिष्ठिर बोली पड़ै छै।)

अरे यहाँ तें/चारो भाय ठो/मरलों होलों;/के मारलकै?/की पानी में/विष भरलों छै,/जैसें चारो/भाय मरलों छै?/पर माहुर के/कोइयो चेन्हों/दिखै नै देह पर;/कोय यहाँ पर/दिखतौ नै छै,/जे उत्तर दें;/बस उपाय छै/आबें देखौं/पीबिये पानी!

(जलाशय रों नगीच पहुँची कें चुरु में जेन्हैं पानी पीयै लें चाहै छै कि बगले में बगुला रूपों में बैठलों यक्ष बोली पड़ै छै।)

यक्ष :

रुकों-रुकों, तोंय;/जल नै छूवों,/नै तें तोरो/तोरे सब टा/भय्ये नांखी/मिरतु लिखलों।/जल पीयै के/एक नियम छै—/उत्तर दै लें/होथौं तोरा/हमरों सबटा/प्रश्नों केरों।

(युधिष्ठिर घुरीकें देखै छै, आरो हौले-हौले बोलै छै।)

युधिष्ठिर :

ई बगुला की/बगुले छेकै?/नै आरो कुछ!(जोरों सें) के छेकौ तोंय?

यक्ष :

जलचर पक्षी/नै बूझों तोंय/यक्ष छिकां, हों,/हम्मीं तोरों/चारो भाय कें/मारलें छियौं।/चाहे छेलै/पानी पीयौं/बिना देलें ही/प्रश्नो केरों/उत्तर कोय्यो।/तोहूं चाहों/जों पीयै लें;/उत्तर दै लें/पड़थौं तोरा,/हमरों सबटा/प्रश्नों केरों।

युधिष्ठिर :

तें पूछों तों/कोशिश करभौं।

यक्ष :

के सुरजों कें/उदित करै छै?/के चारो दिस/एकरों घूमै?/अस्त करै छै/कौनें एकरा?/केकरा में ई/इस्थित? बोलों।

युधिष्ठिर :

सुरजों कें छै/ब्रह्म उगावै;/ऊ सुरजों के/चारो दिस ही/देवता घूमै।/धर्मे छेकै/अस्त करै छै;/सत्य छिकै ऊ,/जैमें इस्थित।

यक्ष :

ठिक्के कहलौ!/आबें बोलों—/हेनों के ऊ,/जे इन्द्रिय सें/अनुभव ही नै;/साँसो लै छै/सम्मानित छै/लोको सें, पर/प्राणी होय्यो;/प्राणी नै छै?

युधिष्ठिर :

जेकि देवता,/आत्मो केरो,/ऐलों अतिथि,/माय-बाबू के,/सेवको केरों—/ई पाँचो के/करै नै पोषण/ऊ प्राणी नै/प्राणी होय्यो।

यक्ष :

ठीक बोललों,/बुद्धिमान छों!/आबें बोलों-/के महिमा में/सबसें भारी?/पृथ्वियो सें?/आकाशों सें/की छै ऊँच्चों?/हावाओ सें/तेज चलै के?/रेतों सें भी/बेसी की छै?

युधिष्ठिर :

सुनों यक्ष, तों!/एकरो उत्तर—/मैय्ये छेकै/जे बढ़िये कें/पृथ्वियो सें।/आकाशों सें/ऊँच्चों होय छै—/बाबू रों पद।/हावाओ के/गति सें बेसी/मन के गति छै/ आरो चिन्ता/बालू सें भी/बेसी जग में।

यक्ष :

साधु! सही छों!/आबें बोलों—/के सुतियो कें/पोंल नै खोलै?/जन्मी कें भी/हिलै-डुलै नै?/हौ के छेकै/हृदय नै जेकरा/आरो हौ के,/बहै वेग सें?

युधिष्ठिर :

इक मछली ही/सुतलौ पर भी/पोंल नै खोलै।/अंडाहे ऊ/जन्मी कें भी,/हिलै-डुलै नै।/पथलों में ही/हृदय हुऐ नै;/आरो नदिये बहै वेग सें।

यक्ष :

(स्वीकार में चोंच हिलैतें हुएँ) अच्छा बोलों—/परदेशों में/मित्र के छेकै?/फिरू वहा रं/मित्र घरों में/के कहलावै?/रोगी केरों/कहों मित्र के?/आरो मृत्यु के/वक्ती में के/मित्र कहावै?

युधिष्ठिर :

एकेक करी कें/एकरो सब के/उत्तर जानों—/जतरा-संगी/यंगी होय छै,/परदेसों में।/घर के तिरिया/घर के संगी;/जे रं होय छै/वैद्य रोगी लें।/मरै वक्त तें/दाने संगी।

यक्ष :

उत्तम! उत्तम! हों/ई तें बोलों—/धन्यवाद के/जुकुर पुरुष में/की गुण छेकै-/सबसें बढ़ियां?/सबटा धन में/धन की उत्तम?/सब लाभों में/लाभ की उत्तम?/होनै सुखों में/सुखो कोंन ठो?

युधिष्ठिर :

दक्ष कला में,/बड़ी श्रेष्ठ गुण;/आरो धन में—/शास्त्र-ज्ञान ही;/लाभों में जों/बस नीरोग ठो/आरो जेना/सब सुक्खों में,/संतोषे सुख।

यक्ष :

(डैना फैलैतें) उत्तम! उत्तम!/की तोहें है/बोलें पारों—/लोकों में छै/श्रेष्ठ धर्म की?/के फलवाला/धर्म हमेशे?/केकरों वश सें शोक हुऐ नै?/केकरों साथें/होलों संधि/नष्ट हुऐ नै?

युधिष्ठिर :

एकरों उत्तर/यही छेकै कि/ई लोकों में/एक दये ठो/श्रेष्ठ धर्म बस।/वेद-वचन ही/फल दैवाला/सद्दोखिन छै।/शोक हुऐ नै/मन जो वश में।/साधु सिनी सें/संधि अखम्मर।

यक्ष :

धन्य, धन्य छी/सुनी कें उत्तर!/मुदा प्रश्न तें/अभियो बाकी/बोलों-बोलों—/कोंन चीज ऊ,/जे तेजलै सें/पुरुष सुहावै?/की तेजला सें/शोक हुऐ नै?/आरो हौ की/जे तेजों, तें/अर्थवान छों?

युधिष्ठिर :

जानै छेलियै/पूछवौ तोहें/यहू प्रश्न सब,/तें जानी ला—/मान-त्याग सें/पिय हुऐ नर;/क्रोध-त्याग सें/दुख सें मुक्ति;/काम-त्याग पर/अर्थवान छों;/लोभ-त्याग पर सुक्खे सुख छै।

यक्ष :

हरखित होलां!/धन्य-धन्य छी!/बस अंतिम में/ यहू कही दा—/कोंन पुरुष छै/सुखी यहाँ पर?/की हौ छेकै/अचरज यै ठां?/मार्ग की छेकै?/वार्त्ताहौ की?

युधिष्ठिर :

जोंन पुरुष पर/कोय्यो नै रिन/आरो नै ऊ/परदेसों में;/जेकि घरों में/सागे-पाते/केन्हौं खाय छै/वही सुखी छै।/के नै जानै/मरना निश्चित,/तहियो किंछा—/रहौं अखम्मर!/एकरा सें की/बढ़ी कें अचरज?/धर्मे केरों/तत्व मार्ग नी/वार्त्ताहौ की?/जीव-ब्रह्म के/बाते ही तें!/आबें तोहें/यहू बोलवौ/चारो भाय में/कोय एक्के ठो/जीत्तों होतै/जेकरा चाहों,/तें नकुले कें/हम्में चाहौं,/भले भीम रं/अर्जुन वीरो/पर सोची ई—/जे धरमों कें/केन्हौं नाशैं/तें धर्मे ऊ/कर्त्ताहौ कें/नाशी दै छै/आरो जे भी/धर्मो केरों/हित में ठाड़ों/धर्मो ओकरों/हित में ठाड़ों;/सब्भे लेली/एकभाव जे/परम धर्म ऊ/ई लोकों में।

यक्ष :

(बगुला रूप तेजी कें बोली उठै छै।)
भरतश्रेष्ठ तोंय
लै जा अपनों
चारो भाय कें!
एक भाय नै।

(यक्ष के बोलत्हैं निष्पंद पड़लों चारो पांडव ठाड़ों होय जाय छै आरो युधिष्ठिर के संकेत पैथें साथें एक दिस बढ़ी जाय छै।)

■■